स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगम्

(समस्त दरिद्रता निवारक पद्धति)

डॉ० रामप्रिय पाण्डेय
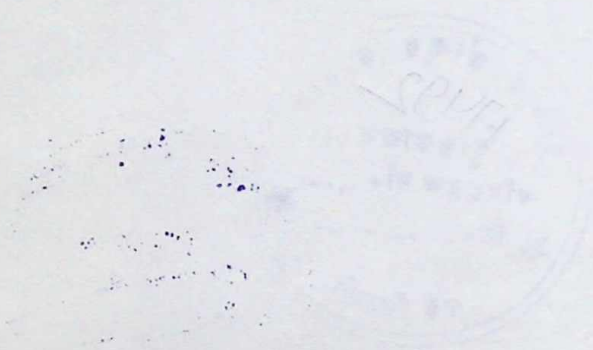
॥ श्रीः ॥

नवशक्ति ग्रन्थमाला-१४

स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगम्

(समस्त द्ररिद्रता निवारण पद्धति)
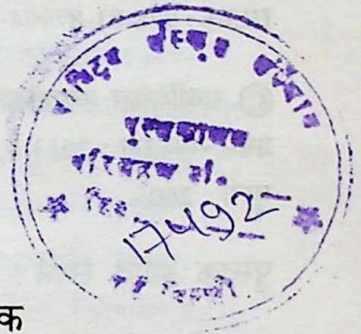
लेखक एवं सम्पादक

डॉ. रामप्रियपाण्डेय
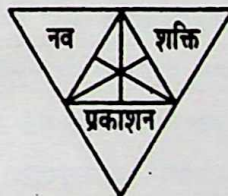
नवशक्ति प्रकाशन

चौकाघाट, वाराणसी

प्रकाशक :

नवशक्ति प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

जे० 13/24 के० चौकाघाट, वाराणसी-2

दूरभाष : 0542-2202237, 09956014704

स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगम्

IBSN : 978-81-87904-22-9

प्रथम संस्करण : 2013 ई.

मूल्य : 260/-

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

नवशक्ति प्रकाशन

बी० 31 पी० सी० एफ० प्लाजा,

मिन्ट हाउस, नदेसर, वाराणसी

दूरभाष : 0542-6444515

अक्षर विन्यास :

न्यूमाप्रॉस कम्प्यूटर्स

चौकाघाट, वाराणसी-2

मो. 08176800012

मुद्रक :

प्रभा प्रेस

चौकाघाट, वाराणसी-2

दूरभाष : 09838927095

श्रीगुरोः स्तुतिकुसुमाञ्जलिः

काश्यामुपेत्यविधिवत् तपसाबलेन, प्राप्तश्रियः सकलशास्त्रविचारदक्षान्।
अध्यापनेन सततं कृतशास्त्ररक्षान्, श्रीवायुनन्दनबुधान् प्रणमामि नित्यम्॥१॥
पूर्वं नमस्त्रिमुनिशास्त्रविचक्षणाय, साहित्यमर्मविदुषे कृतिने ततश्च।
मीमांसया दलितदुर्व्यसनाय पश्चात्, श्रीवायुनन्दन! महामतये नमस्ते॥२॥
शास्त्राण्यधीत्य बहवः कटुकैर्विवादैर्ग्रस्तान्तरास्तु समयं क्षपयन्ति नित्यम्।
श्रौतप्रभाविलसिता गुरवो मदीयाः श्रीविश्वनाथपदभक्तिजुषः किलासन्॥३॥
साहित्यशास्त्रासुरवृक्षविवर्धनेन, तस्यामृताभफलदानमनोहरेण।
सत्रेण भारतधरा किल यस्य भाति, तस्मै बृहस्पतिनिभाय नमो नमस्ते॥४॥
ये ब्रह्मवंशविभुताकलितान्तरङ्गा, आचारतश्च भृतभूरिविभूतिभङ्गाः।
गङ्गावगाहनशिवार्चनतत्परास्ते, श्रीवायुनन्दनबुधा गुरवो जयन्ति॥५॥
भस्मत्रिपुण्ड्रविलसच्छुभविग्रहाणां, विद्याविलासविगलन्मधुवाग्झराणाम्।
पाण्डेयवर्यविदुषां पदयोर्नतिर्नो, भूयादहर्निशममङ्गलनाशनाय॥६॥
काश्यां विपश्चिदतुलासु सभासु सभ्या, यत्सन्निधौविधृतमौननिभा अभूवन्।
तान् विश्वनाथपदपङ्कजभृङ्गभूतान्, श्रीवायुनन्दनगुरून् सततं स्मरामि॥७॥
जाज्वल्यमाननिजपावनविग्रहेण, लोकोत्तरेण महसा च तपोबलेन।
श्रीविश्वनाथपदमाशुगतं भवन्तं, ध्यात्वा पितः वयमहो कृतिनो भवामः॥८॥

परमपूज्यश्रीपितृचरणगुर्वर्पणमस्तु

श्रद्धासुमनाञ्जली:

साहित्योदधिमज्जितोऽतिगहनान् ग्रन्थान् समालोचयन्,
शास्त्राभ्यासपरायणः प्रतिदिनं स्वाध्यायशीलः सुधीः।
शृङ्गारादिरसैः सदार्द्रहृदयो विद्वद्वरेण्याऽग्रणीः,
वन्द्यः पण्डितवायुनन्दनकविर्विश्वेश्वरोपासकः॥१॥

रामे भक्तियुतो यथाऽमितबली वायोः सुतः कीर्तिमान्,
रामाभ्यां समधीतवाननलसः शास्त्रं तथा बुद्धिमान्।
प्राप्नोद् व्याकरणे पटुत्वमचिरं विद्योतितो ज्योतिषा,
सत्संस्कारमथाग्रहीद् द्विजकुलस्याप्यत्र बाल्ये ब्रती॥२॥

विद्याम्भोधिनिमज्जनोद्धुरमना सारस्वतः साधकः,
काशीं मुक्तिकरीमुपेत्य विदुषः कालीप्रसादादसौ।
विज्ञातुं समुपस्थितः प्रमुदितः शास्त्रार्थतत्त्वं परं,
पातुं काव्यसुधारसं च रुचिरं श्रेयस्करं दुर्लभम्॥३॥

काश्यां संस्कृतशिक्षणेऽतिनिपुणोऽयं विश्वविद्यालये,
आचार्येति प्रतिष्ठिते गुरुपदे संशोभितोऽभूदहो।
आदर्शश्च समस्तशिक्षकगणस्यादर्शयन् सुन्दरम्,
छात्राध्यापनतरः समभवद् विजयते वाणीसुतः सात्त्विकः॥४॥

श्रीवायुनन्दन-पाण्डेयं ज्ञानमार्तण्डरूपिणम्।
आचार्यप्रवरं भक्त्या भूयो भूयो नमाम्यहम्॥५॥

श्रद्धासुमनाञ्जलिः श्रीगुर्वर्पणमस्तु

सम्पादकीय

वर्तमान युग अर्थ(रुपया) प्रधान युग है। मनुष्य को जीवन जीने के लिए धन ही प्रमुख साधन है, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन की ही आवश्यकता होती है, यदि उसके पास धन है तो वह अपनी समस्त भौतिक कार्यों का सम्पादन सुगमता पूर्वक कर सकता है। लेकिन मनुष्यों को अपने आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु धनोपार्जन करने के लिए अतिशय सङ्घर्ष करना पड़ता है, बहु प्रयत्न करने पर भी आवश्यकता के अनुरूप धनोपार्जन नहीं कर पाता है। ऐसी स्थिति में उसे दैव का सहयोग आवश्यक है, बिना दैव सहयोग के जीवन सुगम और सरल नहीं हो पाता है, दैव सहयोग में भैरव की आराधना अनिवार्य है। कलयुग में भैरव की कृपा सहज ही प्राप्त हो जाती है तथा समस्त कामनाओं की पूर्ति आसानी से हो जाती है। शास्त्रों में भैरव के अनेकों भेद बताये गये हैं उनमें भी स्वर्णाकर्षण भैरव की आराधना तो धन प्राप्ति के लिए आवश्य ही करणीय है। स्वर्णाकर्षण भैरव की कृपा प्राप्त हो जाने के बाद मनुष्य के जीवन में धन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति सहज हो जाती है। साधक को जीवन भर कभी धन की कमी नहीं होती, उसकी समस्त कामनायें निश्चय ही पूर्ण हो जाती है। उसके आयु आरोग्य की वृद्धि होती है।

स्वर्णाकर्षणभैरवो धनधान्यप्रदायक।
भक्तानां कामसमृद्धिः आयुरारोग्यदायक॥

स्वर्णाकर्षणभैरव की उपासना से त्रैलौक्य में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं होती, साधक इनके कृपा से असाध्य कार्य को भी सहजता से पूर्ण कर लेता है और सर्वत्र विजयी होता है।

न तस्य दुर्लभं लोके त्रिषु लोकेषु वै भवेत्।
असाध्यं साधयेन्मर्त्यः सर्वत्र विजयी भवेत्॥

स्वर्णाकर्षणभैरव की सरल उपासना पद्धति जिसका आश्रय ग्रहण करके विधि पूर्वक आराधना सहजता से किया जा सके, इसके लिए स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोग का लेखन किया गया, जो हमारे पितृचरण पूर्व प्रोफेसर स्व० वायुनन्दन पाण्डेय जी को समर्पित है, जिसका प्रकाशन श्रीलोकेश कृष्ण त्रिपाठी, प्रकाशक नवशक्ति प्रकाशन के द्वारा जनकल्याणार्थ किया गया। सभी जन इस प्रयोग के माध्यम से अपने जीवन को समृद्धिमय बना सकें, यही कामना है। नित्यं शुभं भवतु, कल्याणं भवतु।

श्रावण शुक्ला पञ्चमी, सम्वत् २०६९ **डॉ० रामप्रियपाण्डेयः**

भूमिका

भी धातु से औणादिक **डैरव** प्रत्यय योजन करने पर भैरव शब्द निष्पन्न होता है। जिससे **विभेति क्लेशो यस्मादिति भैरवः** अर्थ को निष्पत्ति होती है। अर्थात् जिससे क्लेश डरता है उन्हें भैरव कहते है।

तथा च—**भृ** धातु से **डैरव** प्रत्यय करने पर भैरव शब्द की निष्पत्ति होगी जिसका अर्थ होगा **भरति विश्वमिति भैरवः** विश्व का भरण करनेवाले सृष्टिस्थितिसंहारक देवता।

भैरव साक्षात् शिवशङ्कर के ही अवतारी स्वरूप हैं, शिव का ही एक रूप भैरव का है, उन भैरव का ही एक भेद स्वर्णाकर्षण भैरव है।

भैरवः पूर्णरूपो हि शङ्करस्य परात्मनः।
मूढास्ते वै न जानन्ति मोहिताः शिवमायया:॥

भैरव की उत्पत्ति के प्रसङ्ग में एक पौराणिक आख्यान प्राप्त होता है। पूर्व काल में आपद् नामक राक्षस ने कठोर तपस्या कर वर प्राप्त कर लिया था, जिसके कारण वह सभी देवी देवताओं से अजेय बन गया। उसने अपनी मृत्यु पाँच वर्ष के विशिष्ट रूप, तेज एवं गुणों से सम्पन्न बालक के हाथों से चाही और वह वर उसे प्राप्त हो चुका था, फलस्वरूप उस महाबली, पर्वताकार एवं अतिक्रूर राक्षस के आसुरी अत्याचारों से तीनों लोकों में उत्पीडन मच गया और त्राहि-त्राहि की पुकार उठने लगी, देव वर्ग उसके अत्याचारों से बहुत भीत और त्रस्त हो गया। इस घोर सङ्कट से त्राण पाने एवं त्रिलोकी को उबारने के लिए सभी देवता एकत्र होकर आपद् के वध का उपाय सोचने लगे।

अकस्मात् उन सब के देह से एक-एक तेजोधारा निकली और प्रत्येक देव युगल के तेजस् के मिलने से एक पञ्चवर्षीय बालक का आविर्भाव हुआ, जो उन उन युगल का वटुक कहा जाता है। इन असङ्ख्य वटुकों के उद्भव के बाद वह तेजोधारा और आगे बढ़ी और एक स्थान पर जाकर पुञ्जीभूत हो गई। कालान्तर में उन वटुकों की ही भैरव संज्ञा हो गयी और आपद् नामक राक्षस को मारकर देवताओं को सङ्कट से मुक्त किया। कालान्तर में उनका ही एक रूप स्वर्णाकर्षण नाम से प्रसिद्ध हुआ।

उपासना करने पर भक्तों को सुवर्ण धनधान्यादि प्रदान करने के कारण ही इनका नाम स्वर्णाकर्षण भैरव पड़ा, अष्टोत्तर शतनाम में इनका नाम धनद तथा अधन(दरिद्रता)हारी के रूप में भी आता है।

धनदोऽधहारीश्च धनवान् प्रतिभानवान्।

पूर्व काल में अज नामक राक्षस का वध स्वर्णाकर्षण भैरव ने किया। स्वर्णाकर्षण भैरव चार भुजाओंवाले, पाश, अङ्कुश, वर और अभयधारी, चन्द्र धारण करनेवाले, जटाजुट एवं स्वर्णाभरणों से सुशोभित एवं सिद्ध विद्याधरों से सेवित हैं।

पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम्।
अक्षयं स्वर्णमाणिक्यतडित्पुरितपात्रकम्॥ १॥
अभिलसन् महाशूलं चामरं तोमरोद्वहम्।
चिन्तये भैरवं देवं सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥ २॥
मन्दारद्रुमकल्पमूलमहिते माणिक्यसिंहासने,
संविष्टोदरभिन्नचम्पकरुचा देव्या समालिङ्गितः।
भक्तेभ्यः कररत्नपात्रभरितं स्वर्ण ददानो भृशं,
स्वर्णाकर्षण भैरवो विजयते स्वर्णाकृतिः सर्वदा॥ ३॥

भगवान् स्वर्णाकर्षण भैरव को प्रमथादि गणों का अधीश्वर और पराक्रम शिवतुल्य कहा गया है।

भगवन् प्रमथाधीश शिवतुल्यपराक्रमः।

भैरव का गुण भेद से सात्त्विक, राजस और तामस स्वरूप बताया गया है, जो अलग अलग कामनाओं की पूर्ति के लिए है।

यथा कामं तथा ध्यानं कारयेत् साधकोत्तमः।

महाभैरव का सात्त्विक स्वरूप अपमृत्यु निवारक, आयु-आरोग्य का प्रदाता तथा मोक्ष फल देनेवाला है। राजस स्वरूप धर्म, अर्थ तथा काम की सिद्धि देनेवाला है। तामस स्वरूप कृत्या-भूतप्रेत-ग्रहादि तथा शत्रूओं का शमन करनेवाला है।

महाभैरव का सात्त्विक स्वरूप—स्फटिक के समान शुभ्रवर्ण, कुण्डलों से देदीप्यमान, दिव्य मणिमय, किङ्किणी और नूपुर से भूषित, तेजस्वी प्रसन्नवदन, त्रिनेत्र, शूल और दण्ड धारण किये हुए, बालक सदृश रूपवाला है।

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी नूपुराद्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्॥

महाभैरव का राजस स्वरूप—उगते हुए सूर्य के समान अरुण वर्ण, त्रिनयन, लालपुष्पों की माला धारण किये हुए, प्रसन्न मुख, हाथों में वरद, कपाल, अभय और शूल धारण किये हुए, नीलग्रीव, उदारता से युक्त, चन्द्रकला से विभूषित एवं लाल वस्त्र धारण किये हुए, समस्त भयों का हरण करनेवाला है।

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डोज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदाभावये॥

महाभैरव का तामस स्वरूप—नील पर्वत के समान वर्णवाले, चन्द्रकलाधर, मुण्डमालाधारी, महेश, दिगम्बर, दीपशिखा के समान रंगवाले केशों से युक्त, डमरू, अङ्कुश, खड्ग, पाश, अभय, नाग, घण्टा एवं कपालरूप आयुधों को आठ हाथों में ग्रहण किये हुए, विकराल दाढ़ोंवाले, त्रिनेत्र तथा मणिमय किंकिणी और नूपुरों से विभूषित है।

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिसकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्॥

महाभैरव का स्वर्णाकर्षण स्वरूप महत्पुण्य तथा सर्वैश्वर्य प्रदायक है, यह स्वरूप उपासकों के लिए चिन्तामणि तथा कल्पतरु है। स्वर्णाकर्षण भैरव की उपासना से साधक त्रिलोकी को वश में कर लेता है और अचला लक्ष्मी तथा श्री को प्राप्त कर लेता है।

चिन्तमणिमवाप्नोति धेनुं कल्पतरुं ध्रुवम्।
स्वर्णराशिमवाप्नोति शीघ्रमेव स मानवः॥
लोकत्रयं वशीकुर्यात् अचलां श्रियमाप्नुयात्।
न भयं विद्यते क्वापि विषभूतादि सम्भवम्॥

स्वर्णाकर्षण भैरव की उपासना विभिन्न कल्पों में अलग अलग स्वरूपों में की गयी जो शास्त्रों में उल्लिखित हैं। जिसमें सद्यः रूप से मनुष्यों को समस्त दरिद्रताओं से मुक्ति कराकर धन प्रदान करनेवाला स्वर्णाकर्षणभैरव प्रयोग है, शास्त्रों में इस प्रयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी है।

श्रीस्वर्णाकर्षणभैरव की ही प्रेरणा से लोक कल्याणार्थ स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोग(वैदिक विधि) ग्रन्थ का लेखन हुआ। कर्मकाण्ड विषयक आचार्यों को विशेष ध्यान रख कर इस ग्रन्थ की रचना हुई है, जिसका अनुसरण कर विद्वात् जन इसका प्रयोग अपने तथा लोकहित में करेंगें।

विद्वत्चरणचञ्चरीक,
डॉ० रामप्रियपाण्डेयः

विषय-सूची:

स्वस्तितिलकधारणम्	१
पञ्चगव्यप्राशनम्	१
त्रिराचमनम्	१
पवित्रिधारणम्	१
पवित्रिकरणम्	१
यज्ञभूमिपूजनम्	२
शिखास्पर्शनम्	२
श्रीगुरुस्मरणम्	२
स्वस्तिवाचनम्	२
प्रधानसङ्कल्पम्	४
गणेशाम्बिकापूजनम्	५
गणेशाथर्वशीर्षम्	१४
गणेशाथर्वशीर्षपाठमाहात्म्यम्	१५
देव्याथर्वशीर्षम्	१६
देव्याथर्वशीर्षमाहात्म्यम्	१७
स्वस्तिकलशस्थापनम्	१९
पुण्याहवाचनम्	२७
अभिषेकम्	३५
षोडशमातृकासप्तघृतमातृकापूजनम्	३८
आयुष्यमन्त्रम्	५१
साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धम्	५२
आचार्यादिवरणम्	५९
रक्षोघ्नकर्मम्	६२
पञ्चगव्यकरणम्	६४
सर्वतोभद्रदेवतानां स्थापनम्	६५
सर्वतोभद्रदेवतानां पूजनम्	७१
प्रधानकलशस्थापनम्	७८
पीठदेवतास्थापनंपूजनञ्च	८१
अग्न्युत्तारणम्	८४
इष्टपूजनम्	८६
मूलमन्त्रजपम्	९९
अखण्डदीपपूजनम्	१०५
पुस्तकपूजनम्	१०७
पञ्चभू:संस्कारम्	१०९
अग्निस्थापनम्	११०
ग्रहमण्डलस्थदेवतास्थापनम्	११२
ग्रहमण्डलस्थदेवातानां पूजनम्	१२१
असङ्ख्यातरुद्रपूजनम्	१२८
कुशकण्डिकाविधिः	१३७
हवनम्	१४१
ग्रहमण्डलस्थदेवायहवनम्	१४१
असंख्यातरुद्रायहवनम्	१४४
प्रधानदेवायहवनम्	१४४
मूलमन्त्रहवनम्	१४५
आवाहितदेवताभ्यः हवनम्	१४५
षोडशमातृकाहवनम्	१४५
सप्तघृतमातृकाहवनम्	१४७
अग्निपूजनपूर्वकस्विष्टकृत्होमः	१४७
भूरादिनवाहुतिः	१४७
एकतन्त्रेण दिग्पालादिबलिदानम्	१४८
एकतन्त्रेणग्रहादिबलिदानम्	१४९
क्षेत्रपालायबलिदानम्	१४९
पूर्णाहुतिः	१५०
वसोर्द्धाराहोमः	१५१

अग्नि-प्रदक्षिणा	१५२
हवनीयकुण्डभस्मधारणम्	१५२
पूर्णपात्रदानम्	१५२
श्रेयोदानम्	१५३
ब्राह्मणदक्षिणादानम्	१५३
भूयसीदक्षिणादानम्	१५३
ब्राह्मणभोजनम्	१५३
प्रधानपीठादिदानम्	१५४
यजमान-अभिषेकः	१५४
छायापात्रदानम्	१५५
क्षमाप्रार्थनाम्	१५६
आवाहितदेवतानांविसर्जनम्	१५६
यजमानरक्षाबन्धनम्	१५७
यजमानपत्नीरक्षाबन्धनम्	१५७
यजमानतिलकाशीर्वादम्	१५७
यजमानपत्नी आशीर्वादम्	१५७
पूजनसामग्री	१५८
ग्रन्थकारस्य अन्या कृतयः	१६०

।। श्रीः ।।

स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगम्

सर्वप्रथम यजमान अपनी पत्नी के साथ शुभमुहूर्त में शुभासन पर बैठ करके तिलक करने के बाद शरीरशुद्ध्यर्थ तथा कर्माधिकारप्राप्त्यर्थ पञ्चगव्य का प्राशन अधोलिखित मन्त्र द्वारा करे। तीन बार केशव, नारायण और माधव इन तीनों नामों से अलग-अलग आचमन करे। शरीरशुद्ध्यर्थ तथा कर्माधिकारप्राप्त्यर्थ तिलक करने के बाद पञ्चगव्य का प्राशन अधोलिखित मन्त्र द्वारा करे।

स्वस्तितिलकधारणम्—अधोलिखित मन्त्र से तिलक धारण करे—

ॐ युञ्जन्तिब्ब्रध्नमरुषञ्चरन्तम्परितस्त्थुषः॥ रोचन्तेरोचनादिवि॥ युञ्जन्त्यस्य काम्म्याहरीव्विपक्षसारथै॥ शोणाधृष्ण्णूनृवाहसा॥

तिलक करने के बाद पञ्चगव्यप्राशन करे—

पञ्चगव्यप्राशनम्—अधोलिखित मन्त्र पाठ करते हुए पञ्चगव्य का प्राशन करे—

ॐ यत्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामकीम्।
प्राशनात्पञ्चगव्यस्य पिबेत्यग्निरिवेन्धनम्॥

प्रार्थनापूर्वक पञ्चगव्यप्राशन के पश्चात् तीन बार आचमन करे—

त्रिराचमनम्—ॐ केशवाय नमः॥ ॐ नारायणाय नमः॥ ॐ माधवाय नमः॥

ॐ हृषीकेशाय नमः॥ मन्त्र बोलकर हाथ धोये।

पवित्रिधारणम्—अधोलिखित मन्त्र से पवित्री धारण करे—

ॐ पवित्रैस्त्थोवैष्ण्णव्यौसवितुर्व्वः प्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्रेणपवित्रेणसूर्य्यस्य रश्मिभिः॥ तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥

पवित्रिकरणम्—पवित्री धारण के पश्चात् तीन बार पुनः आचमन करे। आचमन करने के पश्चात् प्राणायाम करे तथा अधोलिखित मन्त्र से अपने ऊपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥ ॐ केशवः पुनातु॥ ॐ नारायणः पुनातु॥

यज्ञभूमिपूजनम्—हाथ में पुष्पाक्षत लेकर भूमि पूजन करे—

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

ॐ यज्ञभूम्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शिखास्पर्शनम्—हाथ से शिखास्पर्श करे—

ऊर्ध्वकेशे विरुपाक्षि मांस-शोणित-भोजने।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये चामुण्डे चापराजिते॥

श्रीगुरुस्मरणम्—अपने श्रीगुरु का ध्यान करे—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

ॐ गुरुभ्यो नमः॥ ॐ परमगुरुभ्यो नमः॥ ॐ परात्परगुरुभ्यो नमः॥ ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः॥ ॐ मानवौघगुरुभ्यो नमः॥ ॐ सिद्धौघगुरुभ्यो नमः॥ ॐ दिव्यौघगुरुभ्यो नमः॥ सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि॥

स्वस्तिवाचनम्

यजमान हाथ में पुष्प लेकर ब्राह्मणों के द्वारा कृत स्वस्तिमन्त्रों को ध्यानपूर्वक सुने।

ॐ आनोभद्राःक्रतवोयन्तुविश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः॥ देवानोयथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे॥१॥ देवानाम्भद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानाꣳरातिरभिनोनिवर्त्तताम्॥ देवानाꣳसख्यमुपसेदिमावयन्देवानऽआयुःप्रतिरन्तुजीवसे॥२॥ तान्पूर्वयानिविदाहूमहेवयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्॥ अर्य्यमणंवरुणꣳसोममश्विनासरस्वतीनःसुभगामयस्करत्॥३॥ तन्नोवातोमयोभुवातुभेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः॥ तद्ग्रावाणःसोमसुतोमयोभुवस्तदश्विनाशृणुतन्धिष्ण्ण्यायुवम्॥४॥ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहेवयम्॥ पूषानोयथावेदसामसद् धेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये॥५॥ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्तिनःपूषाविश्ववेदाः॥ स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु॥६॥ पृषदश्वामरुतःपृश्निमातरःशुभंय्यावानोविदथेषुजग्मयः॥ अग्निजिह्वामनवःसूरचक्षसोविश्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह॥७॥ भद्रङ्कर्णेभिःशृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः ॥८॥ शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम्॥ पुत्रासोयत्रपितरोभवन्तिमानोमद्ध्यारीरिषतायुर्गन्तोः॥९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्मातासपितासपुत्रः॥ विश्वेदेवाऽअदितिःपञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्त्वम्॥१०॥ ॐ द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिःपृथिवीशान्तिरापःशान्तिरोषधयःशान्तिः॥ वनस्पतयःशान्तिर्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्रह्मशान्तिःसर्वꣳशान्तिः-

शान्ति॒रि॒वशान्ति॒ꣳसामा॒शान्ति॒रिधि॥ यतो॑यतः॒सु॒मीह॑सेततो॑नो॒ऽअभ॑यङ्कुरु॥ शन्नः॑कुरु-प्र॒जाभ्यो॒भ॑यन्नꣳप्प॒शुभ्यः॑॥ सुशान्तिर्भवतु॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः॥ उमामहेश्वराभ्यां नमः॥ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः॥ शचीपुरन्दराभ्यां नमः॥ मातापितृभ्यां नमः॥ इष्टदेवताभ्यो नमः॥ कुलदेवताभ्यो नमः॥ ग्रामदेवताभ्यो नमः॥ वास्तुदेवताभ्यो नमः॥ स्थानदेवताभ्यो नमः॥ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः॥ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः॥

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीङ्गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥१॥
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥२॥
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥३॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥४॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥५॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥६॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥७॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥८॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥९॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं स्मरामि॥१०॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥११॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥१२॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥१३॥

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥१४॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥१५॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥

प्रधानसङ्कल्पम्

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्निद्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेश अमुकक्षेत्रे** (यदि वाराणसी में अनुष्ठान करना हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे**) **विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे भासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य च दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यादि-सकलदोषपरिहारार्थं मम जन्मकुण्डल्यां, चन्द्रकुण्डल्यां, भावकुण्डल्यां ये केचन चतुर्थाष्टमषष्ठद्वादशस्थानस्थितसमस्तग्रहजन्यसकल अशुभदृष्टिसमस्तदुःखनिवृत्ति-पूर्वकसकलानिष्टयोगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च समस्तविघ्नानां दुःखानां शरीरस्थितकष्टानां ज्वरादिपीड़ादिनां निवृत्तिपूर्वकत्रिविधतापोपशमनार्थं भूत-प्रेतपिशाचडाकिन्यादिकृत सर्वेषामन्यानां कृतयन्त्रमन्त्रतन्त्रादिकृतसमस्ताभिचारादिनाञ्च अस्मद् गृहे वास्त्वादिदोषानां उपशान्तिपूर्वकं दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यवंशाभिवृद्धिसमस्तसुख-सौभाग्यादिप्राप्त्यर्थं सकलकामनापरिपूर्तिपूर्वकसकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त-फलप्राप्तयर्थं समस्तविघ्ननिवृत्यर्थं सकलापद्विपत्ति सद्यः विनाशार्थे स्वर्णाकर्षणभैरवप्रीत्यर्थं स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगं करिष्ये।**

पुनः हाथ में जल लेकर—**तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धं आचार्यादिवरणानि च करिष्ये।**

पुनः हाथ में जल लेकर—**तत्राऽऽदौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।**

दो पात्रों में अक्षत भर कर अष्टदल कमल निर्मित करके उस पर गोमय मय लिङ्गरूप गौरी तथा फलमय लिङ्गरूप गणेश की स्थापना करके हाथ में पुष्प लेकर महागणपति का ध्यान करे।

गणेशाम्बिकापूजनम्

गणपतिध्यानम्—हाथ में अक्षत लेकर महागणपति का ध्यान करे—

ॐ गणानान्त्वागणपतिँ हवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिँ हवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिँ हवामहेवसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धिसिद्धिसहितमहागणाधिपतये नमः ऋद्धिसिद्धिसहितमहागणाधिपतिं ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत्सिद्धिविनायकम्॥ १॥
ध्यायेद्गजाननं देवं तप्तकाञ्चनसन्निभम्।
चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरणभूषितम्॥ २॥
हे हेरम्ब! त्वमेह्येहि ह्यम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः॥ ३॥
नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरस्वधैः॥ ४॥
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।
इहाऽगत्य गृहाण त्वं पूजायागं च रक्ष मे॥ ५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धिसिद्धिसहितमहागणाधिपतये नमः ऋद्धिसिद्धिसहितं महागणाधिपतिमावाहयामि, आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

ध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर महागौरी का ध्यान करे—

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः महागौरीं ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आवाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर महागौरी का आवाहन करे—

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः महागौर्यै नमः महागौरीमावाहयामि, आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥
गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रतिष्ठापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः सन्निहिताः वरदाः भवन्तु।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात्॥ सभूमिꣳसर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्वंय्यद्भूतंयच्चभाव्यम्॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृहणीष्व सुरपूजित!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र ग्रहणकर समर्पित करे—

ॐ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्चपूरुषः॥ पादोऽस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि॥

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
विघ्नराज गृहाणेदं भगवान् भक्तवत्सल!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोऽस्येहाभवत्पुनः॥ ततोविष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि॥

गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यञ्च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ततोविराडजायतविराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथो-पुरः॥

विनायकं नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँस्ताँश्चक्रेवायव्यानारण्याग्राम्याश्चये॥

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे॥ छन्दाᳬसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्माद-जायत॥

गङ्गोदकस्य यद्वारि सर्वमलहरं परम्।
तदिदं समर्पितं देव पुनराचमनं शुभम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथों से पयः पात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु-मह्यम्॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूᳬषि-तारिषत्॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्व स्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधुवाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः॥ मधुनक्त-मुतोषसोमधुमत्पार्थिवरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोवनस्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु-सूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अपाᳬरसमुद्वयसᳫसूर्य्येसन्तᳫसमाहितम्॥ अपाᳬरसस्ययोरसस्तंवोगृह्णा-म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शुद्धवालःसर्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय पशुपतयेकर्ण्णायामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरूपाःपार्ज्जन्याः॥

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदासिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मादश्श्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः॥ गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः॥

ॐ युवासुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउत्श्रेयान्भवतिजायमानः।
तंधीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः॥

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्श्चये॥ ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्ग्नेविश्श्वरूपङ्संव्ययस्वविभावसो॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत पकड़कर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषंव्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन्॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते॥ ॐ यज्ञोदेवानाम्प्रत्त्येतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्तः॥ आवोर्वाचीसुमतिर्व्ववृत्त्यादङ्होश्चिद्याववरिवोवित्तरासदादित्त्येभ्यस्त्वा॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण गणनायक॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ॥ आपोजनयथाचनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्माद-मुच्च्यत॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत॥ अस्तौषतस्वभानवोविप्रानविष्ठयामतीयो-जान्विन्द्रतेहरी॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ ओषधीःप्रतिमोदद्ध्वंपुष्प्यवतीःप्रसूवरीः॥ अश्श्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधःपार-यिष्णवः॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्प्परि॥ एवानोदूर्व्वेप्रतनुसहस्रेणशतेनच॥

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ अहिरिवभोगैःपर्व्वेतिबाहुंज्यायाहेतिम्परिबाधमानः॥ हस्तग्घ्नोविश्श्वावयुनानि विद्वान्पुमान्पुमांसंपरिपातुविश्वतः॥

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देवमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥१॥
नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारुप्रगृह्यताम्॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धौरिवप्राद्ध्वनेशूघनासोवार्तप्प्रमियःपतयन्तियह्वाः। घृतस्युधाराऽअरुषो नवाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्न्वमानः॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। धूपदीप जला करके नैवेद्य समर्पित करे।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यःकृतः॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्याᳬशूद्रोऽ-अजायत॥ ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्वन्तंधूर्व्वतंयोऽस्मान्धूर्वतितंधूर्व्वयंवयंधूर्वामः॥ देवानामसिवह्निनतमᳬसस्निनतमंपप्रितमंजुष्टतमंदेवहूतमम्॥

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत॥ ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निःस्वाहासूर्य्योज्ज्योतिर्ज्योतिःसूर्य्यःस्वाहा॥ अग्निर्वर्च्चोज्ज्योतिर्वर्च्चःस्वाहासूर्य्योवर्च्चोज्ज्योतिर्वर्च्चःस्वाहा॥ ज्ज्योतिःसूर्य्यःसूर्य्योज्ज्योतिः-स्वाहा॥

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥१॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपज्योतिः समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षᳪशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्दिशःश्रोत्रात्तथा-लोकाँ२॥ऽअकल्पयन्॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ पप्रदातारं-तारिषऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥१॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ अ॒ᳪशुना॑ते अ॒ᳪशुः पृ॑च्यतां॒ परु॑षा॒ परुः॑॥ ग॒न्धस्ते॒ सोम॑मवतु॒ मदा॑य॒ रसो॒ऽअच्यु॑तः॥

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरु॑षेण ह॒विषा॑ दे॒वा य॒ज्ञमत॑न्वत॥ व॒स॒न्तो॒ऽस्यासी॒दाज्यं॒ ग्री॒ष्मऽइ॒ध्मः श॒रद्ध॒विः॥

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादि-नागवल्लिदलयुक्तताम्बूलवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ याः फ॒लिनी॒र्या ऽअ॑फ॒ला ऽअ॑पु॒ष्पा याश्च॑ पु॒ष्पिणीः॑॥ बृह॒स्पति॑प्रसूता॒स्तानो॑ मु॒ञ्च॒त्वᳪह॑सः॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथों से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त्त॒ताग्रे॑ भू॒तस्य॑ जा॒तः पति॒रेक॑ऽआसीत्॥ स दा॑धार पृथि॒वीं द्यामु॒तेमां कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ आरा॑त्रि॒ पार्थि॑व॒ᳪ रजः॑ पि॒तुर॑प्रायि॒ धाम॑भिः॥ दि॒वः सदा॑ᳪसि बृह॒ती वि ति॑ष्ठस॒ऽ

आत्त्वेषंब्बर्त्ततेतमः॥ ॐ इदꣳहविः प्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्व्वगणꣳस्वस्तये॥ आत्मसनिप्प्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनिः॥ अग्निःप्प्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नं पयोरेतोऽअस्म्मासुधत्त॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्न्यासन्॥ तेहनाकम्महिमानःसचन्त-यत्रपूर्व्वेसाद्ध्याःसन्न्तिदेवाः॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ सप्प्तास्यासन्न्परिधयस्त्रिःसप्प्तसमिधःकृताः॥ देवायद्यज्ञन्तन्न्वानाऽअबध्नन्-न्पुरुषम्पशुम्॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥१॥
पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनो हाथों में विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥१॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो!।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद॥२॥
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थनासमर्पणम्—दोनों हाथों सें पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥१॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते॥२॥

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः॥३॥
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक!॥४॥
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥५॥

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव॥६॥

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम॥७॥

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि! पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि! चराचरस्य॥१॥
रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्राऽरयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाऽब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥२॥

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता।
स्फुरत्काञ्ची-शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी,
भजामि त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम्॥३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रार्थनापूर्वकं स्तुतिपाठं समर्पयामि।

गणेशाथर्वशीर्षम्

ॐ लँ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षदात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानम्। अव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयः। त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयः। त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति।

सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलोनभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा। त्वं विष्णुः। त्वं रुद्रः। त्वं इन्द्रः। त्वं अग्निः। त्वं वायुः। त्वं सूर्यः। त्वं चन्द्रमा। त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यं रूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः। श्रीमहागणपतिः देवता। ॐ गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्। अभयं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये। नमो गणपतये। नमः प्रमथपतये। नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनासिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः॥

गणेशाथर्वशीर्षपाठमाहात्म्यम्

एतदथर्वशिरो योऽधीते स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थ-काम-मोक्षं च विन्दति। इद अथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान्भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान्भवति। इत्यथर्वणमहावाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान्भवति स मेधावान्भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। य एवं वेद॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाय नमः स्तुतिपाठं समर्पयामि।

देव्याथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति॥१॥ साब्रवीत्—अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च॥२॥ अहमानन्दानानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्मा ब्रह्मणीवेदितव्ये। अहं पञ्च-भूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्॥३॥ वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्॥४॥ अहं रुद्रेभिः वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ॥५॥ अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि॥६॥ अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद। स दैवीं सम्पदमाप्नोति॥७॥

ते देवा अब्रुवन्—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥८॥
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्ती वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः॥९॥
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु॥१०॥
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्॥११॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥१२॥
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबान्धवः॥१३॥
कामोयोनिः कमला वज्रपाणिः गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्॥१४॥

एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशाङ्कुशधनुर्वाणधरा। एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति॥१५॥ नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः॥१६॥

सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः। सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुररक्षांसि पिशाचाः यक्षाः सिद्धाः। सैषा प्रजापतीन्द्र-मनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि। कलाकाष्ठादिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्॥१७॥

पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्॥१८॥
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्॥१९॥
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः॥२०॥
वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्ताष्टात्तृतीयकः ॥२१॥
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः॥२२॥
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्॥२३॥
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे।
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्॥२४॥
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्।

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोप लभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति॥२५॥

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी॥२६॥
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्॥२७॥
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।

देव्याथर्वशीर्षमाहात्म्यम्

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति शतलक्षंप्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति, शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः॥२८॥

दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापं प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः॥२९॥

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति।

नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद॥२९॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पराम्बिकायै नमः स्तुतिपाठं समर्पयामि।

अनेन यथोपलब्धद्रव्येण गणेशाम्बिकापूजनेन गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम॥

श्रीगणेशाम्बिकापूजनं परिपूर्णम्

स्वस्तिकलशस्थापनम्

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरव-प्रयोगकर्मणि स्वस्तिकलशपूजनं करिष्ये।**

भूमिस्पर्श—**ॐ महीद्यौः पृथिवीचनऽइमंय्यज्ञंमिमिक्षताम्।। पिपृतान्नोभरीमभिः।।**

सप्तधान्य बिखेरना—**ॐ ओषधयः समवदन्तसोमेनसहराज्ञा।। यस्मैकृणोतिब्राह्मण-स्तꣳराजन्पारयामसि।।**

कलशस्थापन—**ॐ आजिघ्रकलशंमह्यात्वाविशन्त्विन्दवः।। पुनरूर्ज्जानिवर्तस्व-सानः सहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः।।**

कलश में जल भरना—**ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थोवरुणस्यऽ-ऋतसदन्यसिवरुणस्यऽऋतसदनमसिवरुणस्यऽऋतसदनमासीद।**

कलश में गन्ध डाले—**ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोषधे-सोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।**

कलश में सर्वौषधि डाले—**ॐ याओषधीः पूर्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरा।। मनैनुबभ्रुणा-महꣳशतंधामानि सप्त च।।**

कलश में दूर्वा डाले—**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषस्परि।। एवानोदूर्वे-प्प्रतनुसहस्रेण शतेन च।।**

कलश में पञ्चपल्लव डाले—**ॐ अश्वत्थेवोनिषदनंपर्णेवोवसतिष्कृता।। गोभाजइ-इत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्।।**

कलश में कुश डाले—**ॐ पुवित्रैस्त्थोवैष्ष्णुव्यौसवितुर्व्वः प्प्रसुवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेण पुवित्रैणसूर्य्यस्यरुश्मिम्भिः॥ तस्यतेपुवित्रपतेपुवित्रपूतस्युयत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥**

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—**ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षुरानिवेशनी॥ यच्छानुः शर्म्मसुप्प्रथाः॥**

कलश में पूंगीफल डाले—**ॐ याः फुलिनीर्य्याऽअफुलाऽअपुष्प्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहुस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चुन्त्वᳪहंसः॥**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परिवाजपतिःकुविरुग्निर्हुव्यान्यक्रमीत्॥ दधुद्रत्नानि दाुशुषे॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हिरुण्ण्यगुर्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूुतस्यजातः पतिुरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमां अस्म्मैदेुवायहुविषाविधेम्॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सुजातोज्ज्योतिषासुहशर्म्मवरूथमासदुत्त्स्वः॥ वासोअग्नेविश्श्व-रूपᳪसंव्ययस्वविभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पूर्ण्णादर्विपरापतुसुपूर्ण्णापुनरापत॥ वुस्नेवविक्क्रीणावहाुऽइषु-मूर्ज्जᳪशतक्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याःफुलिनीर्य्याऽअफुलाऽअपुष्प्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहुस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चुन्त्वᳪहंसः॥**

वरुण का ध्यान, आवाहन, पञ्चोपचारपूजन—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणावन्दमानुस्तदा-शास्तेयजमानोहुविर्भिः॥ अहेडमानोवरुणेहबोुध्युरुशᳪसुमानुऽआयुःप्प्रमोषीः॥**

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्युबृहुस्प्पतिर्य्यज्ञमिुमन्तनोुत्त्वरिष्टंय्यज्ञᳪसमिुमन्दधातु॥ विश्श्वेदेुवासऽइुहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।

अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥
कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

स्वस्तिकलशपूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर वरुणादि देवताओं का ध्यान करे—

ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्॥ सभूमिꣳ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर, आसन का ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ पुरुषऽएवेदꣳ सर्वंय्यद्भूतंयच्चभाव्यम्॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्श्चपूरुषः॥ पादोऽस्यविश्श्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः॥ ततोविष्ष्वङ्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ततोविराडजायतविराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्यरिच्च्यतपश्श्चाद्भूमि मथोपुरः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँस्ताँश्श्चक्क्रेवायव्व्यानारण्याग्राम्म्याश्श्चये॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे॥ छन्दाᳬसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्माद-जायत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयः पात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु-मह्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूᳬ-षितारिषत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्व स्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधुवाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतो-षसोमधुमत्पार्थिवᳬरजः॥ मधुद्यौरस्तुनः पिता॥ मधुमान्नोवनस्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अपाᳬरसमुद्वयसᳬसूर्य्येसन्तᳬसमाहितम्॥ अपाᳬरसस्ययोरसस्तंवोगृह्णा म्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथों से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय पशुपतयेकर्ण्णायामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मादश्श्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः॥ गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्रान्ते आचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्श्चये॥ ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्नेविश्श्वरूपᳬसंव्ययस्वविभावसो॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रान्ते आचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिव मातरः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषंव्व्यदधुःकतिधाव्व्यकल्पयन्॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते॥ ॐ यज्ञोदेवानाम्प्रत्त्येतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्तः॥ आवोर्वाचीसुमतिर्व्ववृत्त्यादᳬहोश्चिद्यावरिवोवित्तरासदादित्त्येब्भ्यस्त्वा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ॥ आपोजनयथा च नः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत॥ अस्तोषतस्वभानवोविप्प्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोदद्ध्वंपुष्प्यवतीःप्रसूवरीः॥ अश्श्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधःपारयिष्णवः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषुष्परि॥ एवानोदूर्वेप्रतनुसहस्रेण शतेन च॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ अहिंरिवभोगैःपर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिंपरिबाधमानः॥ हस्तग्घ्नोविश्श्वावयुनानि विद्द्वान्पुमान्पुमाꣳसंपरिंपातुविश्श्वतः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धोरिवप्राद्ध्वनेशूघनासोवातप्रमियःपतयन्तियह्वाः॥ घृतस्यधाराऽअरुषोन-वाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्वमानः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यःकृतः॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्याꣳशूद्रोऽ अजायत॥ ॐ धूरसिधूर्वधूर्वन्तंधूर्वतंयोऽस्मान्धूर्वतितंधूर्वयंवयंधूर्वामः॥ देवानामसिवह्नि तमꣳसस्नितमंपप्रितमंजुष्टतमंदेवहूतमम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत॥ श्श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्नि-रजायत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्दिशःश्श्रोत्रात्तथा-लोकाँ२॥ऽअकल्पयन्॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ पप्रदातारंतारिष-ऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथों से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ अꣳशुनातेअꣳशुःपृच्च्यतांपरुषापरुः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽ अच्च्युतः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषेणहुविषादेवायुज्ञमतंन्वत॥ वुसुन्तोऽस्यासीदाज्ज्यंग्ग्रीष्मऽइुध्मश्शुरद्धु-विः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलपत्राणि पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिकञ्च समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फल लेकर समर्पित करे—

ॐ याःफुलिनीर्य्याऽअंफुलाऽअपुष्पायाश्श्चपुष्पिणीः॥ बृहुस्पतिप्रसूतास्तानों मुञ्चत्वर्ठ्हसः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यंजातःपतिरेकंऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्या मुतेमांकस्मैदेवायंहुविषाविधेम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ आरात्रिपार्थिर्वर्ठ्रजःपितुरंप्रायिधामंभिः॥ दिवःसदार्ठ्ठसिबृहुतीवितिष्ठसुऽ आत्त्वेषंब्वर्त्ततितमंः॥ ॐ इुदर्ठ्हुविःप्रजननंमेऽअस्तुदर्शवीरर्ठ्सर्व्वगणर्ठ्ठस्वुस्तयें॥ आुत्मु-सनिंप्रजासनिंपशुसनिंलोकुसन्न्यंभयुसनिंः॥ अुग्निःप्प्रजांबहुलांमेंकरोत्वन्नंपयोरेतोंऽ-अुस्म्मासुंधत्त॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ युज्ञेनंयुज्ञमंयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथुमान्यांसन्॥ तेहुनाकंम्महिमानंःस-चन्तुयत्रपूर्व्वेसाद्ध्याःसन्तिदेवाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ सें पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ सुप्तास्यांसन्न्परिधयुस्त्रिःसुप्तसुमिधंःकृताः॥ देवायद्युज्ञन्तंन्वानाऽअबंध्न्-न्पुरुंषम्पुशुम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

रक्ष रक्ष जलाध्यक्ष रक्ष जीवनदायक!।
रक्षार्थं पश्चिमाधीश! प्राणीनां जीवनं परम्॥१॥
विविधद्रव्यसंयुक्तं चन्दनं रजनीयुतम्।
विशेषार्घ्यं प्रदाष्यामि सर्वदा रक्षणं कुरु॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

कलशप्रार्थना—

ॐ देवदानवंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४॥
सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥
पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

प्रार्थनासमर्पणम्—हाथ में जल लेकर प्रार्थना समर्पण करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से जल लेकर पूजन समर्पित करे।

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम॥

स्वस्तिकलशस्थापनं परिपूर्णम्

❁

पुण्याहवाचनम्

अवनीकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशं अञ्जलिं शिरस्याधायाऽनन्तरं दक्षिणेन पाणिना कलशं धारयित्वा आशिषः प्रार्थयेत्। जानुमण्डल को नीचे जमीन में लगाकर दक्षिण हाथ से कमल के समान अञ्जली बनाकर उसमें कलश लेकर शिर पर धारण करके आशीष-प्रार्थना करे।

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनाऽऽयुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु॥

ब्राह्मण बोले—**अस्तु दीर्घमायुः॥** आपकी आयु दीर्घ हो जाये।

ॐ त्रीणिपुदाविचक्क्रमेविष्ष्णुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः॥ अतोधर्म्माणिधारयन्॥

यजमान बोले—**तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु दीर्घमायुः।** आपकी आयु दीर्घ हो जाये।

ॐ त्रीणिपुदाविचक्क्रमेविष्ष्णुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः॥ अतोधर्म्माणिधारयन्॥

यजमान बोले—**तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु दीर्घमायुः।** आपकी आयु दीर्घ हो जाये।

ॐ त्रीणिपुदाविचक्क्रमेविष्ष्णुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः॥ अतोधर्म्माणिधारयन्॥

कलश को भूमि पर रख करके ब्राह्मणों का हस्त पूजन करे—

यजमान बोले—

अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु मे॥

ॐ शिवा आपः सन्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में जल दे।

ब्राह्मण बोले—**सन्तु शिवा आपः।** जल कल्याणकारी हो।

यजमान बोले—

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथाऽस्तु नः॥

ॐ सौमनस्यमस्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुष्प प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**अस्तु सौमनस्यम्।** पुष्प आपको सुन्दर मनवाला करे।

यजमान बोले—

अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम॥

ॐ अक्षतं चारिष्टं चाऽस्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में अक्षत प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**अस्त्वक्षतमरिष्टं च।** अक्षत अरिष्ट कारक हो।**(अरिष्टं सूतिकागृहं)**

यजमान बोले—

चन्दने महदारोग्यं गन्धाः प्रीति ते यदा।
ब्राह्मणानां करे न्यस्तु माङ्गल्यं चास्तु मे सदा॥

ॐ गन्धाः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में चन्दन प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**सुमङ्गल्यं चास्तु।** गन्ध मङ्गलकरक हो।

यजमान बोले—

अक्षतं मे महत्पुण्यं अक्षयतृप्तिप्रदायकम्।
अक्षतं महदायुष्यं तस्मादायुष्य मे सदा॥

ॐ पुनरक्षताः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुनः अक्षत प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**आयुष्यमस्तु।** आपकी आयु दीर्घ हो जाये।

यजमान बोले—

पुष्पे भवतु सौगन्धं पुष्पं पुष्टिप्रदायकम्।
पुष्पे वसतु श्रीवृत्तिः श्रीश्रियमस्तु मे सदा॥

ॐ पुनः पुष्पाणि पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुनः पुष्प प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**सौश्रियमस्तु।** आप श्रीमान हो जायें।

यजमान बोले—

ऐश्वर्यं सुफलं सन्तु देवाः प्रीति भवा यदा।
ब्राह्मणानां प्रसादश्च ऐश्वर्यं मे सदाकरा॥

ॐ सफलताम्बूलानि पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में सुपाड़ी सहित पान प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**ऐश्वर्यमस्तु।** आप ऐश्वर्यवान हो जाये।

यजमान बोले—

यज्ञपुण्यस्य साफल्यं अनन्तफलदा भवा।
ब्राह्मणानां प्रसादेन दक्षिणा सफला सदा॥

ॐ दक्षिणाः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में दक्षिणा प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**बहुदेयं चाऽस्तु।** आपके पास देने के लिए बहुत हो।

यजमान बोले—

> हरिः जले निवसन्ति जलं वरुणरूपिणम्।
> वरुणाद्यर्चितो देवः(शिवः) तस्मात्स्वर्चित ते सदा॥

ॐ पुनरत्राऽपः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुनः जल प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**स्वर्चितमस्तु।** पूजित हुये।

यजमान बोले—**दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो बहुपुत्रं पौत्रं बहुधनं चाऽऽयुष्यं चाऽस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**तथास्तु।** जैसा चाहते है वैसा ही हो।

यजमान बोले—**यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तं अहं ओङ्कारं आदिं कृत्वा यजुराशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिः अनुज्ञातः पुण्यं पुण्याऽहं वाचयिष्ये।**

ब्राह्मण बोले—**वाच्यन्ताम्।** वाचन करते हैं।

पुण्यकारकमन्त्रम्

> करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चाऽपि द्विजातयः।
> सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा॥१॥
> ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः।
> तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः॥२॥
> स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च।
> स्वस्त्यस्त्वापादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा॥३॥
> स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
> करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे॥४॥
> लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ।
> असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्तथाङ्गिराः॥५॥
> वसिष्ठः कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
> धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः॥६॥
> स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्त्तिकेयश्च षण्मुखः।
> विवस्वान् भगवान् स्वस्ति करोतु तव सर्वदा॥७॥
> दिग्गजाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः।
> अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ नागो धारयते हि यः॥८॥
> शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु।
> रक्षन्तु स्वायुधैर्दिव्यैदेवदानवराक्षसाः॥९॥

ॐ द्रविणोदाः पिपीषतिजुहोतप्रचतिष्ठत॥ नेष्ट्राद्वतुभिरिष्यत॥ सवितात्त्वासवानाᳩ-सुवतामग्निर्गृहपतीनाᳩसोमोवनस्पतिनाम्॥ बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रोज्ज्यैष्ठ्यायरुद्रः-पशुब्भ्योमित्रः सत्त्योवरुणोधर्म्मपतीनाम्॥ नतद्रक्षाᳩसिनपिशाचास्तरन्तिदेवानामोजः-प्प्रथमजᳩह्येतत्॥ योबिभर्त्तिदाक्षायणᳩ हिरण्यᳩ सदेवेषुकृणुतेदीर्धमायुः सर्मनुष्येषु-कृणुतेदीर्घमायुः॥ उच्चातेंजातमन्धसोदिविसद्भूम्यादंदे॥ उग्रᳩ शर्म्ममहिश्रवः॥ उपास्मै-गायतानरः पवमानायेन्दवे॥ अभिदेवाँ२ ॥ऽइयक्षते॥

यजमान बोले—**व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दान-विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।**

ब्राह्मण बोले—**समाहितमनसः स्मः।** मन में धारण किये।

यजमान बोले—**प्रसीदन्तु भवन्तः।** आप प्रसन्न हो जायें।

ब्राह्मण बोले—**प्रसन्ना स्मः।** हम सभी प्रसन्न हैं।

यजमान अधोलिखित मन्त्र बोलते हुए कलश के ऊपर अक्षत छोड़े तथा ब्राह्मण प्रत्युत्तर में अस्तु-आदि प्रतिवचन बोलें।

ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्म-समृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु।

बहिः—द्वितीय पात्र में—

ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं-रोगं-अशुभं-अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

अन्तः—कलश के ऊपर—

ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरं अहरहमभि-वृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरण-मुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरी पुरोगाः उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगाः ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्।

ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वा कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाइष्ट देवताः प्रीयन्ताम्।

बहिः—द्वितीय पात्र में—

ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शम्यन्तूपद्रवाः।

अन्तः—कलश के ऊपर—

ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा नद्यः सन्तु। ॐ शिवा गिरयः सन्तु। ॐ शिवा सागराः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्रयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ निकामेनिकामेनः पर्जन्योवर्षतुफलवत्योनऽओषधयः पच्यन्तांयोगक्षेमोनः कल्पताम्॥

ॐ शुक्राऽङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहितआदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोनुवाक्या यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

यजमान बोले—**एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।**

ब्राह्मण बोले—**वाच्यताम्।**

यजमान बोले—

ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगाख्यकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ पुण्यम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ पुण्यम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ पुण्यम्।**

ॐ पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः॥ पुनन्तुविश्वाभूतानिजातवेदः पुनीहिमा॥

यजमान बोले—

पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगाख्यकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

ॐ यथेमांवाचंकल्याणीमावदानिजनेभ्यः॥ ब्रह्मराजन्याभ्याᳪशूद्रायचार्य्याय-चस्वायचारणायचप्रियोदेवानांदक्षिणायैदातुरिहभूयासमयंमेकामःसमृद्ध्यतामुपमादोनमतु॥

यजमान बोले—

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगाख्यकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

ॐ सत्रस्यऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽअभूम॥ दिवंपृथिव्याऽअध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः॥

यजमान बोले—

स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य आपदुद्धारणभैरवप्रयोगाख्यकर्मणो स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

यजमान बोले—**अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

यजमान बोले—**अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः॥ स्वस्तिनस्ताक्षर्योऽअरिष्टनेमिः- स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु॥

यजमान बोले—

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगाख्यकर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्वलोकम्मऽइषाण॥

यजमान बोले—

मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्॥

ब्राह्मण बोले—**शतं जीवन्तु भवन्तः।**

ॐ शतमिन्नुशरदोअन्तिदेवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम्॥ पुत्रासोयत्रपितरोभवन्ति मानोमद्ध्यारीरिषतायुर्गन्तोः॥

यजमान बोले—

शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि॥

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

ॐ मनसः काममाकूतिंवाचः सत्यमशीय॥ पशूनाꣳरूपमन्नस्यरसोयशः श्रीः श्रयतां- मयिस्वाहा॥

यजमान बोले—

प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः॥

ब्राह्मण बोले—**ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।**

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणिपरिताबभूव॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽ-अस्तुवयᳬस्यामपतयोरयिणाम्॥

यजमान बोले—

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः॥

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

ॐ प्रतिपन्थामपद्महिस्वस्तिगामनेहसम्॥ येनविश्वाःपरिद्विषोवृणक्तिविन्दतेवसु॥

यजमान बोले—**ॐ स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु स्वस्तिवाचनसमृद्धिः।**

यजमान दक्षिणासंकल्प करे—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहं कृतस्यस्वस्तिवाचनकर्मणःसमृद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं स्वस्तिवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां करोपस्थितदक्षिणांविभज्य-दातुमहमुत्सृजे।**

पुण्याहवाचनं परिपूर्णम्

अभिषेकम्

वरुणकलश का जल लेकर चार अविधुर ब्राह्मण दर्भदूर्वादि से अभिषेक करें, अभिषेक के समय यजमानपत्नी वामभाग में बैठे।

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥१॥

आपका ब्रह्माविष्णुमहेश्वरादि समस्त देवता अभिषिञ्चन करें, वासुदेव, जगन्नाथ, सङ्कर्षण भगवान् विभु अभिषिञ्चन करे॥१॥

प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥२॥

प्रद्युम्न, अनिरुद्ध आपके विजय के लिए तथा अखण्ड, अग्नि, भगवान् विष्णु, यम और निर्ऋति सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥२॥

वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्राह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥३॥

वरुण, पवन, धनाध्यक्ष कुबेर तथा शिव समस्त ऋषियों के सहित दिग्पालादि सभी आपकी सदेव रक्षा तथा पालन करें॥३॥

कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥४॥

कीर्ति, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा, क्रिया, मति, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, कान्ति, तुष्ट्यादि मातृकाएँ सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥४॥

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमाभौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः॥५॥

उपर्युक्त सभी देवतादि अपनी पत्नियों के सहित रक्षार्थ आपका अभिषिञ्चन करें, आदित्यचन्द्रमाभौमबुधगुरुशुक्र तथा शनि समस्त ग्रह आपकी सदैव रक्षा करें॥५॥

ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥६॥

सभी ग्रह तृप्त होकर राहु, केतु के सहित आपका अभिषिञ्चन करें, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस तथा समस्त सर्प सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥६॥

ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः॥७॥

समस्त ऋषि, मुनि, गायें, समस्त देवमाताएँ, समस्त देवपत्नियाँ, वृक्ष, समस्त नाग, दैत्य, अप्सराएँ सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥७॥

अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥८॥

समस्त अस्त्र, समस्त शस्त्र, समस्त राजा, समस्त वाहन, समस्त औषधियाँ, समस्त रत्न, काल के समस्त अवयवादि सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥८॥

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये॥९॥

समस्त सरिताएँ, समस्त सागरादि, समस्त पर्वत, समस्त मेघादि, समस्त नद, सभी धर्म कामना की सिद्धि के लिए आपका अभिषिञ्चन करें॥९॥

ॐ ऋचंव्वाचम्प्रपद्येमनोयजुःप्रपद्येसामप्प्राणम्प्रपद्येचक्षुःश्श्रोत्रम्प्रपद्ये॥ व्वागोजः-सहोजोमयिप्प्राणापानौ॥१॥ यन्मेंछिद्रञ्चक्षुषोहृदयस्यमनसोव्वातितृण्णम्बृहस्पतिर्म्मे-तद्दधातु॥ शन्नोभवतुभुवनस्ययस्पतिः॥२॥ भूर्भुवःस्वःतत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य-धीमहि॥ धियोयोनःप्प्रचोदयात्॥३॥ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधःसखा॥ कयाशचिष्ठयाव्वृता॥४॥ कस्त्वासत्योमदानाम्मꣳहिष्ठोमत्सदन्धसः॥ दृढाचिदारुजे-व्वसु॥५॥ अभीषुणःसखीनामविताजरितृणाम्॥ शतम्भवास्यूतिभिः॥६॥ कयात्वन्नऽ-ऊत्त्यामिप्प्रमन्दसेव्वृषन्॥ कयास्तोतृब्भ्यऽआभर॥७॥ इन्द्रोव्विश्श्वस्यराजति॥ शन्नोऽ-अस्तुद्विपदेशञ्चतुष्प्पदे॥८॥ शन्नोमित्रःशंव्वरुणःशन्नोभवत्वर्य्यमा॥ शन्नऽइन्द्रो-बृहस्प्पतिःशन्नोव्विष्णुरुरुक्क्रमः॥९॥ शन्नोव्वातःपवताꣳशन्नस्तपतुसूर्य्यः॥ शन्नःकनिक्क्रदद्देवःपर्ज्जन्न्योऽअभिवर्षतु॥१०॥ अहानिशम्भवन्तुनःशꣳरात्रीः-प्प्रतिधीयताम्॥ शन्नऽइन्द्राग्ग्नीभवतामवोभिःशन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्व्या॥ शन्नऽइन्द्रा-पूषणाव्वाजसातौशमिन्द्रासोमासुविताययशंय्योः॥११॥ शन्नोदेवीरभिष्टयऽ-आपोभवन्तुपीतये॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः॥१२॥ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः॥१३॥ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन॥ महेरणाय-चक्षसे॥१४॥ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥१५॥ तस्माऽ-अरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ॥ आपोजनयथाचनः॥१६॥ द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳ-शान्तिःपृथिवीशान्तिरापःशान्तिरोषधयःशान्तिः॥ व्वनस्प्पतयःशान्तिर्व्विश्वेदेवाः-शान्तिर्ब्रह्मशान्तिःसर्व्वꣳशान्तिःशान्तिरेवशान्तिःसामाशान्तिरेधि॥१७॥ दृते-दृꣳहमामित्रस्यमाचक्षुषासर्वाणिभूतानिसमीक्षामहे॥१८॥ दृतेदृꣳहमाज्ज्योक्तेसन्दृशि-जीव्व्यासञ्ज्योक्तेसन्दृशिजीव्व्यासम्॥१९॥ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे॥

अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयं÷पावकोऽअस्म्मब्भ्यंᳬशिवोभंव॥२०॥ नमंस्तेऽअस्तुव्विद्युते-नमंस्तेस्तनयित्नवें॥ नमस्तेभगवन्नस्तुयतंᳬस्व्ः समीहसे॥२१॥ यतोंयतᳬसमीहंसेततोंनोऽ-अभंयङ्कुरु॥ शन्नंःकुरुप्प्रजाब्भ्योऽभंयन्नᳬपशुब्भ्यंः॥२२॥ सुमित्रियानऽआपऒषधयᳬ-सन्तुदुर्म्मित्रियास्तस्म्मैंसन्तुयोऽस्म्मान्द्वेष्टियञ्चव्वयन्द्विष्म्मः॥२३॥ तच्चक्षुर्द्देवहिं-तम्पुरस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत्॥ पश्येंमशरदंःशतञ्जीवेंमशरदंःशतᳬशृणुयामशरदंःशतं-प्रब्ब्रवामशरदंःशतमदींनाᳬस्यामशरदंःशतम्भूयंश्च्चशरदंःशतात्॥२४॥

ॐ पयंःपृथिव्व्यांपयऽओषंधीषुपयोंदिव्व्यन्तरिंक्षेपयोंधाᳬ॥ पयंस्वतीᳬप्प्रदिशंःसन्तु-मह्य्यंम्॥ ॐ पञ्चंनद्यᳬसंरस्वतीमपिंयन्तिसस्रोंतसᳬ॥ सरंस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभंवत्सरित्॥ ॐ व्वरुंणस्योत्तम्भंनमसिव्वरुंणस्यस्कम्भसर्ज्जंनीस्त्थोव्वरुंणस्यऽऋतसदंन्न्यसिव्वरुंणस्यऽऋत-सदंनमसिव्वरुंणस्यऽऋतसदंनमासीदं॥ ॐ पुनन्तुमादेवजनाःपुनन्तुमनंसाधियंः॥ पुनन्तुविश्वाभूतानिजातंवेदᳬपुनीहिमां॥ ॐ देवस्यंत्वासवितुःप्प्रसवेश्श्विनोंर्ब्बाहुब्भ्यां-पूष्णोहस्ताब्भ्याम्॥ सरंस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्य्यन्त्रितयेंदधामिबृहस्प्पतेंष्ट्वासाम्म्राज्येनाभिषिं-ञ्चाम्यसौ॥ ॐ देवस्यंत्वासवितुःप्प्रसवेश्श्विनोंर्ब्बाहुब्भ्यांपूष्णोहस्ताब्भ्याम्॥ सरंस्वत्यै-व्वाचोयन्तुर्य्यन्त्रेणाग्ग्नेःसाम्म्राज्येनाभिषिंञ्चामि॥ ॐ देवस्यंत्वासवितुःप्प्रसवेश्श्विनों-र्ब्बाहुब्भ्यांपूष्णोहस्ताब्भ्याम्॥ अश्श्विनोभैषंज्ज्येनतेजंसेब्रह्मवर्च्चसायाभिषिंञ्चामि॥ सरंस्वत्यैभैषंज्ज्येनव्वीर्य्यायान्नाद्यायाभिषिंञ्चामीन्द्रंस्येन्द्रियेणबलायश्श्रियैयशंसेऽभिषिंञ्चामि॥ ॐ विश्श्वानिदेवसवितर्द्दुरितानिपरांसुव॥ यद्भद्द्रंतन्नऽआसुवं॥ धामच्छदग्ग्निरिन्द्रोंब्ब्रह्मा-देवोबृहस्प्पतिंः॥ सचेंतसोव्विश्श्वेदेवायज्ञंप्प्रावंन्तुनᳬशुभे॥ त्वंय्यंविष्ट्ठदाशुषोनॄःपाहि-श्रृणुधीगिरंः॥ रक्षातोकमुतत्त्मनां॥ ॐ अन्नंपतेऽन्नंस्यनोदेह्यनमीवस्यंशुष्मिणंः॥ प्प्रप्रंदातारं-तारिषऊर्ज्जंनोंधेहिद्विपदेचतुंष्पदे॥ ॐ द्यौᳬशान्तिरन्तरिंक्षᳬशान्तिंःपृथिवीशान्तिरापᳬ-शान्तिरोषंधयᳬशान्तिंः॥ व्वनस्प्पतंयᳬशान्तिर्व्विश्श्वेदेवाःशान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिᳬसर्व्वᳬशान्तिᳬ-शान्तिरेवशान्तिᳬसामाशान्तिरेंधि॥ यतोंयतᳬसमीहंसेततोंनोऽअभंयङ्कुरु॥ शन्नंःकुरुप्प्रजाब्भ्यो-भंयन्नᳬप्पशुब्भ्यंः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

अभिषेक कर्म करने के बाद यजमान संकल्प करके ब्राह्मणों को दक्षिणा दे।

यजमान दक्षिणासंकल्प करे—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं कृतस्य अभिषेक-कर्मणः समृद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं अभिषेककर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां करोपस्थित मनसेप्सितां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

अभिषेककर्म परिपूर्णम्

❀

षोडशमातृकासप्तघृतमातृकापूजनम्

कुलदेवता	लोकमातृ	देवसेना	मेधा
तुष्टि	मातृ	जया	शची
पुष्टि	स्वाहा	विजया	पद्मा
धृति	स्वधा	सावित्री	गौरी / गणेश

किसी पाटे पर कपड़ा बिछाकर उस पर चित्रानुसार सोलह समान खानों को बना करके प्रथम खाने का दो भाग करके उसमें गेहूँ भर करके उस पर सुपाड़ी रख करके उस सुपाड़ी के ऊपर गौरी-गणेश के सहित मातृका देवियों का आवाहन पूजन करे।

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि षोडशमातृकासप्तघृतमातृकापूजनञ्च करिष्ये।**

गणेशावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ गुणानान्त्वागुणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वांनिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमंजानिगर्ब्भधमात्त्वमंजासिगर्ब्भधम् ॥

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।
त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरीमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः॥ पितरंचप्प्रयन्त्स्वः॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

पद्मामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ हिरण्यरूपाऽउषसोविरोकऽउभाविन्द्राऽदिथःसूर्य्यश्च॥ आरोहतंवरुणमित्र-गर्त्ततत्तश्चक्षाथामदितिंदितिंचमित्रोऽसिवरुणोऽसि॥

पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसंस्थिताम्।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि।

शचीमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ निवेशनःसङ्गमनोवसूनांविश्श्वारूपाभिचष्ट्टेशचीभिः॥ देवऽइवसवितासत्त्यधर्म्मेन्द्रो-नतस्थौसमरेपथीनाम्॥

दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचिकुण्डलधारिणीम्।
रक्तमुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः शचीमावाहयामि स्थापयामि।

मेधामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ मेधांमेवरुणोददातुमेधामग्ग्निः प्प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्श्चवायुश्श्चमेधांधातादददातु-मेस्वाहा॥

विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम्।
बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।

सावित्रीमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ सवितात्त्वासवानांᳬसुवतामग्ग्निर्ग्गृहपतिनाᳬसोमोवनस्प्पतीनाम्॥ बृहस्प्पति-र्वाचऽइन्द्रोज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुब्भ्योमित्रः सत्त्योवरुणोधर्मपतीनाम्॥

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम्।
वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

विजयामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ विज्ज्यन्धनुःकपर्दिनोविशल्ल्योबाणवाँ२॥उत॥ अनेशन्नस्स्ययाऽइषवऽआभुरस्य-निषङ्गधिः॥

सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम्।
सर्वदेवस्तुतां वन्द्यां विजयां स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि।

जयामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ वह्वीनांपिताबहुरस्यपुत्रश्चिश्चाकृणोतिसमनावगत्त्य।। इषुधिःसङ्काःपृतनाश्चसर्वाःपृष्ठेनिनद्धोजयतिप्रसूतः।।

सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम्।
त्रैलोक्यवन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि।

देवसेनामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञःपुरएतुसोमः।। देवसेनानामभिभञ्जजीनां-जयन्तीनांमरुतोयन्त्वग्रम्।।

मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिधनुर्धराम्।
आवाहयेद् देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।

स्वधामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ पितृभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमःपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः-प्रपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः।। अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरः-पितरःशुन्धध्वम्।।

अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता।
पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

स्वाहामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ स्वाहाप्राणेभ्यःसाधिपतिकेभ्यः।। पृथिव्यैस्वाहाग्नयेस्वाहान्तरिक्षायस्वाहा-वायवेस्वाहा।। दिवेस्वाहासूर्य्यायस्वाहा।।

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

मातृः-आवाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ आपोऽअस्मान्मातरःशुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्वःपुनन्तु।। विश्वश्रृहिरिप्रंप्रवहन्ति-

देविरुदिदाब्भ्यः शुचिरापूतऽएमि॥ दीक्षातपसोस्तनूरसितांत्वाशिवाᳯशग्ग्मांपरिदधे-भद्रंवर्णपुष्ष्यन्॥

आवाहयाम्यहं मातृः सकलाः लोकपूजिताः।
सर्वकल्याणरूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः मातृः आवाहयामि स्थापयामि।

लोकमातृः आवाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ रयिश्श्चमेरायश्श्चमेपुष्टंचमेपुष्टिश्श्चमेविभुचमेप्रभुचमेपूर्णंचमेपूर्णतरंचमे-कुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमेऽन्नंच्चमेऽक्षुच्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥

आवाहयेल्लोकमातृः जयन्तिप्रमुखाः शुभा।
नानाऽभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि।

धृतिमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च्चयज्ज्योतिरन्तरमृतंप्प्रजासु॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन कर्म्मक्क्रियतेतन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु॥

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

पुष्टिमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ अङ्गान्न्यात्मन्भिषजातदश्श्विनात्मानमङ्गैः समधात्तसरस्वती॥ इन्द्रस्यरूपᳯशत-मानमायुश्च्चन्द्रेणज्ज्योतिरमृतंदधानाः॥

पोषयन्तीं जगत्सर्वं स्वदेहप्रभवैर्नवैः।
शाकैः फलैर्जलैर्रत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

तुष्टिमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः॥ सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्श्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोषकारिणीम्।
प्रसादसुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

कुलदेवतामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ प्प्राणायुस्वाहाऽपानायुस्वाहाव्यानायुस्वाहा॥ चक्षुषेस्वाहाश्रोत्रायुस्वाहावाचे स्वाहामनसेस्वाहा॥

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथों से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्युबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञःसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितगौर्यादि आत्मनः कुलदेवताद्यावाहितमातृभ्यो नमः आवाहिता प्रतिष्ठिता वरदा भवत्।
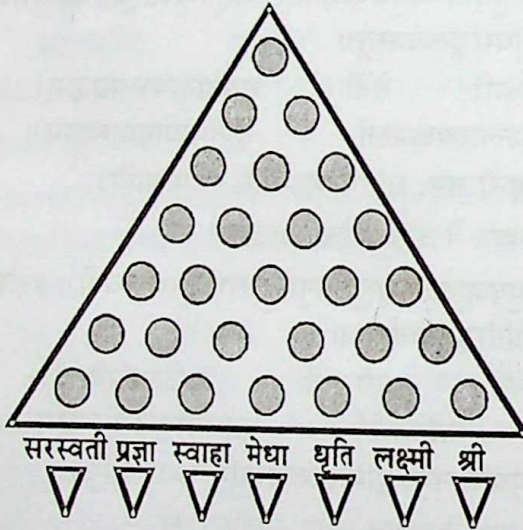
किसी पाटे पर कपड़ा बिछा करके उस पर अधोलिखित चक्र सिन्दूर से सप्तबिन्द्वात्मक (सबसे पहले नीचे सातबिन्दु बनाकर फिर उसके ऊपर छः बिन्दु फिर उसके ऊपर पाँच बिन्दु, उसके ऊपर चार बिन्दु, उसके ऊपर तीन बिन्दु, उसके ऊपर दो बिन्दु, फिर उसके ऊपर एक बिन्दु चक्र) बनायें। नीचे के सात बिन्दुओं पर घृत धारा कर, गुड़ से एकीकरण कर, उन पर आवाहन-स्थापन करके पूजन करे।

घृतधारा—घी से अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुए सप्तमातृका बिन्दुओं पर घृत धारा दें पश्चात् गुड़ से एकीकरण कर, प्रत्येक धाराओं पर तत्तद् देवताओं का आवाहन करे।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्॥ देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा॥ ॐ कामधुक्षः॥

श्रियमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय॥ पशूनाᳬरूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि।

लक्ष्मीमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।

धृतिमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

मेधामावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।

स्वाहामावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा॥ चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

प्रज्ञामावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः॥ पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।

सरस्वतीमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथों से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳬसमिमं दधातु॥ विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः आवाहिताः प्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर आसन का ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ कपूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथों से पयःपात्र (दूध का बर्तन) लेकर समर्पित करे—

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथों से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदासिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान् अमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणमातृक!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण करने के बाद देवता के सम्मुख नैवेद्य स्थापित करने के बाद धूप तथा घृतदीप प्रज्वलित करने के बाद सर्वप्रथम धूप निवेदन करने के बाद दीप निवेदन करे। दीप देवता को समर्पित किया जाता है, न कि चारो ओर घुमाया जाता है।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथों से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यञ्च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेला-लवङ्गादिसहित ताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से फल लेकर समर्पित करे—

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदली पनसाऽऽम्रं कपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्वादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथों से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्-गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदा भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदशर्थञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—दोनों हाथों से पुष्प संग्रहण कर प्रार्थना करे—

मेधाऽसि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा,
दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा,
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा॥१॥
देवि प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य॥२॥
गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥१॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश॥२॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपः॥३॥
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥
श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः॥१॥
यदङ्गत्वेन भो देव्या पूजितो विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः स्तुतिप्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर पूजन समर्पित करे—

अनेन यथोपलब्धद्रव्येण यथाज्ञानेन पूजनेन गणेशादिषोडशमातृकासहित श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः प्रीयन्तां न मम।

मातृकापूजनं परिपूर्णम्

❁

आयुष्यमन्त्रम्

यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम्॥१॥
दीर्घा नागा नगानद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्॥२॥
सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च।
आविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्॥३॥

ॐ आयुष्ष्यंव्वर्च्चस्यꣳरायस्प्पोषमौद्भिदम्॥ इदꣳहिरण्ण्यंव्वर्च्चस्वज्जैत्रायाविशतादुमाम्॥ ॐ नतद्रक्षाꣳसिनपिशाचास्त्तरन्तिदेवानामोजः प्प्रथमजꣳह्येतत्॥ योबिभर्त्तिदाक्षायणꣳहिरण्यꣳसदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुꣳसमनुष्ष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः॥ ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्ण्यꣳशतानीकायसुमनस्यमानाः॥ तन्मऽआबध्नामिशतशारदायायुष्ष्मान्जरदष्ट्टिर्ग्यथासम्॥

आयुष्यमन्त्र का पाठ करते हुए यजमान को रक्षासूत्र बाँधे। आयुष्यमन्त्र के पाठ के बाद आचार्य यजमानपत्नी को रक्षासूत्र बाँधे। आयुष्यमन्त्र का पाठ श्रवण करने के बाद यजमान दक्षिणासंकल्प करके ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करे।

दक्षिणासंकल्पः—**ॐ तत्सदद्यपूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं कृतस्य आयुष्यमन्त्रपाठकर्मणः समृद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं आयुष्यमन्त्रपाठकर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां करोपस्थितदक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।**

आयुष्यमन्त्रं परिपूर्णम्

साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धम्

आयुष्यमन्त्र पाठ के बाद किसी पत्तल या पाटे पर आकृति के अनुसार रेखाओं को बना कर उस पर कुशनिर्मित मोटक रखकर पूजन करे, ऊर्ध्व की रेखाओं पर विश्वेदेव का तथा नीचे की दक्षिण की तीनो रेखाओं पर मातृ-पितामही-प्रपितामही का तथा मध्य तीनो रेखाओं पर पितृ-पितामह-प्रपितामह एवं वाम तीनो रेखाओं पर मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह का आवाहन पूजन करे, यह श्राद्ध सव्य हो कर ही किया जाता है, सर्वप्रथम विश्वेदेव के साथ पितरों का ध्यान करे, जिनके माता-पिता जीवित हों, वे माता पिता को छोड़कर ऊपर की पीढ़ी पितामहादि के लिए श्राद्ध करेंगे, विद्वान् कर्मकाण्डी तदनुसार ऊह करके श्राद्ध करायें।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरव-प्रयोगकर्मणि साङ्कल्पिकेन विधिना आभ्युदयिकनान्दीश्राद्धं करिष्ये।**

विश्वेदेवावाहनम्—ऊपर के दोनों मोटकों पर ध्यान करे—

ॐ विश्श्वेदेवासऽआगतश्रृणुतामऽइमꣳ हवम्॥ एदम्बर्हिन्निषीदत॥ उपयामगृहीतोसि-विश्श्वेब्भ्यस्त्वादेवेब्भ्यऽएषतेयोनिर्व्विश्श्वेब्भ्यस्त्वादेवेब्भ्यः॥ ॐ विश्श्वेदेवाऽअꣳ-शुषुन्न्युप्तोविष्णुराप्प्रीतपाऽआप्प्याय्यमानोयमः सूयमानोविष्णुः सम्भ्रियमाणोवायुः-पूयमानः शुक्रः पूतः शुक्रः क्षीरश्श्रीर्म्मन्थीसक्तुश्श्रीर्व्विश्श्वेदेवाः॥ ॐ विश्श्वेदेवाश्श्च-

मुसेषून्नीतोसुर्होमायोद्यतोरुद्रोहूयमानोवातोब्भ्यावृत्तोनृचक्षाः प्प्रतिक्ख्यातोभक्ष्योभुक्ष्यमाणः पितरौनाराशङ्साः सन्नः सिन्धुः॥ ॐ विश्श्वेदेवाः श्रृणुतेमङ्हवम्मेयेऽअन्तरिक्षेयऽउपद्यविष्ठ॥ येऽअग्निजिह्वाऽउतवायजत्राऽआसद्यास्मिन्बर्हिषिमादयद्ध्वम्॥

पितृणां ध्यानम्—पितरों का ध्यान करे—

ॐ उशन्तस्त्वानिधीमह्युशन्तः समिधीमहि॥ उशन्नुशतऽआवहपितृन्हविषेऽअत्तवे॥ ॐ आयन्तुनः पितरः सोम्म्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्द्देवयानैः॥ अस्मिन्न्यज्ञेस्वधयामदन्तोधिब्ब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान्॥

मातृपितामहिप्रपितामह्यावाहनम्—माता, दादी और वृद्धदादी का ध्यान करे—

ॐ अत्रपितरोमादयद्ध्वँय्यथाभागमावृषायद्ध्वम्॥ अमीमदन्तपितरौयथाभागमावृषायिषत॥ ॐ नमोवः पितरोरसायनमोवः पितरः शोषायनमोवः पितरोजीवायनमोवः पितरः स्वधायैनमोवः पितरोघोरायनमोवः पितरोमन्न्यवेनमोवः पितरः पितरोनमोवोगृहान्नः पितरोदत्तसतोवः पितरोदेष्मैतद्वः पितरोवास॥ आधत्तपितरोगर्ब्भङ्कुमारम्पुष्करस्रजम्॥ यथेहपुरुषोसत्॥ ऊर्ज्जवहन्तीरमृतंघृतम्पयः कीलालम्परिस्रुतम्॥ स्वधास्थतर्प्पयतमेपितृन्॥

पितृपितामहप्रपितमहानामावाहनम्—पिता, दादा और परदादा का ध्यान करे—

ॐ उदीरतामवरऽउत्त्परासऽउन्मद्ध्यमाः पितरः सोम्म्यासः॥ असुँय्यऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्तेनोवन्तुपितरोहवेषु॥ ॐ अङ्गिरसोनः पितरोनवग्ग्वाऽअथर्वाणोभृगवः सोम्म्यासः॥ तेषांवयङ्सुमतौयज्ञियानामपिभद्रेसौमनसेस्याम॥ ॐ आयन्तुनः पितरः सोम्म्याऽसोग्निष्वात्ताः पथिभिर्द्देवयानैः॥ अस्मिन्न्यज्ञेस्वधयामदन्तोधिब्ब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान्॥ ॐ ऊर्ज्जवहन्तीरमृतंघृतम्पयः कीलालम्परिस्रुतम्॥ स्वधास्थतर्प्पयतमेपितृन्॥ ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः प्रतितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः॥ अक्क्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धद्ध्वम्॥ ॐ येचेहपितरोयेचनेहयाँश्श्चविद्मयाँ२॥ऽउचनप्प्रविद्म॥ ॐ मधुवाताऽऋतायतेमधुक्क्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥ ॐ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्त्पार्त्थिवङ्रजः॥ मधुद्यौरस्तुनः पिता॥ ॐ मधुमान्नोवनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥

मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानामावाहनम्—नाना, परनाना और वृद्धपरनाना का ध्यान करे—

ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धद्ध्वम्॥

पाद्यसमर्पणम्—सभी के कुशाओं पर जल प्रदान करे—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं

पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। (ऊपर की दोनों कुशाओं पर आवाहन कर पाद्य जल प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।** (नीचे दाहिने तरफ की तीनो कुशाओं पर आवाहन कर पाद्य प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।** (नीचे मध्य की तीनो कुशाओं पर आवाहन कर पाद्य प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।** (नीचे बाये तरफ के तीनो कुशाओं पर आवाहन कर पाद्य प्रदान करे।)

आसनदानम्—त्रिकुश का बना मोटक रूप आसन प्रदान करे—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः। (ऊपर की दोनों कुशाओं पर मोटक रूप आसन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।** (नीचे दाहिनी तरफ की तीनो कुशाओं पर मोटक रूप आसन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।** (मध्य की तीनो कुशाओं पर मोटक रूप आसन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।** (बाये तीनो कुशाओं पर मोटक रूप आसन प्रदान करे।)

षोडशोपचारपूजनम्—मौन होकर सामग्री चढ़ाकर गन्धादिदान का सङ्कल्प करे—

इदं स्नानीयं सुस्नानीयम्। स्नान के लिए जल प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं वस्त्रं सुवस्त्रम्। वस्त्र प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इमे यज्ञोपवीते सुयज्ञोपवीते। यज्ञोपवीत प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। यज्ञोपवीताङ्गाचमनीय जल प्रदान करे।

एष गन्धः सुगन्धः। चन्दन प्रदान करे।

इमे तिलाक्षताः सुतिलाक्षताः। अक्षत प्रदान करे।

इदं माल्यं सुमाल्यम्। पुष्पमाला प्रदानकर नैवेद्य स्थापित करे।

एष धूपः सुधूपः। धूप आघ्रापितकर प्रदान करे।

एष दीपः सुदीपः। दीप दिखाकर प्रदान करे।

हस्तप्रक्षालनम्। दोनों हाथ प्रक्षालित करे।

इदं नैवेद्यं सुनैवेद्यम्। नैवेद्य प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं ऋतुफलं सुफलम्। ऋतुफल प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं ताम्बूलं सुताम्बूलम्। ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा सुदक्षिणा। दक्षिणा प्रदान करे।

इदं पुष्पाञ्जलि सुपुष्पाञ्जलि। पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

गन्धाद्यार्चनदानम्—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। (ऊपर के दोनों मोटकों पर गन्धाद्यार्चन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** (नीचे दाहिने के तीनो मोटकों पर गन्धाद्यार्चन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** (नीचे मध्य के तीनो मोटकों पर गन्धाद्यार्चन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** (नीचे बाये के तीनो मोटकों पर गन्धाद्यार्चन प्रदान करे।)

भोजननिष्क्रयदानम्—चारो स्थानों पर भोजन का युग्म मूल्य समर्पित करे—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। (ऊपर के दोनों मोटकों पर भोजननिष्क्रय प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** (नीचे दाहिने के तीनो मोटकों पर भोजननिष्क्रय प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** (नीचे मध्य के तीनो मोटकों पर भोजननिष्क्रय प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** (नीचे बाये के तीनो मोटकों पर भोजननिष्क्रय प्रदान करे।)

सक्षीरयवमुदकदानम्—अर्घ्यपात्र में दूध-जौ-जल मिश्रित करके प्रदान करे—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। (ऊपर के दोनों मोटकों पर दूधजौजलमिश्रण प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्।** (नीचे दाहिने के तीनो मोटकों पर दूधजौजलमिश्रण प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।** (नीचे मध्य के तीनो मोटकों पर दूधजौजलमिश्रण प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।** (नीचे बाये के तीनो मोटकों पर दूधजौजलमिश्रण प्रदान करे।)

उत्तरपूजनम्—चारों जगहों पर जल, पुष्प तथा अक्षत समर्पित करे—

शिवा आपः सन्तु। बोलकर जल प्रदान करे।

सौमनस्यमस्तु। बोलकर पुष्प प्रदान करे।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु। बोलकर अक्षत प्रदान करे।

अघोरकरणम्—चारों जगहों पर पूर्वाग्र जलधारा प्रदान करे—

ॐ अघोराः पितरः सन्तु।

दक्षिणादानम्—सभी के लिए आसनों पर दक्षिणा प्रदान करे—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा-सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। (ऊपर के दोनों मोटकों पर दक्षिणा प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूल-निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।** (नीचे दाहिने के तीनो मोटकों पर दक्षिणा प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूल-निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।** (नीचे मध्य के तीनो मोटकों पर दक्षिणा प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामह प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः कृतस्यनान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।** (नीचे बाये के तीनो मोटकों पर दक्षिणा प्रदान करे।)

यजमान प्रार्थना करे—यजमान अपने पितरों से हाथ जोड़ कर प्रर्थना करे—

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च।
श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु॥
अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि।
याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्मकञ्चन॥

गोत्रन्नो वर्धतां (हमारा कुल बढ़े), **दातारो नोऽभिवर्धन्तां** (उस गोत्र में दाता और भी बढ़ें), **वेदाः सन्ततिरेव च** (हमारी सन्तति ज्ञानवान् हो), **श्रद्धा च नो मा व्यगमद्** (वे सभी श्रद्धावान् हों), **बहुदेयं च नोऽस्तु** (उनके पास दान देने के लिए बहुत धन-धान्यादि हो), **अन्नं च नो बहु भवेत्** (उनके पास अन्नादि बहुत हो), **अतिथींश्च लभेमहि** (उनके पास दान लेने के लिए बहुत अतिथि आयें), **याचितारश्च नः सन्तु** (दान लेने के लिए याचक भी आयें), **मा च याचिष्मकञ्चन** (हमारे कुल में कोई भी याचक न हो)। **भावार्थ**— (हमारा कुल बढ़े, सभी दाता हों, वें अत्यधिक बढ़े, हमारे कुल की समस्त सन्तान ज्ञानवान् हों, सभी श्रद्धावान् तथा आदर करनेवाले हों, वे कभी किसी का निरादर न करें, उनकें पास अतिथि तथा याचक आयें, जिन्हें दान देकर गौरव प्राप्त करें, हमारे कुल में कोई याचक न हो।)

यजमान ब्राह्मणों से कहे—**एताः सत्या आशिषः सन्तु॥**

ब्राह्मण बोलें—**सन्त्वेताः सत्या आशिषः।**

ॐ उपास्मैगायतानरः पवमानायेन्दवे॥ अभिदेवाँ२ ॥इयंक्षते॥ ॐ इडामग्नेपुरुदꣳसꣳ- सनिंगोःशश्श्वत्तमꣳहवमानायसाध॥ स्यान्नः सूनुस्तनयोविजावाग्नेसातेसुमतिर्भूत्वस्मे॥

यजमान बोले—**नान्दीश्राद्धं सुसम्पन्नम्।**

ब्राह्मण बोलें—**सुसम्पन्नम्।**

विसर्जनम्—मातृ-पितामही-प्रपितामही, पिता-पितामह-प्रपितामह तथा सपत्नीक मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह के सहित आसन के ऊपर यवाक्षत छिड़ककर विसर्जन करे—

ॐ वाजेवाजेऽवतवाजिनोनोधनेषुविप्राऽअमृताऽऋतज्ञाः॥ अस्यमद्ध्वः पिबत मादयद्ध्वंतृप्तायात्तपथिभिर्देवयानैः॥ ॐ आ मा वाजस्यप्रसवोजगम्म्यादेमेद्यावापृथिवी- विश्श्वरूपे॥ आ मा गन्तां पितरामातरा चा मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्म्यात्॥

विश्वेदेव का विसर्जजन करे—**ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।**

यजमान बोले—**मयाऽऽचरिते साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणेशप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।**

ब्राह्मण बोलें—**अस्तु परिपूर्णः।**

समर्पणम्—**अनेन साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दिश्राद्धकृतेन पितृस्वरूपीमहाविष्णुः प्रीयतां न मम।**

साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धं परिपूर्णम्

❁

आचार्यादिवरणम्

वरण सामग्री के पूजन के साथ सर्वप्रथम आचार्य का पूजन करके वरण के पश्चात् ब्रह्मादि का पूजन वरण करे।

ॐ वरणसामग्रीभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

एकतन्त्रेण आचार्यादिब्राह्मणानां वरणानि—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् स्वर्णाकर्षण-भैरवप्रयोगकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन ब्रह्मात्वेन उपद्रष्टात्वेन गाणपत्यत्वेन सदस्यत्वेन ऋत्विक्त्वेन युष्मान् वृणे।**

आचार्यादि बोलें—**वृताः स्मः।**

आचार्यादिवरण शास्त्रानुसार अलग अलग ही करना चाहिए।

आचार्यवरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् स्वर्णाकर्षण-भैरवप्रयोगकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत!॥

आचार्य बोलें—**वृतोऽस्मि।**

ब्रह्मावरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् स्वर्णाकर्षण-भैरवप्रयोगकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

यथा चतुर्मुखोब्रह्मा सर्वलोकपितामहः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्माभव द्विजोत्तम!॥

ब्रह्मा बोलें—**वृतोऽस्मि।**

उपद्रष्टावरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् स्वर्णाकर्षण-भैरवप्रयोगकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः उपद्रष्टात्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधमपरायण!।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज!॥

उपद्रष्टा बोलें—**वृतोऽस्मि।**

गाणपत्यवरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् स्वर्णाकर्षण-भैरवप्रयोगकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः गाणपत्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

वाञ्छितार्थफलावाप्त्यै पूजितोऽसि सुराऽसुरैः।
निर्विघ्नं क्रतुसंसिद्ध्यै त्वामऽहं गणपं वृणे॥

गणप बोलें—**वृतोऽस्मि।**

सदस्यवरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् स्वर्णाकर्षण-भैरवप्रयोगकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः सदस्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतां वर।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन् सदस्यो भव सुव्रत!॥

सदस्य बोलें—**वृतोऽस्मि**। अधिक सदस्य हों, तो **वृतास्मः** बोले। ब्राह्मण सङ्ख्या के अनुसार सङ्कल्प और प्रार्थना में उह कर लेना चाहिये।

ऋत्विक्वरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् स्वर्णाकर्षण-भैरवप्रयोगकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मपरायण!।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नृत्विक्त्वं मे मखे भव॥

ऋत्विक बोले—**वृतोऽस्मि।**

नियमनिवेदनम्—यजमान हाथ जोड़ करके सभी ब्राह्मणों से निवेदन करे—

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।
ग्रहध्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसः सदा॥१॥
अदुष्टभक्षणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।
ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि॥२॥
ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः॥३॥
अस्मिन् कर्मणि ये विप्राः वृता गुरुमुखादयः।
सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम्॥४॥
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्॥५॥

यजमान बोले—**यथा विहितं कुरुध्वम्।**

सभी विप्र बोलें—**यथा ज्ञानं करवामः।**

आचार्यादिवरणं परिपूर्णम्

❁

रक्षोघ्नकर्मम्

आचार्य आचमन-प्राणायाम करके सङ्कल्प पूर्वक दिग्रक्षण करे—

सङ्कल्पः—ॐ **विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे**(यदि वाराणसी में अनुष्ठान कर रहे हो तो **वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे**) **विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षण-भैरवप्रयोगकर्मणि अमुकगोत्र नामधेय यजमानेन वृतोऽहम् आचार्य कर्म करिष्ये।**
आचार्य पीली सरसों से रक्षोघ्न कर्म करे।

ॐ रक्षोहणंव्वलगहनंव्वैष्णवीमिदमहंतंव्वलगमुत्किरामियंमेनिष्ट्योयममात्योनिच-खानेदमहंतंव्वलगमुत्किरामियंमेंसमानोयमसमानोनिचखानेदमहंतंव्वलगमुत्किरामियंमे-सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहंतंव्वलगमुत्किरामियम्मेंसजातोयमसजातोनिचखा-नोत्कृत्यांकिरामि॥१॥ आचार्य पूर्व दिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ रक्षोहणौवोवलगहनः प्रोक्षामिवैष्णवान्रक्षोहणौवोवलगहनोऽवनयामिवैष्ण-वान्रक्षोहणौवोवलगहनोऽवस्तृणामिवैष्णवान्रक्षोहणौवांवलगहनाऽउपदधामिवैष्णवी-रक्षोहणौ वां वलगहनौपर्य्यूहामिवैष्णवीवैष्णवमसिवैष्णवास्थ॥२॥ आचार्य दक्षिण दिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ रक्षसांभागोऽसिनिरस्तः रक्षऽइदमहः रक्षोऽभितिष्ठामीदमहः रक्षोऽवबाधऽइदमः-रक्षोऽधमन्तमोनयामि॥ घृतेनद्यावापृथिवीप्रोर्णुवाथांवायोवेस्तोकानामग्निराज्ज्यस्यवेतुस्वाहा-स्वाहाकृतेऽऊर्ध्वनभसम्मारुतङ्गच्छतम्॥३॥ आचार्य पश्चिम दिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ रक्षोहाविश्वचर्षणिरभियोनिमयोहते॥ द्रोणेसधस्थमासदत्॥४॥ आचार्य उत्तर दिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥
ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥
ॐ भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पुरश्चरणं करोम्यहम्॥

ô nghãd ऊपर ऊर्ध्वदिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ हुँ फट्। अधोदिशा भूमि पर नीचे पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

चारो तरफ क्रोधमयी दृष्टि डालकर चारो तरफ के विघ्नों का निस्सारण करे, तथा तीन बार पैर की एड़ी से भूमि पर प्रहार करके भूमिस्थित विघ्नकर्ताओं से रक्षार्थ विघ्नों का निस्सारण करें।

रक्षोघ्नकर्म परिपूर्णम्

पञ्चगव्यकरणम्

ॐ गा॒य॒त्रीत्रि॒ष्टुब्जग॑त्यनु॒ष्टुप्प॒ङ्क्त्यासु॒ह॥ बृ॒हत्यु॒ष्णिहा॑ककु॒प्प्सू॒चीभि॑ः शम्म्यन्तु॒-त्त्वा॥ आचार्य इस मन्त्र से गोमूत्र स्थापित करें।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ आचार्य इस मन्त्र से गोमय मिश्रित करें।

ॐ आप्प्या॑यस्व॒समे॑तुतेवि॒श्श्वत॑ः सोम॒वृष्ण्य॑म्॥ भवा॒वाज॑स्यसङ्ग॒थे॥ आचार्य इस मन्त्र से गोदुग्ध मिश्रित करें।

ॐ द॒धि॒क्राव्ण्णो॑ऽअकारिषज्जि॒ष्णोरश्श्व॑स्यवा॒जिन॑ः॥ सुरभिनो॒मुखा॑कर॒त्त्प्रण॒ऽआयू॑ᳬं᳚षितारिषत्॥ आचार्य इस मन्त्र से दही मिश्रित करें।

ॐ तेजो॑ऽसिशु॒क्क्रम॑स्य॒ऽमृत॑मसि॒धाम॒नामा॑ऽसिप्प्रि॒यं॑दे॒वाना॒मना॑धृष्ट्टन्देव॒यज॑नमसि॥ आचार्य इस मन्त्र से गोघृत मिश्रित करें।

ॐ दे॒वस्य॑त्वासवि॒तुः प्प्रस॒वे॒ऽश्श्विनो॑र्बा॒हुभ्या॑म्पू॒ष्ण्णोहस्ता॑भ्याम्॥ इस मन्त्र से कुशोदक मिश्रित करके यज्ञकाष्ठ से आलोडित करें।

ॐ आपो॒हिष्ठ्ठाम॑यो भु॒वस्तान॑ऽऊ॒र्ज्जेद॑धातन॥ म॒हेरणा॑य॒चक्ष॑से॥ योव॑ः शि॒वत॑मो॒-रस॒स्तस्य॑भाजयते॒हन॑ः॥ उ॒श॒तीरि॑वमा॒तर॑ः॥ तस्म्मा॒ऽअर॑ङ्गमामवो॒यस्य॒क्षया॑य॒जिन्न्व॑थ॥ आपो॑ज॒नय॑थाचन॑ः॥

पञ्चगव्य निर्माण के बाद अपवित्रः पवित्रोवा० मन्त्र से तीन बार यज्ञभूमि तथा यज्ञ-सामग्री का मार्जन प्रोक्षण करें फिर अञ्जलि बनाकर स्वस्त्यवाचन दो बार करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ स्व॒स्तिन॒ऽइन्द्रो॑वृ॒द्धश्र॑वाः स्व॒स्तिन॑ः पू॒षावि॒श्श्ववे॑दाः॥ स्व॒स्तिन॒स्तार्क्ष्यो॒ऽअरि॑ष्ट्ट-नेमिः स्व॒स्तिनो॒बृह॒स्प्पति॑र्दधातु॥ इस मन्त्र का दो बार पाठ करें।

देवाः आयान्तु॥ यातुधानाः अपयान्तु॥ विष्णोर्देव भूम्यमिमं रक्षस्व॥

पञ्चगव्यकरणं परिपूर्णम्

❁

सर्वतोभद्रदेवतानां स्थापनम्
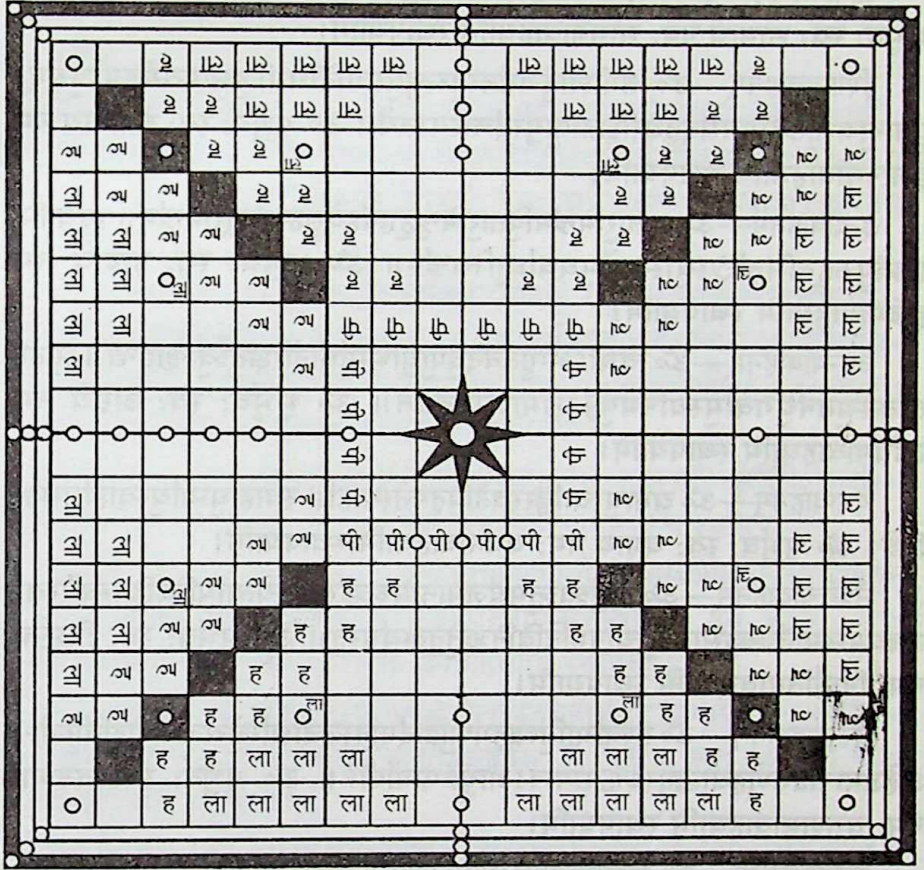
किसी चौकोर चौकी पर कपडा बिछाकर अष्टादश कोष्ठक बनाकर चित्रानुसार विभिन्न रंगों से रञ्जित चावलादि रखकर उस पर नियत स्थान पर सुपाड़ी रखकर सर्वतोभद्रमण्डल के देवताओं का आवाहन-स्थापन पूजन करे।

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि सर्वतोभद्रदेवतानां स्थापनं करिष्ये।**

सर्वतोभद्रदेवतानां आवहन-स्थापनम्

ब्रह्मावाहनम्—ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः ॥ सबुद्ध्न्या उपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

सोमावाहनम्—ॐ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः ॥ प्रजावन्तःसचेमहि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

ईशानावाहनम्—ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिंधियंजिन्वमवसेहूमहेव्वयम्॥ पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धस्वस्तये॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रावाहनम्—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामि-शक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

अग्न्यावाहनम्—ॐ त्वन्नोऽअग्नेतवदेवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्श्चवन्द्य॥ त्राता-तोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्व्रते॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

यमावाहनम्—ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मः-पित्रे। ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यावाहनम्—ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य॥ अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुब्भ्यमस्तु॥ ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

वरुणावाहनम्—ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानोव्वरुणेहबोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वाय्वावाहनम्—ॐ आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्॥ व्वायोऽअस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिःसदानः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

अष्टवस्वाहनम्—ॐ व्वसुब्भ्यस्त्वारुद्रेब्भ्यस्त्वाऽऽदित्येब्भ्यस्त्वासञ्जानाथां द्यावापृथिवीमित्रावरुणौत्वाव्वृष्ट्याव्वताम्॥ व्यन्तुव्वयोक्तꣳरिहाणामरुतांपृषतीर्गच्छव्वशा-पृश्निर्ब्भूत्वादिवंगच्छतत्तोनोव्वृष्टिमावह॥ चक्षुष्पाऽअग्नेऽसिचक्षुर्म्मेपाहि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुब्भ्यो नमः अष्टवसूनावाहयामि स्थापयामि।

एकादशरुद्रानावाहनम्—ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः॥ बाहुब्भ्यामुतते

नमः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि।

द्वादशादित्यावाहनम्—ॐ यज्ञोदेवानांप्रत्यैतिसुम्नमादित्यासोभवतामृडयन्तः॥ आवोऽर्वाचीसुमतिर्वृत्त्यादꣳहोश्चिद्याववरिवोवित्तरासत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि।

अश्विनीकुमारौ-आवाहनम्—ॐ अश्विनातेजसाचक्षुःप्प्राणेनसरस्वतीवीर्य्यम्॥ वाचेन्द्रोबलेनेन्द्रायदधुरिन्द्रियम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

सपैतृकविश्वान्देवावाहनम्—ॐ विश्वेदेवासऽआगतशृणुताम्मऽइमꣳहवम्॥ एदंबर्हिन्निषीदत॥ उपयामगृहीतोऽसिविश्वेब्भ्यस्त्वादेवेब्भ्यऽएषतेयोनिर्विश्वेब्भ्यस्त्वादेवेब्भ्यः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः सपैतृकविश्वान्देवानावाहयामि स्थापयामि।

सप्तयक्षावाहनम्—ॐ अभित्यंदेवꣳसवितारमोण्योःकविक्क्रतुमर्च्चामिसत्त्यसवꣳरत्नधामभिप्प्रियंमतिंकविम्॥ ऊर्ध्वायस्यामतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमीतसुक्क्रतुःकृपास्वः॥ प्रजाब्भ्यस्त्वाप्प्रजास्त्वानुप्प्राणन्तुप्रजास्त्वमनुप्प्राणिहि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि।

सर्पावाहनम्—ॐ नमोस्तुसर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथिवीमनु॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्यः-सर्प्पेब्भ्योनमः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि स्थापयामि।

गन्धर्वाऽप्सरसः-आवाहनम्—ॐ ऋताषाडृतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोप्सरसोमुदोनाम॥ सनऽइदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातुतस्मैस्वाहावाट्ताब्भ्यःस्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाऽप्सरोभ्यो नमः गन्धर्वाऽप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि।

स्कन्दावाहनम्—ॐ यदक्क्रन्दःप्प्रथमंजायमानऽउद्यन्त्समुद्द्रादुतवापुरीषात्॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्त्यंमहिजातंतेऽअर्वन्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

वृषभावाहनम्—ॐ आशुःशिशानोवृषभोनभीमोघनाघनःक्षोभणश्चर्षणीनाम्॥ सङ्क्रन्दनेनाऽनिमिषऽएकवीरःशतꣳसेनाऽअजयत्त्साकमिन्द्रः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभाय नमः वृषभमावाहयामि स्थापयामि।

शूलावाहनम्—ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्यत्त्वाक्षित्त्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्गमतसमोषधीभिरोषधीः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः शूलमावाहयामि स्थापयामि।

महाकालावाहनम्—ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम्॥ उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः महाकालमावाहयामि स्थापयामि।

दक्षादिसप्तगणावाहनम्—ॐ शुक्रज्ज्योतिश्चचित्रज्ज्योतिश्चसत्यज्ज्योतिश्च-ज्ज्योतिष्माँश्च॥ शुक्रश्चऽऋतपाश्चात्यꣳहाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः दक्षादिसप्तगणानामावाहयामि स्थापयामि।

दुर्गावाहनम्—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

विष्ण्वाहनम्—ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

स्वधावाहनम्—ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः-स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्त-पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

मृत्युरोगानावाहनम्—ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहिपन्थांयस्तेऽअन्यऽइतरोदेवयानात्॥ चक्षुष्मतेशृण्वतेतेब्रवीमिमानःप्रजाꣳरीरिषोमोतवीरान्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि।

गणपत्यवाहनम्—ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳहवा-महेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेवसोमम॥ आहमजानिगर्भधमात्त्वमजासिगर्भधम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

अपामावाहनम्—ॐ अप्स्वग्नेसधिष्टवसौषधीरनुरुध्यसे॥ गर्भेसञ्जायसेपुनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अपामावाहयामि स्थापयामि।

मरुतावाहनम्—ॐ मरुतोयस्यहिक्षयेपाथादिवोविमहसः॥ ससुगोपातमोजनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः मरुतामावाहयामि स्थापयामि।

पृथ्वीमावाहनम्—ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्मसप्रथाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।

गङ्गादिनद्यावाहनम्—ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्च-धासोदेशेभवत्सरित्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः गङ्गादीनावाहयामि स्थापयामि।

सप्तसागरावाहनम्—ॐ समुद्रोऽसिनभस्वानार्द्रदानुः॥ शम्भूर्मयोभूरभिमावाहि स्वाहा॥ मारुतोऽसिमरुतांगणः शम्भूर्मयोभूरभिमावाहिस्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि।

मेरुमावाहनम्—ॐ प्रपर्वतस्यवृषभस्यपृष्ठान्नावश्चरन्तिस्वसिचऽइयानाः॥ ताऽआ-ववृत्रन्नधरागुदक्ताअहिम्बुध्न्यमनुरीयमाणाः॥ विष्णोर्विक्रमणमसिविष्णोर्विक्रान्त-मसिविष्णोःक्रान्तमसि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः मेरुमावाहयामि स्थापयामि।

गदावाहनम्—ॐ गुणानान्त्वागुणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहे निधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोममआहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः गदामावाहयामि स्थापयामि।

त्रिशूलावाहनम्—ॐ त्रिꣳशद्धामव्विराजतिव्वाक्पतङ्गायधीयते॥ प्रतिवस्तोरहद्द्युभिः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।

वज्रावाहनम्—ॐ महाँ२॥इन्द्रोव्वज्रहस्तःषोडशीशर्म्मयच्छतु॥ हन्तुपाप्मानंय्योऽ-स्म्मान्द्वेष्ट्टि॥ उपयामगृहीतोऽसिमहेन्द्रायत्त्वैषतेयोनिर्म्महेन्द्रायत्वा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः वज्रमावाहयामि स्थापयामि।

शक्तिमावाहनम्—ॐ व्वसुचमेव्वसतिश्श्चमेकर्म्मचमेशक्तिश्श्चमेऽर्त्थश्श्चमएमश्श्च इत्याचमेगतिश्श्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।

दण्डावाहनम्—ॐ इडऽएह्यदितऽएहिकाम्याऽएत॥ मयिवःकामधरणंभूयात्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः दण्डमावाहयामि स्थापयामि।

खड्गावाहनम्—ॐ खड्गोवैश्श्वदेवःश्श्वाकृष्ष्णःकर्णोगर्हभस्तरक्षुस्तेरक्ष सामिन्द्रायसूकरःसिꣳहोमारुतःकृकलासःपिप्प्पकाशकुनिस्तेशरव्यायैविश्श्वेषांदेवानां पृषतः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः खड्गमावाहयामि स्थापयामि।

पाशावाहनम्—ॐ उदुत्तमंव्वरुणपाशमस्म्मदवाधमंव्विमध्यमꣳश्रथायअथाव्वयमा-दित्यव्व्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः पाशमावाहयामि स्थापयामि।

अङ्कुशावाहनम्—ॐ अꣳशुश्श्चमेरश्मिमश्श्चमेऽदाब्भ्यश्श्चमेऽधिपतिश्श्चमऽउपाꣳ-शुश्श्चमेऽन्तर्य्यामश्श्चमऽऐन्द्रवायवश्श्चमेमैत्रावरुणश्श्चमेऽआश्श्विनश्श्चमेप्प्रतिप्प्रस्थानश्श्च-मेशुक्क्रश्श्चमेमन्थीचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि।

गौतमावाहनम्—ॐ आयंगौःपृश्निरक्क्रमीदसदन्मातरंपुरः॥ पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः गौतममावाहयामि स्थापयामि।

भरद्वाजावाहनम्—ॐ अयंदक्षिणाव्विश्श्वकर्म्मातस्यमनोवैश्श्वकर्म्मणंग्ग्रीष्म्मोमानस-स्त्रिष्टुब्ग्रैष्म्मीत्रिष्टुभःस्वारꣳस्वारादन्तर्य्यामोऽन्तर्य्यामात्पञ्चदशःपञ्चदश हव्वरद्वाजऽ-ऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयामनोगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि।

विश्वामित्रावाहनम्—ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्यश्रोत्रꣳसौवꣳशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शारद्यनुष्टु-भऽऐडमैडान्मन्थीमन्थिनऽएकविꣳशऽएकविꣳशाद्वैराजंव्विश्श्वामित्त्रऽऋषिःप्प्रजापति-

गृहीतयात्त्वयाश्रोत्रंगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि।

कश्यपावाहनम्—ॐ त्र्यायुषंजमदग्ग्नेःकश्यपस्यत्र्यायुषम्॥ यद्देवेषुत्र्यायुषंतन्नो अस्तुत्र्यायुषम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः कश्यपमावाहयामि स्थापयामि।

जमदग्न्यावाहनम्—ॐ अयंपश्श्चाद्विश्श्वव्यचास्तस्यचक्षुर्वैश्श्वव्यचसंवर्षाश्श्चाक्षुष्यो जगतीवार्षीजगत्त्याऽऋक्स्समृक्स्समाच्छुक्रश्शुक्रात्सप्प्तदशस्सप्प्तदशाद्वैरूपंजमदग्ग्निर्ऋषिः-प्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाचक्षुर्ग्गृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।

वसिष्ठावाहनम्—ॐ अयंपुरोभुवस्तस्यप्प्राणोभौवनायनोर्वसन्तःप्प्राणयनोगायत्री-वासन्तीगायत्र्यैगायत्रंगायत्रादुपाᳬशुरुपाᳬशोस्त्रिवृत्त्रिवृतोरथान्तरंवसिष्ठऽऋषिःप्प्रजापति-गृहीतयात्वयाप्प्राणंगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

अत्र्यावाहनम्—ॐ अत्रपितरोमादयद्ध्वंय्यथाभागमावृषायद्ध्वम्॥ अमीमदन्तपितरो-य्यथाभागमावृषायिषत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।

अरुन्धत्यावाहनम्—ॐ तंपत्नीभिरनुगच्छेमदेवाःपुत्रैर्ब्भ्रातृभिरुतवाहिरण्ण्यैः॥ नाकं-गृब्भ्णानाःसुकृतस्यलोकेतृतीयेपृष्ठेऽअधिरोचनेदिवः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।

ऐन्द्र्यावाहनम्—ॐ अदित्यैरास्नासीन्द्राण्ण्याऽउष्ण्णीषः॥ पूषासिघर्म्मायदीष्व॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।

कौमार्यावाहनम्—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्य्यै नमः कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।

ब्राहम्यावाहनम्—ॐ इन्द्रायाहिधियेषितोविप्प्रजूतःसुतावतः॥ उपब्ब्रह्माणिवाग्घतः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।

वाराह्यावाहनम्—ॐ इन्द्रस्यक्क्रोडोऽअदित्यैपाजस्यंदिशांजत्रवोऽदित्यैभसज्जीमूता-न्हृदयौपशेनान्तरिक्षंपुरीततानभऽउदर्य्येणचक्रवाकौमतस्नाब्भ्यांदिवंवृक्काब्भ्यांगिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीह्नावल्मीकान्क्लोमभिर्ग्ग्लौभिर्ग्गुल्मान्हिराभिःस्रवन्तीर्हृदान्कुक्षिब्भ्याᳬ-समुद्रमुदरेणवैश्श्वानरंभस्मना॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।

चामुण्डाऽवाहनम्—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि।

वैष्णव्यावाहनम्—**ॐ आप्यायस्वसमैतुतेव्विश्श्वतः सोमवृष्ण्यम्॥ भवाव्वाजस्यसङ्गथे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।**

माहेश्वर्यावाहनम्—**ॐ यातेरुद्रशिवातनूरघोराऽपापकाशिनी॥ तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।**

वैनायक्यावाहनम्—**ॐ समक्ख्येदेव्व्याधियासन्दक्षिणयोरुचक्षसा॥ मामऽआयुः-प्प्रमोषीर्म्मोऽअहंतवव्वीरंव्विदेयतवदेविसन्दृशि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि।**

प्रतिष्ठा—आवाहन करने के बाद हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सर्वतोभद्रदेवतानां स्थापनमं परिपूर्णम्

सर्वतोभद्रदेवतानां पूजनम्

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि सर्वतोभद्रदेवतानां पूजनं करिष्ये।

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

भद्रं कल्याणकर्तृत्वं पारिषदं सर्वदेवाः।
मोदनार्थञ्च जीवानां मण्डलं परिकल्पितम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन-ध्यान कर समर्पित करे—

विचित्र-रत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
त्रिगुणात्मगृहाणेदं भगवान् भक्तवत्सल!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

त्रिगुणात्मन्नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यञ्च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

त्रिदेवञ्च नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

मन्दाकिन्यस्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

गङ्गोदकस्य यद्वारि सर्वं मलहरं परम्।
तदिदं समर्पितं देव पुनराचमनं शुभम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा-सिन्धु-कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण सुरपूजित॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान् अमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण सुरनायक!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देव अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥१॥
नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेबताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पुंगीफलएला-लवङ्गादिसहितताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्-गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे॥१॥

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥२॥

पूजनसमर्पणम्—दक्षिण हाथ में जल लेकर पूजनसमर्पण करे—

अनया पूजया सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताः प्रीयन्ताम्।

सर्वतोभद्रमण्डल के पूजन के बाद प्रधानदेवता का पूजन करे।

सर्वतोभद्रदेवतापूजनं परिपूर्णम्

प्रधानकलशस्थापनम्

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि प्रधानकलशस्थापनं करिष्ये।

भूमिस्पर्श—ॐ महीद्यौः पृथिवीचनऽइमंय्यज्ञंमिमिक्षताम्।। पिपृतानोभरीमभिः।।

सप्तधान्य बिखेरना—ॐ ओषधयः समवदन्तसोमेनसहराज्ञा।। यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि।।

कलशस्थापन—ॐ आजिघ्रकलशंमह्यात्वाविशन्त्विन्दवः।। पुनरूर्ज्जानिवर्तस्वसानः सहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः।।

कलश में जल भरना—ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसिवरुणस्यऽऋतसदनमसिवरुणस्यऽऋतसदनमासीद।

कलश में गन्ध डाले—ॐ त्वांगन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोषधे-सोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

कलश में सर्वौषधी डाले—ॐ याओषधीः पूर्वाजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगंपुरा।। मनैनु-बब्भ्रुणामहꣳशतंधामानि सप्त च।।

कलश में दूर्वा डाले—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषष्परि।। एवानोदूर्व्वे-प्प्रतनुसहस्रेण शतेन च।।

कलश में पञ्चपल्लव डाले—ॐ अश्वत्थेवोनिषदनंपर्ण्णेवोवसतिष्कृता।। गोभा-जऽइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्।।

कलश में कुश डाले—ॐ पवित्रेस्त्थोवैष्ष्णव्यौसवितुर्वः प्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्रेण पवित्रेणसूर्य्यस्यरश्मिभिः।। तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—**ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानः-शर्म्मसप्प्रथाः॥**

कलश में पूंगीफल डाले—**ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परिवाजपतिः कविरग्ग्निर्हव्यान्यक्रमीत्॥ दधद्रत्नानि दाशुषे॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमां अस्मैदेवायहविषाविधेम॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्ग्ने-विश्वरूपꣳ संव्ययस्वविभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पूर्ण्णादर्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ वस्नेवविक्रीणावहाऽइष-मूर्ज्जꣳशतक्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥**

वरुणध्यानावाहनपञ्चोपचारपूजन—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्भिः॥ अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्प्रमोषीः॥**

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सवाहनं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि। ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—दक्षिण हाथ के स्पर्श से आवाहन करे—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनीगोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥
कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापीगोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयन्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

ॐ ह्रीँ वँ गङ्गादिभ्यः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंयज्ञ९समिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोऽम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

कलश-प्रार्थना—दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना करे—

ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव॥४॥
सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥
पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥
नमः आद्याय बीजाय ज्ञानविज्ञानमूर्तये।
प्राणेन्द्रियमनोबुद्धिर्विकारैर्व्यक्तिमीयुषे ॥८॥

प्रधानकलशस्थापनं परिपूर्णम्

❁

पीठदेवतास्थापनंपूजनञ्च

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि स्वर्णाकर्षणभैरवप्रीतये पीठ-देवतानां स्थापनं पूजनं करिष्ये।

ॐ ह्रीँ वँ मण्डूकाय नमः मण्डूकशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ कालाग्निरुद्राय नमः कालाग्निरुद्रशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ कच्छपाय नमः कच्छपशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ आधारशक्तये नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ प्रकृतये नमः प्रकृतिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ कूर्माय नमः कूर्मशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनन्ताय नमः अनन्तशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ पृथिव्यै नमः पृथ्वीशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षीरसमुद्राय नमः क्षीरसमुद्रशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ रत्नद्वीपाय नमः रत्नद्वीपशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ कल्पवृक्षाय नमः कल्पवृक्षशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ मणिमण्डपाय नमः मणिमण्डपशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ स्वर्णसिंहासनाय नमः स्वर्णसिंहासनशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ धर्माय नमः धर्मशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ ज्ञानाय नमः ज्ञानशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वैराग्नाय नमः वैराग्नशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऐश्वर्याय नमः ऐश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अधर्माय नमः अधर्मशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अज्ञानाय नमः अज्ञानशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अवैराग्नाय नमः अवैराग्नशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनैश्वर्याय नमः अनैश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ कल्पान्तकारायानन्ताय नमः कल्पान्तकारायअनन्तशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ पद्माय नमः पद्मशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ आनन्दकन्दाय नमः आनन्दकन्दशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ संविन्नालाय नमः संविन्नालशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ विकारमयकेशरेभ्यो नमः विकारमयकेशरशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः प्रकृत्यात्मकपत्रशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः पञ्चाशद्वर्णकर्णिकाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

पीठशक्तिनां पूजनम्

ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ आधार शक्तिभ्यो नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ जयाशक्तिभ्यो नमः जयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ विजयाशक्तिभ्यो नमः विजयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ अजिताशक्तिभ्यो नमः अजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ अपराजिताशक्तिभ्यो नमः अपराजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ नित्याशक्तिभ्यो नमः नित्याशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ विलासिनीशक्तिभ्यो नमः विलासिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ दोग्ध्राशक्तिभ्योनमः दोग्ध्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ अघोराशक्तिभ्यो नमः अघोराशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ मङ्गलाशक्तिभ्यो नमः मङ्गलाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ वटुकभैरवयोगपीठात्मने नमः वटुकभैरवश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्।
शूलं कपालं दधतीं कराब्जैः रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्॥१॥

रक्त के समुद्र में पोत के सदृश अरुण वर्ण के पद्म पर आसीन हाथ में पाश-अंकुश-धनुष-खड्ग-बाण-शूल-कपाल से शोभायमान, रक्तवर्ण तथा तीन नेत्रोंवाली प्राणदेवी को प्रणाम॥१॥

पाशाश्चापासृक्क्कपाले ऋणीषूच्छूलं हस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्यायेत्प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥२॥

हाथों में पाशचापसृक्कपालशूल धारण किये हुए रक्त वर्णवाली रक्तवर्ण के कमल के आसन पर बैठी हुई प्राणशक्ति का ध्यान करता हूँ॥२॥

मानसोपचार पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वशक्तिकमलासनाय नमः कमलासनशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

पीठदेवतापूजनं परिपूर्णम्

❁

अग्न्युत्तारणम्

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि स्वर्णाकर्षणभैरवसुवर्णमूर्तेः अवघातादि दोषपरिहारार्थं अग्न्युत्तारणं करिष्ये।

गणेश की सुवर्णमयी प्रतिमा बना करके उसे अग्नि में तपा कर घृत लेपन करके उस पर अधोलिखित मन्त्रपाठ पूर्वक जल धारा गिराये।

ॐ समुद्रस्यत्त्वावकयाग्नेपरिव्ययामसि॥ पावकोऽअस्मभ्यंशिवोभव॥ ॐ हिमस्यत्वाजरायुणाग्नेपरिव्ययामसि॥ पावकोअस्मभ्यंशिवोभव॥ ॐ उपज्मनुप वेतसेऽवतरनदीष्वा॥ अग्नेपित्तमपामसिमण्डूकिताभिरागहि सेमंनोयज्ञंपावकवर्णंशिवंकृधि॥ ॐ अपामिदंन्ययनंसमुद्रस्यनिवेशनम्॥ अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मभ्यंशिवोभव॥ ॐ अग्नेपावकरोचिषामन्द्रयादेवजिह्वया॥ आदेवा न्वक्षियक्षिच॥ ॐ सनःपावकदीदिवोऽग्नेदेवाँ२॥ऽइहावह॥ उपयज्ञंहविश्चनः॥ ॐ पावकयायश्चितयन्त्याकृपाक्षामन्रुरुचऽउषसोनभानुना॥ तूर्वन्नयामन्नेतशस्यनूरणऽ आयोघणेनततृषाणोऽअजरः॥ ॐ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्चिषे॥ अन्यांस्तेऽ अस्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽअस्मभ्यंशिवोभव॥ ॐ नृषदेवेडप्सुषदेवेड्बर्हिषदेवेड्वन-सदेवेट्स्वर्विदेवेट्॥ ॐ येदेवादेवानांय्यज्ञियायज्ञियानाᳬंसंवत्सरीणमुपभागमासते॥ अहुतादोहविषोयज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयंपिबन्तुमधुनोघृतस्य॥ ॐ येदेवादेवेष्वधिदेवत्व-मायन्येब्रह्मणःपुरऽएतारोऽअस्य॥ येभ्योनऋतेपवतेधामकिञ्चननतेदिवोनऽपृथिव्याऽ-अधिस्नुषु॥ ॐ प्राणदाऽअपानदाव्यानदावर्चोदावरिवोदाः॥ अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु-हेतयपावकोऽअस्मभ्यंशिवोभव॥

अग्न्युत्तरण के पश्चात् बीज मन्त्र से प्राणप्रतिष्ठा करे।

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंसः अस्यस्वर्णाकर्षणभैरवस्यसुवर्णप्रतिमायां प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंसः अस्यस्वर्णाकर्षणभैरवस्यसुवर्ण-प्रतिमायां जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंसः अस्यस्वर्णाकर्षणभैरवस्यसुवर्णप्रतिमायां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य्बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्ट्टंय्यज्ञᳬसमिमन्दधातु॥
व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमद्बटुकभैरवाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमद्बटुकभैरवाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अग्न्युत्तारणं परिपूर्णम्

इष्टपूजनम्

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि स्वर्णाकर्षणभैरवपूजनं करिष्ये।

विनियोगः—ॐ अस्य श्री स्वर्णाकर्षणभैरवमहामन्त्रस्य ब्रह्मात्रृषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, ब्रह्मविष्णुरुद्रत्रिमुर्तिरूपी भगवानस्वर्णाकर्षणभैरवोदेवता, ह्रींबीजं, सः शक्तिः, वँकीलकं ममसर्वविधसमस्तदारिद्र्य सद्यःविनाशपूर्वकसमस्तसमृद्धि प्राप्तये न्यासे पूजने जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ त्रिष्टुब्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ त्रिमूर्तिरूपीभगवान श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवदेवताभ्यो नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि।

ॐ सः शक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि।

ॐ वँ कीलकाय नमः नभौ न्यस्यामि।

ॐ श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवाय नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ अजामलबद्धाय नमः तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ लोकेश्वराय नमः मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ स्वर्णाकर्षणभैरवाय नमः अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ममदारिद्र्यविद्वेषणाय नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ श्रीमहाभैरवाय नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय नमः हृदयाय नमः।

ॐ अजामलबद्धाय नमः शिरसे स्वाहा।

ॐ लोकेश्वराय नमः शिखायै वषट्।

ॐ स्वर्णाकर्षणभैरवाय नमः कवचाय हुम्।

ॐ ममदारिद्र्यविद्वेषणाय नमः नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ श्रीमहाभैरवाय नमः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ नमस्तेरुद्रमुन्यवऽउतोतऽअषवे नमः॥ बाहुब्भ्यामुतते नमः॥

ॐ पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम्।
अक्षयं स्वर्णमाणिक्य तडित्पूरित पात्रकम्॥१॥
अभिलसन्महाशूलं चामरं तोमरोद्वहन।
सततं चिन्तयेद्देवं भैरवं सर्वसिद्धिदम्॥२॥
मन्दारद्रुम कल्पमूलमहिते माणिक्यसिंहासने।
संविष्टोदरभिन्नचम्पकरुचादेव्या समालिङ्गिता॥३॥
भक्तेभ्यः कररत्नपात्रभरितं स्वर्णंदधानोभृषम्।
स्वर्णाकर्षणभैरवो विजयते स्वर्णाकृतिः सर्वदा॥४॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः ध्यायामि ध्यानोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ध्यान करके पुष्प चढ़ाये।

आवाहनम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर आवाहन करे—(प्रतिष्ठित मूर्ति या यन्त्र पर आवाहन नहीं होता है।)

ॐ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी॥ तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः आवाहयामि आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि। ध्यान कर पुष्प चढ़ाये।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳसीःपुरुषञ्जगत्॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः आसनं समर्पयामि, आसनार्थे अक्षतान् निवेदयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शिवेनवचसात्वागिरिशाच्छावदामसि॥ यथानःसर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमनाऽसत्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

गन्ध, उसीर, गोरोचन, श्यामक, विष्णुकान्ता, कमल एवं दुर्वा युक्त जल अनामिका अङ्गुष्ठ मिलाकर गणपति के युगलचरणों मे समर्पित करे।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्प्रथमोदैव्योभिषक्॥ अहींश्च्चुंसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वांश्च्च-यातुधान्न्योधराचीः परासुव॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि। हाथ में अर्घ्य प्रदान करे।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः॥ येचैनꣳ रुद्राऽअभितोदिक्क्षु-श्श्रिताः सहस्रशोवैषाꣳ हेडऽईमहे॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः मुखे आचमनीयं समर्पयामि। हीनोन्नत समस्ताङ्गुलियों से आचमन मुद्रा के द्वारा चन्दन, पुष्प, जाती, कर्पूर, कंकोल, लवङ्ग चूर्ण जल में मिलाकर मुख में आचमन निवेदन करे।

मधुपर्कम्—दोनों हाथ से मधुपर्कपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधुश्श्चमाधवश्श्चवासन्तिकावृतूऽअग्ग्नेरन्तः श्लेषोसिकल्प्पेतान्द्यावापृथिवी-कल्प्पन्तामापऽओषधयः कल्प्पन्तामग्ग्नयः पृथङ्ममज्ज्यैष्ठ्यायसव्व्रताः॥ येऽअग्ग्नयः-समनसोन्तराद्यावापृथिवीऽइमे॥ वासन्तिकावृतूऽअभिकल्प्पमानाऽइन्द्रमिवदेवाऽअभिसं-विशन्तुतयादेवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवेसीदतम्॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्य-विद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ असौयोवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोविलोहितः॥ उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः-सदृष्ट्टोमृडयातिनः॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

प्रदास्यामि सुरेशान पुनराचमनीयकम्।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः स्नानाङ्गाचमनीयं जलं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्रदिशःसन्तु-मह्यम्॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूᳬंषितारिषत्॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधुवाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः॥ मधुनक्त-मुतोषसोमधुमत्पार्थिवᳬंरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोवनस्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु-सूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्गावो भवन्तुनः॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अपाᳬंरसमुद्वयसᳬंसूर्य्येसन्तᳬंसमाहितम्॥ अपाᳬंरसस्ययोरसस्तंवोगृह्णा-म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि।

गुड़ोदकस्नानम्—दोनों हाथ से गुड़ोदकपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शमितानोवनस्प्पतिः सविताप्प्रसुवन्भर्गम्॥ ककुप्छन्दऽइहेन्द्रियंवशाव्वेहदद्वयो-दधृ॑ं॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः गुड़ोदक स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पञ्चनद्द्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः मिलित-पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

गन्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से गन्धोदकपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गन्धर्वस्त्त्वाविश्श्वावसुः परिदधातुविश्श्वष्ष्यैयजमानस्यपरिधिरस्यग्निरिडऽईडितः॥ मित्रावरुणौत्त्वोत्तरतः परिधत्त्ताद्ध्रुवेणधर्म्मणाविश्श्वस्यारिष्ष्ट्यैयजमानस्यपरिधि-रस्यग्निरिडऽईडितः॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय पशुपतयेकर्ण्णायामाऽअविलिप्तारौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्न्याः॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ आपोदेवीर्बृहतीर्विश्श्वशम्भुवोद्यावापृथिवीऽउरोऽअन्तरिक्ष॥ बृहस्प्पतयेहविषा-विधेमस्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः पुनराचमनार्थे जलं समर्पयामि।

महाभिषेकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर रुद्रसूक्त पाठपूर्वक महाभिषेक समर्पित करे—

हरिः ॐ नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः॥ १॥ यातेरुद्र-शिवातनूरघोरापापकाशिनी॥ तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ २॥ यामि-षुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिंसीः पुरुषञ्जगत्॥ ३॥ शिवेन-

वर्चसात्त्वागिरिशाच्छावदामसि॥ यथानःसर्वमिज्जगयक्ष्मꣳसुमनाऽसत्॥४॥ अद्ध्यवो-चदधिवक्ताप्प्रथमोदैव्व्योभिषक्॥ अहींश्चसर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्चयातुधान्योधराचीः-परासुव॥५॥ असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुःसुमङ्गलः॥ येचैनꣳरुद्राऽअभितोदिक्क्षु-श्श्रिताःसहस्रशोवैषाꣳहेडऽईमहे॥६॥ असौयोवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोविलोहितः॥ उतैनङ्गो-पाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यःसदृष्टोमृडयातिनः॥७॥ नमोस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्क्षाय-मीढुषे॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानोहन्तेब्भ्योकरन्नमः॥८॥ प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्-ज्ज्याम्॥ याश्श्चतेहस्तऽइषवःपराताभगवोवप॥९॥ विज्ज्यन्धनुःकपर्द्दिनोविशल्ल्यो-बाणवाँ२॥ऽउत॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः॥१०॥ यातेहेति-र्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः॥ तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिभुज॥११॥ परितेधन्न्व-नोहेतिरस्म्मान्वृमक्त्तुविश्श्वतः॥ अथोयऽइषुधिस्तवारेऽअस्म्मन्निधेहितम्॥१२॥ अवतत्त्यधनुष्ट्वꣳसहस्राक्क्षशतेषुधे॥ निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखाशिवोनःसुमनाभव॥१३॥ नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे॥ उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुब्भ्यान्तवधन्न्वने॥१४॥ मानोमहान्तमुतमानोऽअर्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्॥ मानोवधीः-पितरम्मोतमातरम्मानःप्प्रियास्तन्न्वोरुद्ररीरिषः॥१५॥ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषि-मानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः॥ मानोवीरान्नुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तःसदमित्त्वा-हवामहे॥१६॥ ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं श्रीमद्वटुकभैरवाय नमः महाभिषेकस्नानं समर्पयामि

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ नमोस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्क्षायमीढुषे॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानोहन्तेब्भ्यो करन्नमः॥ ॐ ऐँ ह्रीं क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः युगलवस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीय जलम्—दोनों हाथ से वस्त्राङ्गाचमनीयजल लेकर समर्पित करे—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः वस्त्राङ्गाचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्ज्याम्॥ याश्श्चतेहस्तऽइषवःपराताभगवोवप॥ ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्ग्नेविश्श्वरूपꣳसंव्ययस्व-विभावसो॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः उत्तरीयं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीय जलम्—दोनों हाथ से जल लेकर समर्पित करे—

ॐ योवं॑ःशि॒वत॑मो॒रस॒स्तस्य॑भाजयते॒हनं॑ः॥ उ॒श॒तीरि॑वमा॒तरं॑ः॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ विज्ज्य॒न्धनुं॑ःकप॒र्द्दिनो॒विश॑ल्ल्यो॒बाण॑वाँ२॥ऽउ॒त॥ अने॑शन्नस्य॒याऽइष॑वऽइष॑वऽ आ॒भुर॑स्यनिषङ्ग॒धिः॥ ॐ य॒ज्ञोदे॒वाना॒म्प्र॒त्त्ये॑तिसु॒म्म्नमादि॑त्त्यासो॒भव॑तामृडुयन्तं॑ः॥ आवो॒र्वाची॑सुम॒तिर्व॑वृत्त्यादं॒हो॒श्चि॒द्याव॑रिवो॒वित्त॒रासं॑दादि॒त्त्येभ्य॑स्त्त्वा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीय जलम्—दोनों हाथ से आचमनीयजल लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मा॒ऽअरं॑ङ्गमामवो॒यस्य॒क्षया॑यजिन्न्व॑थ॥ आपो॑ज॒नय॑था च नः॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः यज्ञोपवीताङ्गा-चमनीयं समर्पयामि।

आभूषणसमर्पणम्—दोनों हाथ से आभूषणादि लेकर समर्पित करे—

ॐ काम॑ङ्कामदु॒घेधु॑क्ष्वमि॒त्राय॒वरु॑णायच॥ इन्न्द्रा॑या॒श्श्विभ्या॑म्पू॒ष्णेप्र॒जाभ्य॒ऽ-ओष॑धीभ्यः॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः आभूषणार्थे अक्षातान् समर्पयामि।

चन्दनसमर्पणम्—दोनों हाथ से चन्दन लेकर समर्पित करे—

ॐ त्वाङ्ग॑न्ध॒र्वाऽअ॑खनँ॒स्त्वामिन्न्द्र॒स्त्वाम्बृह॒स्पतिः॑॥ त्वामो॑षधेसोमो॒राजा॒विद्वान्न्यक्ष्मा॑ दमुच्च्यत॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

हरिद्रासमर्पणम्—दोनों हाथ से हरिद्रा लेकर समर्पित करे—

ॐ हिं॑रण्ण्यरूपा॒ऽउ॒षसो॑वि॒रो॒कऽउ॒भावि॑न्द्रा॒ऽदिथः॒सूर्य॑श्श्च॥ आरो॑हतंवरुणमित्र-गर्त॒ततं॑श्श्चक्षाथा॒मदि॑तिं॒दितिं॑चमि॒त्रो॒ऽसि॒वरु॑णोऽसि॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्य-विद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः हरिद्राभरणं समर्पयामि।

कज्जलसमर्पणम्—दोनों हाथ से कज्जल लेकर समर्पित करे—

ॐ कृष्णोंऽस्याखरेष्ठोऽग्नयेत्त्वाजुष्टम्प्रोक्षामिवेदिरसिबर्हिषेत्त्वाजुष्टाम्प्रोक्षामिबर्हिरसिस्रुग्भ्यस्त्वाजुष्टम्प्रोक्षाम्यदित्त्यैव्युन्दनम्॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः कज्जलाभरणं समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियः पतयन्तियह्वाः॥ घृतस्यधाराऽअरुषोनव्वाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत॥ अस्तोषतस्वभानवोविप्प्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

ताडपत्रसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताडपत्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अश्श्वत्थेवोनिषदनम्पण्णेवोव्वसतिष्कृता॥ गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः ताडपत्रं परिधापयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोदद्ध्वम्पुष्प्पवतीः प्प्रसूवरीः॥ अश्श्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

पुष्पसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ ओषधयः प्प्रतिगृब्भ्णीतपुष्प्पवतीः सुपिप्पलाः॥ अयंव्वोगब्भऽऋत्त्वियः प्प्रत्नः सधस्त्थमासदत्॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः पुष्पं समर्पयामि।

शमीपत्रसमर्पणम्—दोनों हाथ से शमीपत्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽइवसजित्त्वरीर्वीरुधः पारयिष्ष्णवः॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः शमीपत्रं समर्पयामि।

मन्दारपुष्पसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ मद्धर्यायज्ञन्नक्षसेप्प्रीणानोनराशंसोऽअग्ने॥ सुकृद्देवः सविताविश्श्ववारः॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः मन्दारपुष्पं समर्पयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषस्प्परि॥ एवानोदूर्वेप्रतनुसहस्रेणशतेनच॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ अहिरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिम्परिबाधमानः॥ हस्तघ्नोविश्श्वावयुनानि विद्द्वान्पुमान्पुमांसंपरिपातुविश्वतः॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्य-विद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धोरिवप्राद्ध्वनेशूघनासोवातप्रमियः पतयन्तियह्वाः॥ घृतस्यधाराऽअरुषो नवाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्य-विद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण के पश्चात् देवता के सम्मुख नैवेद्य स्थापन कर धूप तथा घृतदीप प्रज्वलित कर सर्वप्रथम धूप निवेदन कर दीप निवेदन करे।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ यातेहेतिम्मीढुष्टमहस्तेबभूवते धनुः॥ तयास्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मयापरि भुज॥ ॐ धूरसिधूर्वधूर्वन्तंधूर्वतंयोऽस्मान्धूर्वतितंधूर्वयंवयंधूर्वामः॥ देवानामसिवह्नितमः

सस्निंतमुंपप्रितमुंजुष्टुंतमंदेवहूतमम्॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः धूपमाघ्रापयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ परिंतेधन्व्वंनोहेतिरस्म्मान्न्वृमक्तुविश्श्वतः॥ अथोयऽइषुधिस्त्तवारेऽअस्म्मन्निधेंहितम्॥ ॐ अग्ग्रिज्ज्योतिज्ज्योंतिरग्ग्रिः स्वाहासूर्य्योज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा॥ अग्ग्रिर्व्वर्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा॥ ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अवतत्त्यधनुष्ट्वः सहस्स्राक्क्षशतेषुधे॥ निशीर्य्यंशल्ल्यानाम्मुखाशिवोनः सुमना भव॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यंशुष्मिणः॥ प्रप्रंदातारंतारिषऊर्ज्जन्नोधेहि द्विपदेचतुष्पदे॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।

पानीयंजलंसमर्पणम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थोव्वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसि-व्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्य-विद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

उत्तरापोशनसमर्पणम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ व्वसवस्त्रयोदशाक्षरेणत्रयोदशꣳस्त्तेममुदजयँस्त्तमुज्जैषꣳ रुद्राश्श्चतुर्द्दशाक्षरेण-चतुर्द्दशꣳस्त्तोममुदजयँस्त्तमुज्जेषमदितिꣳ सप्तदशाक्षरेणसप्तदशꣳस्त्तञ्जुषस्वस्वाहाग्ग्रि-नेत्रेब्भ्योदेवेब्भ्यः पुरःꣳ सद्भ्यꣳ स्वाहायमनेत्रेब्भ्योदेवेब्भ्योदक्षिणासद्भ्यꣳ स्वाहाव्विश्श्व-देवनेत्रेब्भ्योवादेवेब्भ्यऽउत्तरासद्भ्यꣳ स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्य-विद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ अꣳशुनातेअꣳशुः पृच्च्यतांपरुषापरुः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽअच्च्युतः॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ नमस्त्तऽआयुधायानाततायधृष्ण्णवे॥ उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुब्भ्यान्त्तवधन्न्वने॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिनागवल्लिदलसहितताम्बूलवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वꣳहसः॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

विभिन्नदानादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से विभिन्नपदार्थ लेकर समर्पित करे—

ॐ देवोदेवानाम्भिषजाहोतारावन्द्रमश्श्विना॥ वषट्कारैꣳसरस्वतीत्त्विषिन्नहृदये-मतिꣳहोतृब्भ्यान्दधुरिन्द्रियंव्वसुधेयस्यव्यन्तुयज॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्य-त्रविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः पूजाफलसमृद्ध्यर्थे विभिन्नद्रव्यदानं समर्पयामि।

अङ्गार्चनसमर्पणम्—दोनों हाथ से गन्धाक्षतपुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ अङ्गान्न्यात्मन्न्भिषजातदश्श्विनात्मानमङ्गैःसमधात्त्सरस्वती॥ इन्द्रस्यरूपꣳशत-मानमायुश्श्चन्द्रेणज्ज्योतिरमृतन्दधानाः॥

नमश्चन्द्रप्रकाशाय चन्द्ररूप नमो नमः।
नमो रश्मिस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥
नम आनन्दरूपाय जयानन्दस्वरूपिणे।
नमो द्रविणरूपाय भैरवाय नमो नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असिताङ्गभैरवाय नमः पादौ पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः रुरुभैरवाय नमः उरुं पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः चण्डभैरवाय नमः नाभिं पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्रोधभैरवाय नमः उदरं पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः उन्मत्तभैरवाय नमः हृदये पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कपालभैरवाय नमः स्कन्धौ पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणभैरवाय नमः मुखे पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः संहारभैरवाय नमः शिरसि पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वर्णाकर्षणमहाभैरवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधारपृथिवीद्या मुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम्॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ आरात्रिपार्थिवंरजः पितुरप्प्रायिधामभिः॥ दिवः सदांसिबृहतीवितिष्ठसऽआत्त्वेषंवर्त्ततेतमः॥ ॐ इदꣳ हविः प्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳ सर्वगणꣳस्वस्तये॥ आत्मसनिप्प्रजासनिपशुसनिलोकसन्यभयसनि॥ अग्निः प्प्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नंपयोरेतोऽअस्मासुधत्त॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः नीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः॥ मानोंवीरान्रुद्रभामिनोंवधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ मानोंमहान्तमुतमानोंऽअर्भकम्मानऽउक्क्षन्तमुतमानऽउक्षितम्॥ मानोंवधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

साष्टाङ्गनमस्कारसमर्पणम्—दोनों हाथ में पुष्प लेकर प्रणाम कर समर्पित करे—

ॐ नमोस्तुनीलग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानोहन्तेभ्योंकरन्नमः॥ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः साष्टाङ्ग नमस्कारान् समर्पयामि।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथ में विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

ॐ विश्श्वोदेवस्यनेतुर्म्मर्त्तोवुरीतसुक्ख्यम्॥ विश्श्वोरायऽइषद्ध्यतिद्द्युम्म्नंवीरयस्वसु-अग्ग्निश्श्वोदर्क्करिष्ष्यथं॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना—दोनों हाथ से पुष्प लेकर प्रार्थना करके समर्पित करे—

ॐ नमःशम्भुवायचमयोभुवायचनमःशङ्कुरायचमयस्क्करायचनमःशिवायच-शिवतरायच॥

नमः संसारबन्धाय बन्धकाय नमो नमः।
नमो विमोक्षरूपाय मोक्षदाय नमो नमः॥
नमो विष्णुस्वरूपाय व्यापकाय नमो नमः।
नमो मङ्गलनाथाय मङ्गलदायिने नमः॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से जल लेकर पूजन समर्पित करे—

अनेन पूजनेन श्रीमद्बटुकभैरवः प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलि प्रदान कर सहस्रनामों द्वारा पुष्पादिकों से अर्चन करे।

प्रधानदेवतापूजनं परिपूर्णम्

मूलमन्त्रजपम्

मूलमन्त्रजपसंस्कारम्—जप के पूर्व मन्त्र का संस्कार करे—

प्राणायामः—मूलमन्त्र से पूरक कुम्भक रेचन पूर्वक प्राणायाम करे।

मन्त्रकुल्लुका—ॐ क्रीँ हूँ स्त्रीँ ह्रीँ ह्रीँ फट्। सिर पर दस बार जप करे।

मन्त्रसेतुः—ॐ। ॐकार का हृदय पर दस बार न्यास करे।

मन्त्रमहासेतुः—क्रीँ। बीज का कण्ठस्थित विशुद्धचक्र पर दश बार न्यास करे।

मन्त्रनिर्वाणः—ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ। दस बार सिर पर न्यास करे।

मुखशोधनम्—क्रीं क्रीँ क्रीँ ॐ क्रीँ क्रीँ क्रीँ। दस बार वाचिक जप करे।

प्राणयोगः—ह्रीँ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामल-बद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः। श्वास प्रश्वास के साथ दस बार जप करे।

उद्दीपनम्—ॐ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामल-बद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः ॐ। मन्त्र को ॐ से सम्पुटित करके हृदय पर दस बार जप करे।

मालाप्रार्थना—दोनों हाथ में माला ग्रहण करके प्रार्थना करे—

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥१॥
ॐ अविघ्नं कुरु मालेत्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अक्षमालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

मूलमन्त्रम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः।**

जप के पश्चात माला को सिर पर रखकर माला की प्रार्थना पूर्वक विसर्जन करे।

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यं च सर्वदा॥

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः सिद्धयै नमः। पुनः पूजन कर मालाधार पर माला को स्थापित करे।

जपसमर्पणम्—अनेन जपाख्येन श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवः प्रीयन्तां न मम।

स्वर्णाकर्षणभैरवस्तोत्रम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवमहास्तोत्रस्य ब्रह्माऋषिः, त्रिष्टुप्-छन्दः, ब्रह्मविष्णुरुद्रत्रिमुर्तिरूपीभगवानस्वर्णाकर्षण भैरवोदेवता, ह्रीँबीजं, क्लीँ-शक्तिः, सःकीलकं ममसमस्तदारिद्र्यविनाशपूर्वक समस्तकामनासिद्धयर्थे न्यासे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः ब्रह्माऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः स्वर्णाकर्षणभैरवोपरमात्मादेवतायै नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः ह्रीँ बीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः क्लीँ शक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः सः कीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः श्रीभैरवाय नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः ह्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः ह्रैँ अनामिकाभ्यां नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः ह्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ह्रीँ क्लीँ सः ह्राँ हृदयाय नमः।

ॐ ह्रीं क्लीं सः ह्रीं शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्रीं क्लीं सः ह्रूं शिखायै वषट्।

ॐ ह्रीं क्लीं सः ह्रैं कवचाय हुम्।

ॐ ह्रीं क्लीं सः ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ह्रीं क्लीं सः ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—हाथों में पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ पारिजाताद्भुतकान्तिः स्थिते माणिक्यमण्डपे।
सिंहासनगतं वन्दे भैरवं स्वर्णदायकम्॥
गाङ्गेयपात्रं डमरुत्रिशूलं वरंकरैः सन्दधतं त्रिनेत्रम्।
देव्यायुतंतप्तसुवर्णवर्ण स्वर्णाकृषं भैरवमाश्रयामि॥

ध्यान करने के बाद कमण्डलु-डमरु-वर और अभय मुद्राओं का प्रदर्शन करे।

मुद्राप्रदर्शनम्

कमण्डलुमुद्रालक्षम्—हाथ से कमण्डलु मुद्रा बनाये—

करद्वयं यथा शुभ्रुः कुण्डाकारं भवेत्तदा।
कमण्डलु महामुद्रा कथिता पूर्वसूरिभिः॥

डमरुमुद्रालक्षम्—हाथ से डमरु मुद्रा बनाये—

बद्धमुष्ठि कृतंहस्तं चालयेत्स्वयमेव च।
डमरुमुद्रा विख्याता दुष्टानां भयकारिणी॥

त्रिशूलमुद्रालक्षणम्—हाथ से त्रिशूल मुद्रा बनाये—

अङ्गुष्ठेकनिष्ठान्तु बद्धाशिलष्टाङ्गुलित्रयम्।
प्रसारयेच्च त्रिशूलाख्या मुद्रैषा परिकीर्तिता॥

वरमुद्रालक्षणम्—हाथ से वर मुद्रा बनाये—

उर्ध्वं प्रसारितं हस्तं आशीर्वादात्मकं तथा।
मुद्रावरद विख्याता भक्तानां सिद्धि दायिनी॥

मुद्राओं के प्रर्दशन के बाद मूल स्वर्णाकर्षणभैरवस्तोत्र का पाठ करे।

ध्यान—हाथों में पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम्।
अक्षयं स्वर्णमाणिक्य तडित्पूरित पात्रकम्॥१॥
अभिलसन्महाशूलं चामरं तोमरोद्वहन।
सततं चिन्तयेद्देवं भैरवं सर्वसिद्धिदम्॥२॥

मन्दारद्रुम कल्पमूलमहिते माणिक्यसिंहासने।
संविष्टोदरभिन्नचम्पकरुचादेव्या समालिङ्गिता॥३॥
भक्तेभ्यः कररत्नपात्रभरितं स्वर्णंदधानोभृषम्।
स्वर्णाकर्षणभैरवो विजयते स्वर्णाकृतिः सर्वदा॥४॥

स्तोत्रम्

ॐ नमस्तेभैरवाय ब्रह्मविष्णुशिवात्मने।
नमस्त्रैलोक्यवन्द्याय वरदाय वरात्मने॥१॥
रत्नसिंहासनस्थाय दिव्याभरणशोभिने।
दिव्यमाल्यविभूषाय नमस्तेदिव्यमूर्तये॥२॥
नमस्तेऽनेकहस्ताय अनेकशिरसे नमः।
नमस्तेऽनेकनेत्राय अनेकविभवे नमः॥३॥
नमस्तेऽनेककण्ठाय अनेकांसाय ते नमः।
नमस्तेऽनेकपार्श्वाय नमस्तेदिव्यतेजसे॥४॥
अनेकायुधयुक्ताय अनेकसुरसेविने।
अनेकगुणयुक्ताय त्रिलोकेशाय ते नमः॥५॥
नमो दारिद्र्यकालाय महासम्पत्प्रदायिने।
श्रीभैरवीसंयुक्ताय त्रिलोकेशाय ते नमः॥६॥
दिगम्बरनमस्तुभ्यं दिव्याङ्गाय नमो नमः।
नमोऽस्तुदैत्यकालाय पापकालाय ते नमः॥७॥
सर्वज्ञाय नमस्तुभ्यं नमस्ते दिव्यतेजसे।
अजिताय नमस्तुभ्यं जितामित्राय ते नमः॥८॥
नमस्ते रुद्ररूपाय महावीराय ते नमः।
नमऽस्त्वनन्तवीर्याय महाघोराय ते नमः॥९॥
नमस्ते घोरघोराय विश्वघोराय ते नमः।
नमउग्रायशान्ताय भक्तानां शान्तिदायिने॥१०॥
गुरवे सर्वलोकानां नमः प्रणवरूपिणे।
नमस्तेवाग्भवाख्याय दीर्घकामाय ते नमः॥११॥
नमस्ते कामराजाय योषित्कामाय ते नमः।
दीर्घमायास्वरूपाय महामायाय ते नमः॥१२॥
सृष्टिमायास्वरूपाय विसर्गसमयाय ते।
सुरलोकसुपूज्याय आपदुद्धारणाय च॥१३॥

नमो नमः भैरवाय महादारिद्र्यनासिने।
उन्मूलनेकर्मठाय अलक्ष्याः सर्वदा नमः॥१४॥
नमो अजामलबद्धाय नमो लोकेश्वराय ते।
स्वर्णाकर्षणशीलाय भैरवाय नमो नमः॥१५॥
मम दारिद्र्यविद्वेषणाय लक्ष्याय ते नमः।
नमो लोकत्रयेशाय स्वानन्दनिहिताय ते॥१६॥
नमः श्रीबीजरूपाय सर्वकामप्रदायिने।
नमो महाभैरवाय श्रीभैरवनमो नमः॥१७॥
धनाध्यक्षनमस्तुभ्यं शरण्याय नमो नमः।
नमः प्रसन्नरूपाय आदिदेवाय ते नमः॥१८॥
नमस्ते मन्त्ररूपाय नमस्ते रत्नरूपिणे।
नमस्ते स्वर्णरूपाय सुवर्णाय नमो नमः॥१९॥
नमः सुवर्णवर्णाय महापुण्याय ते नमः।
नमः शुद्धायबुद्धाय नमः संसारतारिणे॥२०॥
नमो देवाय गुह्याय प्रचलाय नमो नमः।
नमस्ते बालरूपाय परेषां बलनासिने॥२१॥
नमस्ते स्वर्णसन्स्थाय नमो भूतलवासिने।
नमः पातालवासाय अनाधाराय ते नमः॥२२॥
नमो नमस्ते शान्ताय अनन्ताय नमो नमः।
द्विभुजाय नमस्तुभ्यं भुजत्रयसुशोभिने॥२३॥
नमोऽणिमादिसिद्धाय स्वर्णहस्ताय ते नमः।
पूर्णचन्द्रप्रतिकाशवदनाम्भोजशोभिने ॥२४॥
नमस्तेऽस्तु स्वरूपाय स्वर्णालङ्कारशोभिने।
नमः स्वर्णाकर्षणाय स्वर्णाभाय नमो नमः॥२५॥
नमस्ते स्वर्णकण्ठाय स्वर्णाभाम्बरधारिणे।
स्वर्णसिंहासनस्थाय स्वर्णपादाय ते नमः॥२६॥
नमः स्वर्णाभपादाय स्वर्णकाञ्चीसुशोभने।
नमस्ते स्वर्णप्रदाय भक्तकामदुधात्मने॥२७॥
नमस्ते स्वर्णभक्ताय कल्पवृक्षस्वरूपिणे।
चिन्तामणिस्वरूपाय नमो ब्रह्मादिसेविने॥२८॥
कल्पद्रुमाधःसन्स्थाय बहुस्वर्णप्रदायिने।
नमो हेमाकर्षणाय भैरवाय नमो नमः॥२९॥

स्तवेनानेनसन्तुष्टो भवलोकेशभैरव।
पश्यमां करुणादृष्ट्या शरणागतवत्सल॥३०॥

स्तोत्र पाठ करने के बाद फलश्रुति का पाठ अवश्य करे।

फलश्रुतिः

श्रीमहाभैरवस्येदं स्तोत्रमुक्तं सुदुर्लभम्।
मन्त्रात्मकं महापुण्यं सर्वैश्वर्यप्रदायकम्॥१॥
यः पठेन्नित्यमेकाग्रं पातकैः स प्रमुच्यते।
लभतेमहर्तींलक्ष्मी अष्टैश्वर्यमवाप्नुयात्॥२॥
चिन्तामणिमवाप्नोति धेनुकल्पतरुं ध्रुवं।
स्वर्णराशिमवाप्नोति शीघ्रमेवसमानवः॥३॥
त्रिसन्ध्यं यः पठेत्स्तोत्रं दशावृत्त्यानरोत्तमः।
स्वप्ने श्रीभैरवस्तस्य साक्षाद्भूत्वा जगद्गुरुः॥४॥
स्वर्णराशिददात्यस्मै तत्क्षणां नास्ति संशयः।
अष्टावृत्यापठेद्यस्तु सन्ध्यायां वा नरोत्तमः॥५॥
लभतेसकलान्कामान्सप्ताहान्नात्रसंशयः ।
सर्वदायः पठेत्स्तोत्रं भैरवस्य महात्मनः॥६॥
लोकत्रयं वशीकुर्यादचलां श्रियमाप्नुयात्।
न भयं विद्यतेक्वापि विषभूतादिसम्भवम्॥७॥
म्रियतेशत्रवस्तस्य ह्यलक्ष्मीनाशमाप्नुयात्।
अक्षयंलभतेसौख्यं सर्वदामानवोत्तमः॥८॥
अष्टपञ्चाशद्वर्णाढ्यो मन्त्रराजप्रकीर्तितः।
दारिद्र्यदुःखशमनं स्वर्णाकर्षणकारकः॥९॥
य एनं संजपेद् धीमान् स्तोत्रं वा प्रपठेत्सदा।
महाभैरवसायुज्यं सोऽन्तकाले लभेद्ध्रुवम्॥१०॥

पाठसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर पाठ समर्पित करे।

अनेन स्तुतिपाठाख्येन श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवः प्रीयतां न मम।

श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवस्तोत्रं परिपूर्णम्

❁

अखण्डदीपपूजनम्
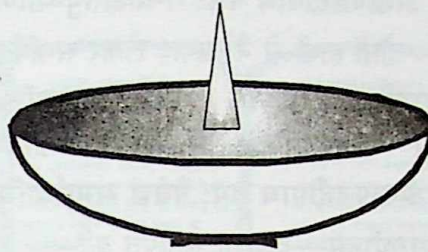
सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि स्वर्णाकर्षणभैरवप्रीतये सर्वार्थ-सिद्धये अखण्डदीपपूजनं करिष्ये।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा॥ अग्नि-र्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा॥ ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो-ज्ज्योतिः स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अखण्डदीपाय नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

पाद्यार्घ्याचमनीयम्—दोनों हाथों से पाद्यार्घ्याचमनीय समर्पित करे—

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धुकावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अखण्डदीपाय नमः पाद्यार्घ्याचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयोदधिघृतंमधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अखण्डदीपाय नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयजलपात्र लेकर समर्पित करे—

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अखण्डदीपाय नमः शुद्धोदकस्नानीयजलं समर्पयामि।

गन्धाक्षतपुष्पसमर्पणम्—गन्धाक्षतपुष्प लेकर समर्पित करे—

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादि समन्वितम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अखण्डदीपाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अखण्डदीपाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

नैवेद्याङ्गदक्षिणासमर्पणम्—दक्षिणा समर्पित करे—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अखण्डदीपाय नमः द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

प्रार्थनासमर्पणम्—दोनों हाथों मे पुष्प लेकर समर्पित करे—

सुप्रकाशो महादीप्तः सर्वस्तिमिरापहः।
सबाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥
भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अखण्डदीपाय नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—जल लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः अनेन पूजनेन दीपस्थदेवताः नमः प्रीयन्तां न मम।

अखण्डदीपपूजनं परिपूर्णम्

पुस्तकपूजनम्
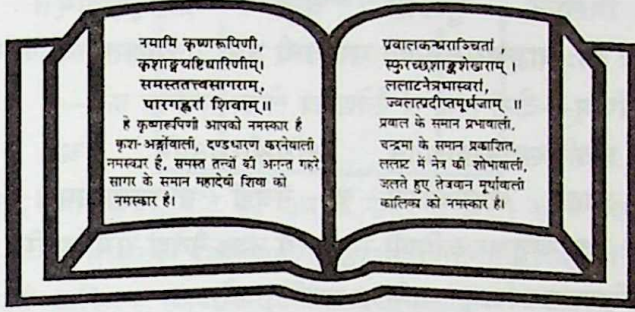
सङ्कल्प:—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि स्वर्णाकर्षणभैरवप्रीतये सर्वार्थसिद्धये वाङ्मयमूर्तिस्वरूपिणं पुस्तकपूजनं करिष्ये।**

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर पुस्तक में भगवती सरस्वती का ध्यान करे—

ॐ पावकानः सरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवती॥ यज्ञंवष्टुधियावसुः॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥१॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

पाद्यार्घ्याचमनीयम्—दोनों हाथों से पाद्यार्घ्याचमनीय समर्पित करे—

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धुकावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः पाद्यार्घ्याचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयजलपात्र लेकर समर्पित करे—

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः शुद्धोदकस्नानीयजलं समर्पयामि।

ie(Oell#elehegmeechs&eeed—गन्धाक्षतपुष्प लेकर समर्पित करे—

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादि समन्वितम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

नैवेद्याङ्गदक्षिणासमर्पणम्—दक्षिणा समर्पित करे—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाङ्मयरूपिणी सरस्वत्यै नमः द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

प्रार्थनासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारि.ीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥१॥
या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाङ्मयमूर्तिस्वरूपिणिसरस्वत्यै नमः स्तुतिप्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—जल लेकर पूजन समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः अनेन पूजनेन दीपस्थदेवताः प्रीयन्तां न मम।

पुस्तकपुजनं परिपूर्णम्

❁

पञ्चभूःसंस्कारम्
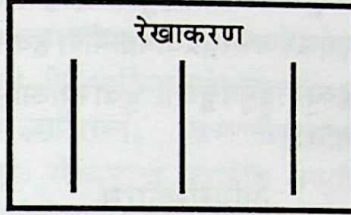
हवन वेदि बनाकर उस वेदि को गाय के गोबर से लेपन करके पञ्चभूसंस्कार करे।

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि पञ्चभूः संस्कारपूर्वकं अग्निस्थापनं करिष्ये।**

पञ्चभूःसंस्कारः—चतुरस्र वेदी का निर्माण करके पञ्चभूःसंस्कार करे।

कुशैः परिसमुह्य। कुशाओं से भूमि को झाड़ दे।

तान्कुशानैशान्यां परित्यज्य। उन कुशाओं को ईशान्कोण में फेंक दे।

गोमयोदकेनोपलिप्य। गाय के गोबर और जल से लेपन करे।

स्रुवमूलेन त्रिः उल्लिख्य। स्रुवा के मूल से तीन रेखा खींचे।

अनामिकाङ्गुष्ठेन मृदमुद्धृत्य। अनामिका और अङ्गुष्ठ से रेखा के ऊपर की मिट्टी को ग्रहण कर ईशानकोण में फेंक दे।

जलेनाऽभ्युक्ष्य। जल से सिंचन करे।

पञ्चभूःसंस्कार के बाद अग्निस्थापन करे।

पञ्चभूःसंस्कारं परिपूर्णम्

अग्निस्थापनम्

सङ्कल्प:—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि हवनार्थे अग्निस्थापनं करिष्ये।

ॐ अग्निंदूतंपुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे॥ देवाँ२॥आसादयादिह॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरदनामाग्निं स्थापयामि॥

अग्निसंस्कारम्

अग्निसंस्कारः—अधोलिखित मन्त्र बोलते हुए अक्षत-प्रक्षेपपूर्वक संस्कार करे। संस्कार मे सर्वत्र आज्य से आठ आहुति प्रदान करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः गर्भाधानं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः पुंसवनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः सीमन्तोन्नयनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः जातकर्मं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः नालच्छेदनं सम्पादयामि स्वाहा।

मन्त्र से आज्यसम्प्लुत पञ्चसमिधा का हवन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः सूतकं शोधयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः त्वं वरदनामासि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः नामकरणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः निष्क्रमणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः अन्नप्राशनं सम्पादयामि स्वाहा।

शाकल्य की आहुति प्रदान करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः चूडाकरणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः उपनयनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः महानाग्न्यव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः महाव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः उपनिषद्व्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः गोदानव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः समावर्तनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः विवाहं सम्पादयामि स्वाहा।

प्रतिष्ठा—अग्नि में इष्टदेवता का ध्यानपूर्वक प्रतिष्ठा करे—

ॐ पाशाङ्कुशापासृक्कपालेक्षणीषूञ्छूलहस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां, देवीं ध्यायेप्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥१॥
ज्वलत्कोटिबालार्कभासारुणाङ्गीं सुलावण्यशृङ्गारशोभाभिरामाम्।
महापद्मकिञ्जल्कमध्ये विराजत्त्रिकोणोल्लसन्तीं भजे श्रीभवानीम्॥२॥
कणत्किंकिणीनूपुरोद्भासिरत्न, प्रभालीढलाक्षार्द्रपादारविन्दाम्।
अजेशाच्युताद्यैः सुरैः सेव्यमानां महादेवि मन्मूर्ध्नि ते भावयाम॥३॥
सुशोणाम्बराबद्धनीवीविराजन् महारत्नकाञ्चीकलापं नितम्बम्।
स्फुरद्दक्षिणावर्तनाभिं च तिस्त्रो बली रम्यते रोमराजीं भजेऽहम्॥४॥

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् अग्नेः स्वर्णाकर्षणभैरवस्य प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् अग्नेः स्वर्णाकर्षणभैरवस्य जीव इह स्थितः।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् अग्नेः स्वर्णाकर्षणभैरवस्य सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनस्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अस्मिन् अग्नेः स्वर्णाकर्षणभैरवस्य गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य्बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ ह्रीँ वँ स्वर्णाकर्षणभैरवाय नमः प्रतिष्ठापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि स्वर्णाकर्षणभैरवः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः सन्निहिताः वरदाः भव।

अग्निस्थापनं परिपूर्णम्

❀

ग्रहमण्डलस्थदेवतास्थापनम्

ग्रहमण्डलचक्रः

ईश्वर ब्रह्मा इन्द्र अग्नि

क्षेत्र

विष्णु बुध विष्णु

वास्तु

इन्द्राणि शुक्र इन्द्र

जल चन्द्र उमा

अश्विनी

सोम

ब्रह्मा गुरु इन्द्र

आकाश

ईश्वर सूर्य अग्नि

भूमि भौम स्कन्द

यम

वायु

दुर्गा

ब्रह्मा केतु चित्रगुप्त

यम शनि प्रजापति

गणेश

सर्प राहु काल

वायु वरुण अनन्त निर्ऋति
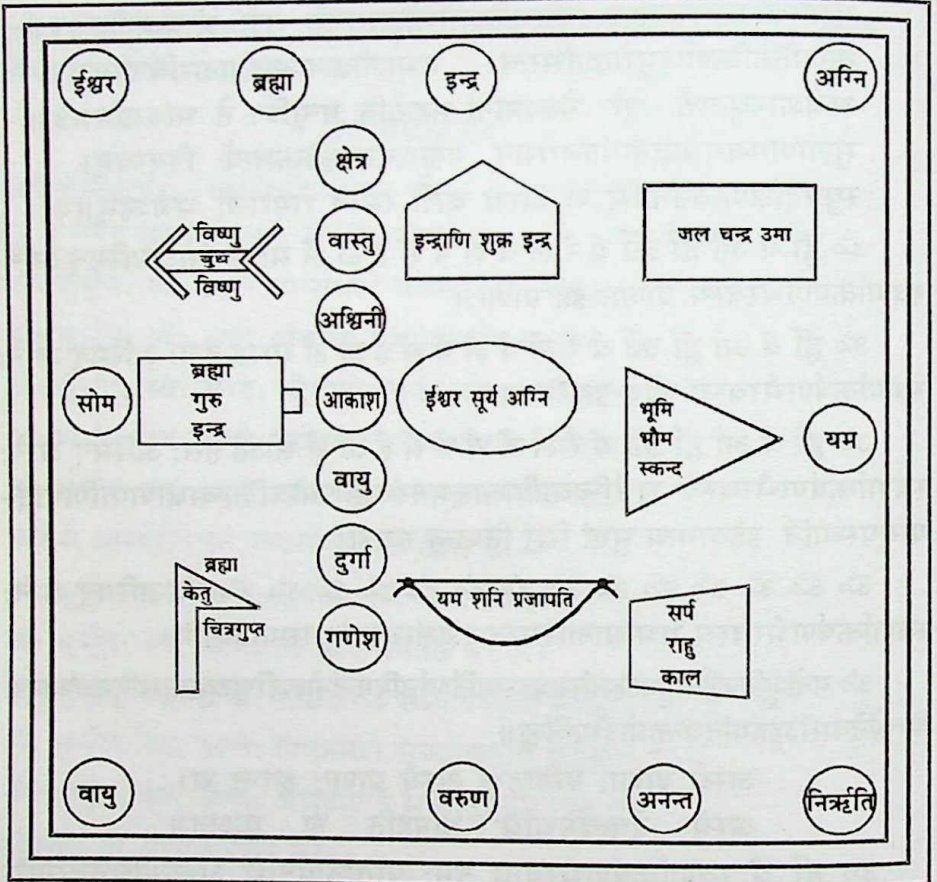
एक चौकी पर सफेद कपड़ा बिछाकर उस पर रोली से नौ खाना बनाकर चित्रानुसार नवों खानों के बीच के खाने में सूर्य के लिए लाल चावल से गोल आकृति, चन्द्र के लिए अग्नि कोण में सफेद चावल से चौकोर आकृति, भौम के लिए दक्षिण दिशा के खाने में लाल चावल से त्रिकोण आकृति, बुध के लिए ईशान कोण के खाने में हरे चावल से बाण के सदृश आकृति, गुरु के लिए उत्तर दिशा के खाने में पीले चावल से पट्टिशाकार

आकृति, शुक्र के लिए पूर्व के खाने में पञ्चकोण की सफेद चावल से आकृति, शनि के लिए पश्चिम दिशा के खाने में काले रंग के चावल से धनुषाकार आकृति, राहु के लिए नैर्ऋत्य कोण के खाने में काले चावल से सूर्पाकृति तथा केतु के लिए काले चावल से पताका की आकृति चित्रानुसार बनाकर उस पर तत्तद स्थानों पर सुपाड़ी रखकर, उन सुपाड़ियों पर समस्त देवताओं का आवाहन करे।

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि ग्रहाणामधिदेवताप्रत्यधिदेवतापञ्चलोकपालदिग्पालानां स्थापनं करिष्ये।**

सूर्यावाहनम्—सूर्यपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ आकृष्णेनरजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतंमर्त्त्यंच॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन्॥

जवाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्॥१॥
पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरङ्गवाहनः।
दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।

सोमावाहनम्—चन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ इमंदेवाऽअसपत्नकंसुवद्ध्वंमहतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्ज्यास्येन्द्रियाय॥ इममुमुष्य्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविशऽएषवोऽमीराजासोमोऽस्माकंब्ब्राह्मणानाᳬराजा॥

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्॥१॥
श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः।
चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

भौमावाहनम्—भौमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अग्निर्म्मूर्द्धादिवःककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्॥ अपाᳬरेताᳬसिजिन्वति॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्॥१॥

रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगतो गदाभृत्।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदायमस्मद्वरदः प्रसन्नः॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकादेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ इह तिष्ठ भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि।

बुधामावाहनम्—बुधपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयञ्च॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्॥१॥
पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी।
चर्मासिधृक् सोमसुतो गदाभृत् सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र हरितवर्ण भो बुध! इहागच्छ इह तिष्ठ बुधाय नमः बुधमावाहयामि स्थापयामि।

बृहस्पत्यावाहनम्—बृहस्पतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु॥ यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्॥१॥
पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशान्तः।
तथाऽक्षसूत्रं च कमण्डलुश्च दण्डश्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते! इहागच्छ इह तिष्ठ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

शुक्रमावाहनम्—शुक्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः॥ ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्॥१॥
श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः।
तथाऽक्षसूत्रं च कमण्डलुश्च दण्डश्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।

शन्यावाहनम्—शनिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ शंन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥१॥
नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरोधनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽवतु मह्यं वरदोऽल्पगामी॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ इह तिष्ठ शनैश्चराय नमः शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि।

राह्वावाहनम्—राहुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा॥ कयाशचिष्ठयाऽवृता॥

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्॥१॥
नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली।
चतुर्भुजश्चक्रधरश्च राहुः सिंहाधिरूढो वरदोऽस्तु मह्यम्॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैराठिनपुरोदेशोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहु! इहागच्छ इह तिष्ठ राहवे नमः राहुमावाहयामि स्थापयामि।

केत्वावाहनम्—केतुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे॥ समुषद्भिरजायथाः॥

पलाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्॥१॥
धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाधरो गृध्रासनस्थो विकृताननश्च।
किरीटकेयूरविभूषितो यः सदाऽस्तु मे केतुगणः प्रशान्तः॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि।

ग्रहाणां दक्षिणपार्श्वे अधिदेवतास्थापनम्

शङ्करावाहनम्—शङ्करपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम्॥ उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो ईश्वर! इहागच्छ इह तिष्ठ ईश्वराय नमः ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि।

उमा-आवाहनम्—उमापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ श्रीश्च्चतेलक्ष्मीश्च्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्वलोकम्मऽइषाण॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो उमे! इहागच्छ इह तिष्ठ उमायै नमः उमामावाहयामि स्थापयामि।

स्कन्दावाहनम्—स्कन्दपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ यदक्रन्दः प्रथमंजायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात्॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्त्यंमीहजातंतेऽअर्वन्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो स्कन्द! इहागच्छ इह तिष्ठ स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

विष्णवाहनम्—विष्णुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाᳪसुरेस्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो विष्णो! इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मावाहनम्—ब्रह्मापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणोब्रह्मवर्च्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्यᳫशूरऽइषव्योतिव्याधी महारथोजायतान्दोग्ध्रीधेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषाजिष्णूरथेष्ठाः सभेयो युवास्ययजमानस्यावीरोजायतान्निकामेनिकामेनः पर्ज्जन्न्योवर्षतुफलवत्त्योनओऽषधयः पच्च्यन्तांय्योगक्षेमोनः कल्प्पताम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो ब्रह्मा! इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रावाहनम्—इन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ सजोषाऽइन्द्रसगणोमरुद्भिः सोमंपिबवृत्रहाशूरविद्वान्॥ जहिशत्रूँ२॥रपमृधो नुदस्वाथाभयंकृणुहिविश्वतोनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्र! इहागच्छ इहतिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

यममावाहनम्—यमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मः पित्रे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो यम! इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

कालावाहनम्—कालपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्यत्त्वाऽक्षित्त्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्ग्मतसमोषधीभिरोषधीः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो काल! इहागच्छ इह तिष्ठ कालाय नमः कालमावाहयामि स्थापयामि।

चित्रगुप्तावाहनम्—चित्रगुप्तपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ चित्रावसोस्वस्तितेपारमशीय॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो चित्रगुप्त! इहागच्छ इह तिष्ठ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।

ग्रहाणां वामपार्श्वे प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

ग्रहों के वायें भाग में प्रत्यधिदेवताओं का आवाहनस्थापन करे–

अग्न्यावाहनम्—अग्निपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अग्निंदूतंपुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे॥ देवाँ२॥आसादयादिह॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो अग्ने! इहागच्छ, इह तिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

अपावाहनम्—अपपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो! अप इहागच्छ, इह तिष्ठ अद्भ्यो नमः अप-आवाहयामि स्थापयामि।

पृथिव्यावाहनम्—पृथिवीपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्रथाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो पृथ्वी! इहागच्छ, इह तिष्ठ पृथिव्यै नमः पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि।

विष्णवाहनम्—विष्णुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ विष्णोर्रराटमसिविष्णोःश्नप्त्रेस्थोविष्णोःस्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोसि॥ वैष्णवमसिविष्णवेत्त्वा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो विष्णो! इहागच्छ, इहतिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रावाहनम्—इन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ इन्द्रऽआसांनेताबृहस्पतिर्द्दक्षिणायज्ञःपुरऽएतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनांजयन्तीनांमरुतोयन्त्वग्ग्रम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्राय! इहागच्छ, इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्राण्यावाहनम्—इन्द्राणिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अदित्यैरास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः॥ पूषासिघर्म्मायदीष्व॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्राणि! इहागच्छ, इह तिष्ठ इन्द्राण्यै नमः इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रजापत्यावाहनम्—प्रजापतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वारूपाणिपरिताबभूव॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुवयंस्यामपतयोरयीणाम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो प्रजापते! इहागच्छ, इह तिष्ठ प्रजापतये नमः प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि।

सर्पानावाहनम्—सर्पपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ नमोस्तुसर्प्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यःसर्प्पेभ्यो नमः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो सर्पान्! इहागच्छ, इह तिष्ठ सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मा-आवाहनम्—ब्रह्मापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचौवेनआवः ॥ सबुद्धन्याऽउपमाऽ-अस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो ब्रह्मन्! इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

पञ्चलोकपालादिस्थापनम्

गणेशावाहनम्—गणेशपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ गणानान्त्वागणपतिँ हवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिँ हवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिँ हवामहेवसोमम ॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो गणपतये! इहागच्छ इह तिष्ठ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

दुर्गा-आवाहनम्—दुर्गापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्का म्पीलवासिनीम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो दुर्गे! इहागच्छ इह तिष्ठ दुर्गायै नमः दुर्गामावा-हयामि स्थापयामि।

वाय्वाहनम्—वायुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ वायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्त्वान्त्सोमपीतये ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो! वायो इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

आकाशावाहनम्—आकाशपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ घृतंघृतपावानः पिबतवसांवसापावानः पिबन्तान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा ॥ दिशःप्प्रदिशऽआदिशोविदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यःस्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो आकाश! इहागच्छ इह तिष्ठ आकाशाय नमः आकाशमावाहयामि स्थापयामि।

अश्विनीकुमारावाहनम्—अश्विनीकुमार पिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ यावांकशामधुमत्याश्विनासूनृतावती ॥ तयायज्ञंमिमिक्षतम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो अश्विनौ! इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

वास्तोस्पत्यावाहनम्—वास्तोस्पतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः ॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्वशंनोभवद्विपदेशंचतुष्पदे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो वास्तोष्पते! इहागच्छ इह तिष्ठ वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

क्षेत्रपालावाहनम्—क्षेत्रपालपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ नहिस्प्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः ॥ एमैनमवृधन्नमृताऽ

अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्त्याय देवाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो क्षेत्राधिपते! इहागच्छ इह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि।

दशदिक्पालानां स्थापनम्

इन्द्रावाहनम्—पूर्व में इन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्र! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

अग्न्यावाहनम्—अग्निकोण में अग्निपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य॥ त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो अग्ने! इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

यमावाहनम्—दक्षिणदिशा में यमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा॥ स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो यम! इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

निर्ऋत्यावाहनम्—नैर्ऋत्यकोण में निर्ऋतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य॥ अन्यमस्मदिच्छ सा तऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो निर्ऋतिः! इहागच्छ इह तिष्ठ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

वरुणावाहनम्—पश्चिमदिशा में वरुणपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः॥ अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न ऽआयुः प्प्रमोषीः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण! इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वाय्वावाहनम्—वायुकोण में वायुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े-

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्॥ वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो वायो! इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

सोम-आवाहनम्—उत्तरदिशा में सोमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः॥ प्रजावन्तः सचेमहि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

ईशानावाहनम्—ईशानकोण में ईशानपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिंधियञ्जिन्वमवसेहूमहेवयम्॥ पूषानोयथावेदसाम संधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो! ईशान इहागच्छ, इह तिष्ठ ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मावाहनम्—ईशानपूर्व के मध्य ब्रह्मापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्वतासोवृत्रहत्येभरहूतौसजोषाः॥ यःशंसतेस्तुवतेधायि पज्ज्रइन्द्रज्ज्येष्ठाऽअस्म्माँ२॥ऽअवन्तुदेवाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो ब्रह्मा! इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

अनन्तावाहनम्—नैर्ऋत्यपश्चिम के मध्य में अनन्तपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्रथाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो अनन्त! इहागच्छ, इह तिष्ठ अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञःसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

सूर्याद्यनन्तान्तदेवताः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिता स्थापिताः वरदाः भवन्तु॥

ग्रहमण्डलस्थदेवतास्थापनं परिपूर्णम्

ग्रहमण्डलस्थदेवातानां पूजनम्

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि ग्रहाणामधिदेवताप्रत्यधिदेवतापञ्चलोकपालदिग्पालानां पूजनं करिष्ये।

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्॥ सभूमिꣳ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन का ध्यानकर समर्पित करे—

ॐ पुरुषऽएवेदꣳ सर्वंय्यद्भूतंयच्चभाव्यम्॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्चपूरुषः॥ पादोऽस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ त्रिपादूर्द्ध्वउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः॥ ततोविष्वङ्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ततोविराडजायतविराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँस्ताँश्चक्क्रेवायव्यानारण्याग्राम्म्याश्चये॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे॥ छन्दाँ ᳪसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्माँदजायत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्युन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि। पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूᳪषितारिषत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि। दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधुवाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवᳬरजः॥ मधुद्यौरस्तुनः पिता॥ मधुमान्नोवनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अपाᳪरसमुद्द्वयसᳪसूर्य्येसन्तᳪसमाहितम्॥ अपाᳪरसस्ययोरसस्तंवोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः॥ सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्न्याः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मादश्श्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः॥ गावो ह जज्ञिरे तस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवस्ता नऽऊर्जे दधातन॥ महे रणाय चक्षसे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तं यज्ञम्बर्हिषि प्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्श्च ये॥ ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्ग्रे विश्श्वरूपꣳ संव्ययस्व विभावसो॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः॥ उशतीरिव मातरः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते॥ ॐ यज्ञो देवानाम्प्प्रत्त्येति सुम्म्नमादित्त्यासो भवता मृडयन्तः॥ आवोर्वाची सुमतिर्व्ववृत्त्यादꣳहोश्च्चिद्या वरिवो वित्तरासदादित्त्येभ्यस्त्वा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माऽअरंङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ॥ आपोजनयथा च नः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामौषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत॥ अस्तौषतस्वभानवोविप्प्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ ओषधीःप्प्रतिमोदद्ध्वंपुष्प्पवतीःप्रसूवरीः॥ अश्वाऽइवसजित्त्वरीर्वीरुधःपारयिष्णवः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्प्परि॥ एवानोदूर्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थ देवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ अहिरिवभोगैःपर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिंप्परिबाधमानः॥ हस्तग्घ्नोविश्वावयुनानिविद्वान्पुमान्पुमांꣳसंपरिपातुविश्वतः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्त-ग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धोरिवप्राद्ध्वनेशूघनासोवातप्प्रमियःपतयन्तियह्वाः॥ घृतस्यधाराऽअरुषोनवाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्वमानः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्त-ग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यःकृतः॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्याꣳ

शूद्रोऽअजायत॥ ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्वन्तंधूर्वतंयोऽस्मान्धूर्वतितंधूर्वयंवयंधूर्वामः॥ देवानामसि-वह्नितमꣳसस्नितमंपप्रितमंजुष्टतमंदेवहूतमम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्त-ग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखा दग्निरजायत॥ ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निःस्वाहासूर्य्योज्ज्योतिर्ज्ज्योतिःसूर्य्यः स्वाहा॥ अग्निर्वर्च्चोज्ज्योतिर्वर्च्चःस्वाहासूर्य्योवर्च्चोज्ज्योतिर्वर्च्चःस्वाहा॥ ज्ज्योतिः सूर्य्यःसूर्य्योज्ज्योतिःस्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थ-देवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशःश्रोत्रा त्तथालोकाँ२॥ऽअकल्पयन्॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ प्र प्रदातारंतारिषऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्त-ग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ अꣳशुनातेअꣳशुःपृच्च्यतांपरुषापरुः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽ-अच्च्युतः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यंग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मुख-शुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिनागवल्लीसहितताम्बूलवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः॥ बृहस्पतिप्रसूता-स्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि। फलान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत्। सदाधारपृथिवी द्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रह-

मण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्प्रायिधामभिः॥ दिवः सदाꣳसि बृहती वितिष्ठस आत्वेषं वर्त्तते तमः॥ ॐ इदꣳ हविः प्रजननं मेऽअस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये॥ आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि॥ अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतोऽअस्मासु धत्त॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्॥ ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्त-ग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः॥ देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽअबध्नन्पुरुषं पशुम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि सभी द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

रक्ष रक्ष ग्रहा सर्वे अधिप्रत्यधिदेवता।
दिग्पालाश्चयुतादेवाः लोकपालदेवास्तथा॥१॥
कुर्वन्तु सर्वकार्याणि मङ्गलानि पदे पदे।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं सर्वदा मया॥२॥
मोदनार्थं प्रदाष्यामि समर्थं सग्रहाधिपाः।
विविधद्रव्यसंयुतं विशेषार्घ्यं समर्पितम्॥३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना—दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना करे—

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे रविः॥१॥
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रो सुधाशनः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे विधुः॥२॥

भूमिपुत्रो महातेजा जगतोभयकृत्सदा।
वृष्टिकृद् वृष्टिहर्ता च पीडां दहतु मे कुजः॥३॥
उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां दहतु मे बुधः॥४॥
देवमन्त्री विशालाक्षो सदालोकहितेरतः।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां दहतु मे गुरुः॥५॥
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्रणवश्च महाद्युतिः।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां दहतु मे भृगुः॥६॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां दहतु मे शनिः॥७॥
महाशीर्षी महावक्त्रो महादंष्ट्रो महायशाः।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां दहतु मे तमः॥८॥
अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्त्रशः।
उत्पातरूपी घोरश्च पीडां दहतु मे शिखी॥९॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो॒व्यन्तो॒विप्प्रा॑यमतिम्॥ तेषांविशिप्प्रियाणांव्वो॒ऽहमिषमूर्ज्जꣳ समग्ग्रभमुपयामगृहीतो॒ऽसीन्द्रा॑यत्त्वा॒जुष्टं॑गृह्णाम्म्ये॒षतेयोनि॒रिन्द्रा॑यत्त्वा॒जुष्ट॑तमम्॥

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहा शान्तिकरा भवन्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

अनया पूजया आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम्॥

ग्रहमण्डलस्थदेवानां पूजनं परिपूर्णम्

❀

असङ्ख्यातरुद्रपूजनम्
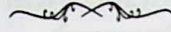
असङ्ख्यातरुद्रकलशस्थापनम्—विधिपूर्वक कलश स्थापन करे—

ग्रहमण्डलस्थ देवताओं के आवाहन-स्थापन-पूजन के पश्चात् सर्वप्रथम ग्रहवेदी के मध्य में अक्षत रखकर उस अक्षत के मध्य में रोली से अष्टदल निर्मित कर उसके ऊपर कलश स्थापित करके, असङ्ख्यातरुद्र के लिए नारियल स्थापित करे, कलशपूजन करने के बाद उस पर असंख्यातरुद्र के लिए प्रतिमा पर अग्न्युत्तारण विधि करके प्रतिष्ठाकर पूजन करे अथवा ईशान कोण की दिशा में भूमि पर अथवा अन्य वेदी पर असङ्ख्यातरुद्र के लिए कलश रखकर वरुणादि स्थापना के पश्चात् उसके ऊपर नारियल अथवा मूर्ति रखकर पूजन करे।

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि असङ्ख्यातरुद्रप्रीतये कलश-स्थापनपूर्वकं असङ्ख्यातरुद्राणां आवाहनस्थापनपूजनं करिष्ये।**

भूमिस्पर्श—**ॐ महीद्यौः पृथिवीचनऽइमंय्यज्ञंमिमिक्षताम्।। पिपृतान्नोभरीमभिः।।**

सप्तधान्य विखेरना—**ॐ ओषधयः समवदन्तसोमेनसहराज्ञा।। यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्न्पारयामसि।।**

कलशस्थापन—**ॐ आजिंघ्रकलशंमह्यात्त्वाविशन्त्त्विन्दवः।। पुनरूर्ज्जानिवर्त्तस्वसानः सहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्द्रयिः।।**

कलश में जल भरना—**ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिवरुणस्यऽऋतसदनमसिवरुणस्यऽऋतसदनमासीद।**

कलश में गन्ध डाले—ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामौषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥

कलश में सर्वौषधी डाले—ॐ याओषधीः पूर्वाजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगंपुरा॥ मनैनु बब्भ्रुणामहꣳशतंधामानि सप्त च॥

कलश में दूर्वा डाले—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषस्प्परि॥ एवानो दूर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च॥

कलश में पञ्चपल्लव डाले—ॐ अश्वत्थेवोनिषदनंपर्ण्णेवोवसतिष्कृता॥ गोभाजइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्॥

कलश में कुश डाले—ॐ पवित्रेस्त्थोवैष्णव्व्यौसवितुर्व्वःप्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्रेण पवित्रेणसूर्य्यस्यरश्मिम्भिः॥ तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः॥

कलश में पूंगीफल डाले—ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च- पुष्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥

कलश में पञ्चरत्न डाले—ॐ परिवाजपतिःकविरग्निर्हव्व्यान्यक्रमीत्॥ दधद्रत्नानि दाशुषे॥

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—ॐ हिरण्यगर्ब्भःसमवर्त्तताग्रेभूतस्य- जातःपतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम्॥

युग्मवस्त्राच्छादन—ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्ग्रे विश्वरूपꣳ संव्ययस्वविभावसो॥

पूर्णपात्रस्थापन—ॐ पूर्ण्णादर्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ वस्नेवविक्रीणावहाऽ इषमूर्ज्जꣳशतक्रतो॥

नारिकेलफलस्थापन—ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥

वरुण का ध्यान, आवाहन और पञ्चोपचारपूजन—ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणावन्दमान- स्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्प्रमोषीः॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सवाहनं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि। कलशे वरुणाद्यावाहितविष्णवादिदेवताः प्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥
कावेरी कृष्ण वेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्तां न मम॥

कलशप्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

कलशप्रार्थना—पञ्चोपचार पूजनकर प्रार्थना करे—

ॐ देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४॥

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥
पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

कलश के ऊपर नारियल रखकर उस पर असंख्यातरुद्रों का आवाहन तथा अधोलिखित मन्त्र से प्रतिष्ठा करे।

असङ्ख्यातरुद्रावाहनम्—**ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि येरुद्राऽअधिभूम्याम्॥ तेषाँ सहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः असंख्यातरुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।

असङ्ख्यातरुद्रप्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञᳬसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्राः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु॥

अर्चन-पूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः॥ बाहुब्भ्यामुतते नमः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन का ध्यान कर समर्पित करे–

ॐ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी॥ तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिᳬसीःपुरुषञ्जगत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शिवेनवचसात्त्वागिरिशाच्छावदामसि॥ यथानःसर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमनाऽ-असत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर आचमनीय जल समर्पित करे—

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्प्रथमोदैव्योभिषक्॥ अहींश्चसर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वांश्च यातुधान्योधराचीःपरासुव॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर स्नानीय जल समर्पित करे—

ॐ असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुःसुमङ्गलः॥ येचैनꣳरुद्राऽअभितोदिक्षु-श्रिताःसहस्रशोवैषाꣳहेडऽईमहे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ असौयोवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोविलोहितः॥ उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुद-हार्य्यःसदृष्टोमृडयातिनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि। पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्त्प्रणऽ आयूꣳषितारिषत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि। दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधुवाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः॥ मधुनक्त मुतोषसोमधुमत्त्पार्थिवꣳरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोवनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु

सूर्ब्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावौभवन्तुनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अपाꣳरसमुद्द्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम्॥ अपाꣳरसस्यय्योरसस्तंवोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पञ्चनद्द्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय पशुपतयेकर्ण्णायामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरूपाःपार्ज्जन्याः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ नमोस्त्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्क्षायमीढुषे॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानो करन्नमः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्ज्याम्॥ याश्च्चतेहस्तऽइषवःपराताभगवोवप॥ ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्ग्रेविश्श्वरूपꣳसंव्ययस्वविभावसो॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ विज्ज्यन्धनुःकपर्द्दिनोविशल्ल्योबाणवाँ२॥ऽउत॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः॥ ॐ यज्ञोदेवानाम्प्प्रत्त्येतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्तः॥

आवो॒र्वाचीसुम॒तिर्वैवृत्त्यादु॒ह्होश्चि॒द्याववरिवो॒वित्त॒रासंदादित्त्येभ्यस्त्वा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल समर्पित करे—

ॐ तस्मा॒ऽअरंङ्गमामवो॒यस्य॒क्षया॑य॒जिन्न्वथ॥ आपोजनयथाचनः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमो॒राजाविद्वान्य क्ष्मादमुच्च्यत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत॥ अस्तोषत॒स्वभानवो॒विप्प्रा॒नविष्ठयामती योजान्विन्द्रते॒हरी॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ ओषधी॒प्प्रतिमोद्दध्वंपुष्प्पवतीःप्रसूवरीः॥ अश्श्वाऽइवस॒जित्त्वरीर्वीरुधः पारयि॒ष्ष्णवः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्प्परि॥ एवानोदूर्वेप्प्रतनुसहस्रेणशतेन च॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ अहिरिवभो॒गैःपर्य्येतिबा॒हुंज्याया॑हेतिम्परि॒बाधमानः॥ हुस्त॒घ्नोविश्श्वा-व॒युनानिवि॒द्वान्पुमा॒न्पुमा॑ᳪसंपरिपातुवि॒श्श्वतः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वनेशूघनासो॒वातप्प्रमियःपतयन्तियह्वाः॥ घृतस्य॒धाराऽ अरुषोनवा॒जीकाष्ठाभि॒न्दन्नूर्म्मिभिःपिन्न्वमानः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ यातेहे॒तिम्मीढुष्ट्टमहस्तेबभूवते॒धनुः॥ तया॒स्म्मान्वि॒श्श्वत॒स्त्वमयक्ष्मया॒परि भुज॥ ॐ धूरसि॒धूर्व॒धूर्वन्तंधूर्वतं॒योऽस्मान्धूर्वतितंधूर्व॒यंव॒यंधूर्वामः॥ दे॒वानामसि॒वह्नितमंसस्नितमंपप्रितमंजुष्टतमंदेवहूतमम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ परितेधन्न्वनोहेतिरस्म्मान्न्वृमक्क्तुव्विश्श्वतः॥ अथोयऽइषुधिस्त्तवारेऽअस्म्मन्निधेहितम्॥ ॐ अग्ग्निर्ज्ज्योतिज्ज्योतिरग्ग्निः स्वाहासूर्य्योज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा॥ अग्ग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा॥ ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्ज्योतिः स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अवतत्त्यधनुष्ट्वꣳसहस्स्राक्क्षशतेषुधे॥ निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखाशिवोनः सुमनाभव॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ प्रप्रदातारंतारिषऊर्ज्जन्नो धेहिद्विपदेचतुष्पदे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ अꣳशुनातेअꣳशुः पृच्च्यतांपरुषापरुः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसो-अच्च्युतः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ नमस्त्तऽआयुधायानाततायधृष्णवे॥ उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुब्भ्यान्तव-धन्न्वने॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गिफलमेलालवङ्ग-नागवल्लीदलादिसहितंताम्बूजवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्यायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानो मुञ्चत्वꣳहसः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भः समवर्त्ततागे्रभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवी-द्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्‌गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्प्रायिधामभिः॥ दिवः सदाꣳसिबृहतीवितिष्ठसऽआत्त्वेषंव्वर्त्ततेतमः॥ ॐ इदꣳहविः प्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्व्वगणꣳस्वस्तये॥ आत्मसनिप्प्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनि॥ अग्ग्निः प्प्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नंपयो

रेतोंऽअुस्म्मासुधत्त॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ मानस्तोकेतनयेमानुऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः॥ मानोवीरान्नुद्र भामिनोव्वधीर्हविष्म्मन्तुःसदुमित्त्वाहवामहे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ मानोमुहान्तमुतमानोऽअर्ब्भकम्मानुऽउक्क्षन्तमुतमानऽउक्क्षितम्॥ मानोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तुन्न्वोरुद्द्ररीरिषः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथ सें विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

करचरणकृतं वा कायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वा पराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः **विशेषार्घ्यं समर्पयामि।**

प्रार्थना—दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना करे—

न तापस्त्रिविधस्तेषां न शोको न रुजादयः।
ग्रहगोचरपीडां च तेषां क्वाऽपि न विद्यते॥१॥
श्रीः प्रज्ञाऽऽरोग्यमायुष्यं सौभाग्यं भाग्यमुन्नतिम्।
विद्यांधर्ममतिः शम्भोर्भक्तिस्तेषां न संशयः॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर पूजन समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः अनया पूजया असंख्यातरुद्राः प्रीयन्तान्न मम् ॥

असंख्यातरुद्राणां पूजनं परिपूर्णम्

❀

कुशकण्डिकाविधिः
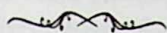
अग्ग्रेर्दक्षिणतो ब्रह्मणः स्थापनार्थं ब्रह्मासनम्। अग्नि के दक्षिण ब्रह्मा के लिए आसन रखे।

अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। अग्न्योत्तर प्रणीताप्रोक्षणी के लिए दो आसन रखे।

ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। ब्रह्मासन पर वृणीत ब्रह्मा को स्थापित करे।

यजमान बोले—**यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव।**

ब्रह्मा बोले—**भवामि।**

ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीता प्रणयनम्। ब्रह्मा के आदेश से प्रणिताप्रणयन करे।

तद्यथा–प्रणीता पात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य, द्वितीयासने निदध्यात्। प्रणीता पात्र में जल भर करके, कुशाओं से ढ़क करके, पहले प्रथम आसन पर रख कर, ब्रह्मा का मुख देख करके, दूसरे आसन पर रखें।

ईशानादि पूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्। ईशान कोण तथा पूर्व की तरफ कुश का अग्रभाग करके कुण्ड के चारो तरफ परिस्तरण करे।

तद्यथा—ततो बर्हिषश्चतुर्थ भागमादाय। आग्नेयादीशानान्तम्, उदगग्रैर्वा। अग्नितः प्रणीता पर्यन्तं प्रागग्रैः, इतरथा वृत्तिः।

जैसे—बर्हिमात्र कुशा का चतुर्थ भाग लेकर पूर्व दिशा में उत्तराग्र कुश बिछाये, उत्तरदिशा अग्नि से प्रणीतापात्र के बीच में पूर्वाग्र कुशाओं को बिछाये, पश्चिम दिशा में नैर्ऋत्य कोण से वायव्य कोण तक उत्तराग्र कुशा बिछाये, दक्षिण में नैर्ऋत्य कोण से ब्रह्मा के बीच पूर्वाग्र तथा ब्रह्मा से अग्नि कोण तक पूर्वाग्र कुशाओं को बिछाये इसी प्रकार पुनः दूसरी आवृत्ति से परिस्तरण करे।

पात्रासादनं कुर्यात्। तद्यथा त्रीणि पवित्रे द्वे। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमन कुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। उपकल्पनीयानि वृषनिष्क्रयदक्षिणा। उप-कल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय।

पात्रासादन—पवित्री बनाने के लिए तीन कुशा तथा दो कुशा रखे, प्रोक्षणी पात्र, घृत पात्र, चरु पात्र, सम्मार्जन के लिए पाँच कुशा, उपयमन के लिए सात कुशा, तीन सीधी

विलस्त मात्र समिधा, स्रुवा, घृत, चावल, पूर्णपात्र, कल्पित बैल का मूल्य, अन्य हवनीय पदार्थ सभी क्रम से रखे।

पवित्रच्छेदनाति–द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय। द्वौ मेलेन प्रदक्षिणी कृत्य, सर्वान् युगपदनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां धृत्वा। त्रिभिश्छिद्य। द्वौ ग्राह्यौ, त्रिस्त्याज्यः। प्रोक्षणी पात्रे प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिः पूर्णं, पवित्राभ्यामुत्पवनम्। प्रोक्षण्याः सव्यहस्त करणम्। दक्षिणेनोद्दिङ्गनम्।

पवित्रीछेदन—दोकुशा पर तीन कुशा को रख कर, दो कुशा को मिला कर प्रदक्षिणा क्रम से घुमाकर सभी को अनामिका, अङ्गुष्ठ से पकड़कर कुशाओं का छेदन कर,तीन कुशा का त्याग कर,दो कुशा का ग्रहण कर पवित्री बना कर पवित्री से प्रणीता के पात्र से प्रोक्षणी पात्र का तीन बार सिंचन कर जल भर कर उसमें पवित्री रख दें। प्रोक्षणी पात्र को वायें हाथ में रख कर दाहिने हाथ से ढ़क कर यथा स्थान रखें।

ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्। प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम्। सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधानां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। तण्डुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम्। असञ्चरे प्रोक्षणी निधाय।

प्रणीता के जल से प्रोक्षणी का प्रोक्षण कर, प्रोक्षणी पात्र में प्रणीता पात्र से जल ग्रहण कर प्रोक्षणी पात्र के जल से पवित्री के द्वारा घृतपात्र, चरु स्थली, सम्मार्जन कुशा, उपयमन कुशा, समिधा, स्रुवा, घृत, चावल, पूर्णपात्र, तथा अन्य सभी सामग्रियों का प्रोक्षण करके प्रोक्षणी पात्र को यथा स्थान रखें।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकात्सेचन पूर्वकं तण्डुल प्रक्षेपः। ब्रह्मणोदक्षिणत आज्याधिश्रयणम्। चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्योत्तरतः। ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। उदकोस्पर्षः। अर्धश्रिते चरौः, अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम्। सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम्। अग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवस्य समृज्य। प्रणीतोदकेनाऽभ्युक्षणम्। सम्मार्जन कुशानामग्नौ प्रक्षेपः।

घृतपात्र में घृत निकाल लें, चरुस्थाली को प्रणीता के जल से सिंचन करके उसमें खीर बनाने के लिए चावल निकालें, ब्रह्मा के दक्षिण से लाकर घृत को अग्नि के दक्षिण रखें, चरु को पकने के लिए अग्नि पर रखें, जलती हुई लकड़ी लेकर ईशान कोण से प्रारम्भ कर ईशान पर्यन्त घुमाकर पुनः विपरीत क्रम से घुमा कर अग्नि में डाल दें, आधे पके चरु को चलाये, स्रुवा को नीचे की तरफ मुख करके तपा कर, आधे पके चरु को चलाये,

सम्मार्जन कुशा के द्वारा प्रणीता के जल से उर्ध्वमुख स्रुवा का मार्जन कर, स्रुवा के अग्रभाग को कुशाग्र से तथा स्रुवमूल का कुशमूल से मर्दन कर प्रणीता के जल से अभ्युक्षण कर फिर से तपा कर अग्नि ब्रह्मा के मध्य रखे तथा सम्मार्जन कुशा का अग्नि में प्रक्षेप करे।

पुनः प्रतपनं, दक्षिण देशे निधानम्। आज्यस्योद्वासनम्। चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोरुद्वासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य, आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत्।

घृत को लाकर अग्नि के उत्तर में रखें, चरु को अग्नि से उतार कर अग्नि की प्रदक्षिणा करते हुए दक्षिण में रखे तथा घृत को भी प्रदक्षिणा क्रम से लाकर चरु के उत्तर रखे।

आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्य निरसनम्। पुनः प्रोक्षुण्युत्पवनम्। वामहस्ते उपयमनकुशामादाय। उत्तिष्ठन् समिधोभ्यादाय, घृताक्ताः समिधस्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणं प्रर्युक्षणम्। इतरथावृतिः। पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम्। दक्षिणं जान्वाच्य, ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः। समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्य होमः।

घृत पात्र में घृत निकाले तथा घृत का निरीक्षण कर अपद्रव्य निकाले, पुनः प्रोक्षणी के जल से सिंचन करे। वायें हाथ मे उपयमन कुशा लेकर, खड़े होकर तीन समिधाओं को घृत में डुबाकर कर मौन ही अग्नि में प्रक्षेप करे। पवित्री के सहित प्रोक्षणी को लेकर जल गिराते हुए ईशान कोण से प्रारम्भ कर ईशान पर्यन्त घुमाकर पुनः विपरीत क्रम से घुमा कर यथा स्थान रखे। पवित्री को प्रणीता में रखे, दक्षिण जानू को भूमि पर रख कर, ब्रह्मा को कुशाओं से स्पर्श कर स्रुवा से घृत आहुति प्रदान करे।

अग्नेरुत्तरभागे—अग्नि के उत्तर भाग में आहुति प्रदान करे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा।

इदं प्रजापतये न मम। एक बूँद प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे।

अग्नेर्दक्षिणभागे—अग्नि के दक्षिण भाग में आहुति प्रदान करे।

ॐ इन्द्राय स्वाहा।

इदं इन्द्राय न मम। एक बूँद प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे।

समिद्धतमे—अग्नि के मध्य समिधा में आहुति प्रदान करे।

ॐ अग्नये स्वाहा।

इदमग्नये न मम। एक बूँद प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ सोमाय स्वाहा।

इदं सोमाय न मम। एक बूँद प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे।

ततः सूर्यादि ग्रहाणां तथा च अधिदेवताप्रत्याधिदेवतापञ्चलोकपाल-वास्तोष्पतिक्षेत्रपालदेवतानां इन्द्रादिदशदिक्पालदेवतानां प्रधानदेवतां तथा च आवाहितदेवतानां प्रत्येकं सम्मिलित तिलादिद्रव्यैः जुहुयात्।

कुशकण्डिका करने के बाद सूर्यादि ग्रहों तथा अधिदेवता प्रत्यधिदेवता पञ्चलोकपाल वास्तोष्पति क्षेत्रपाल देवताओं के साथ दिग्पालादि देवताओं तथा प्रधान देवता के लिए तिलादि मिश्रित द्रव्य से हवन करे।

कुशकण्डिकाविधिः परिपूर्णम्

हवनम्

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम। यथा दैवतानि सन्तु।

ग्रहमण्डलस्थदेवायहवनम्

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् आपदुद्धारणभैरवप्रयोगकर्मणि ग्रहमण्डलस्थदेवताय हवनं करिष्ये।

ॐ आकृष्णेनरजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतंमर्त्यंच॥ हिरण्यैनसवितारथेनादेवोयाति-भुवनानिपश्यन्॥ सूर्याय स्वाहा॥

ॐ इमंदेवाऽअसपत्नकँ सुवद्धमहतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्ज्यास्ये-न्द्रियाय॥ इममुमुष्ष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविशऽएषवोऽमीराजासोमोऽस्माकँ-ब्ब्राह्मणानाँराजा॥ सोमाय स्वाहा॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम्॥ अपाँरेताँसिजिन्वति॥ भौमाय स्वाहा॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्तेसँ सृजेथामयञ्च॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽ-अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवायजमानश्चसीदत॥ बुधाय स्वाहा॥

ॐ बृहस्पतेऽअतिदुर्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु॥ यद्दिदयच्छवसऽऋत-प्प्रजाततदस्मासुद्रविणंधेहिचित्रम्॥ बृहस्पतये स्वाहा॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसंब्ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रंपयः सोमंप्प्रजापतिः॥ ऋतेनसत्त्य-मिन्द्रियंविपानँ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोऽमृतंमधु॥ शुक्राय स्वाहा।

ॐ शंन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः॥ शनैश्चराय स्वाहा॥

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा॥ कयाशचिष्ठयाऽवृता॥ राहवे स्वाहा॥

ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे॥ समुषद्भिरजायथाः॥ केतवे स्वाहा॥

ॐ त्र्यम्बकंयजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम्॥ उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्॥ ईश्वराय स्वाहा॥

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्वलोकम्मऽइषाण॥ उमायै स्वाहा॥

ॐ यदक्रन्दः प्प्रथमंजायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात्॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्त्यंमीहजातंतेऽअर्वन्॥ स्कन्दाय स्वाहा॥

ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाᳬसुरेस्वाहा॥ विष्णवे स्वाहा॥

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणोब्ब्रह्मवर्च्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्यः शूरऽइषव्योतिव्याधीमहारथोजायतान्दोग्ध्रीधेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषाजिष्णूरथेष्ठाः सभेयोयुवास्ययजमानस्यावीरोजायतान्निकामेनिकामेनः पर्ज्जन्न्योवर्षतुफलवत्त्योनओषधयः पच्च्यन्तांयोगक्षेमोनः कल्प्पताम्॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ सजोषाऽइन्द्रसगणोमरुद्भिः सोमंपिबवृत्रहाशूरविद्वान्॥ जहिशत्रूँ२॥रपमृधोनुदस्वाथाभयंकृणुहिविश्श्वतोनः॥ इन्द्राय स्वाहा॥

ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मः पित्रे॥ यमाय स्वाहा॥

ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्यत्त्वाक्षित्त्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्ग्मतसमोषधीभिरोषधीः॥ कालाय स्वाहा॥

ॐ चित्रावसोस्वस्तितेपारमशीय॥ चित्रगुप्ताय स्वाहा॥

ॐ अग्निंदूतंपुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे॥ देवाँ२॥आसादयादिह॥ अग्नये स्वाहा॥

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ अपः स्वाहा॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः॥ पृथिव्यै स्वाहा॥

ॐ विष्णोरराटमसिविष्णोः श्नप्त्रेस्त्थोविष्णोः स्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोसि॥ वैष्णवमसिविष्णवेत्त्वा॥ विष्णवे स्वाहा॥

ॐ इन्द्रआसांनेताबृहस्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः पुरएतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनांजयन्तीनांमरुतोयन्त्त्वग्ग्रम्॥ इन्द्राय स्वाहा॥

ॐ अदित्त्यैरास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः॥ पूषासिघर्म्मायदीष्व॥ इन्द्राण्यै स्वाहा॥

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्न्यन्न्योविश्वारूपाणिपरिताबभूव॥ यत्कामास्तजुहमस्तन्नोऽअस्तुवयᳬस्यामपतयोरयीणाम्॥ प्रजापतये स्वाहा॥

ॐ नमोस्तुसर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथिवीमनु॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः॥ सर्पेभ्यः स्वाहा॥

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआवः॥ सबुद्ध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ गुणानान्त्वागुणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ गणपतये स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ दुर्गायै स्वाहा॥

ॐ व्वायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि॥ नियुत्त्वान्त्सोमपीतये॥ वायवे स्वाहा॥

ॐ घृतंघृतपावानःपिबतव्वसांव्वसापावानःपिबन्तान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा॥ दिशःप्प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्ग्भ्यःस्वाहा॥ आकाशाय स्वाहा॥

ॐ याव्वाङ्कशामधुमत्याश्श्विनासूनृतावती॥ तयायज्ञम्मिमिक्षतम्॥ अश्विभ्यां स्वाहा॥

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्वशंनोभवद्विपदेशंचतुष्पदे॥ वास्तोष्पतये स्वाहा॥

ॐ नहिस्प्पशमविदन्नन्न्यमस्म्माद्वैश्श्वानरात्पुरऽएतारमग्ग्नेः॥ एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्त्यंव्वैश्श्वानरंक्षैत्रजित्त्यायदेवाः॥ क्षेत्राधिपतये स्वाहा॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामिशक्क्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्त्विन्द्रः॥ इन्द्राय स्वाहा॥

ॐ त्वन्नोऽअग्ग्नेतवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्श्चवन्द्य॥ त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्व्रते॥ अग्नये स्वाहा॥

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःपित्रे॥ यमाय स्वाहा॥

ॐ असुन्न्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्न्विहितस्क्करस्य॥ अन्न्यमस्म्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुब्भ्यमस्तु॥ निर्ऋतये स्वाहा॥

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानोवरुणेहबोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः॥ वरुणाय स्वाहा॥

ॐ आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्॥ व्वायोऽअस्म्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिःसदानः॥ वायवे स्वाहा॥

ॐ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः॥ प्रजावन्तꣳसचेमहि॥ सोमाय स्वाहा॥

ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्प्पतिंधियञ्जिन्न्वमवसेहूमहेव्वयम्॥ पूषानोयथाव्वेदसामस धेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये॥ ईशानाय स्वाहा॥

ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्व्वतासोव्वृत्रहत्येभरहूतौसजोषाः॥ यःशꣳसतेस्तुवतेधायिपज्ज्रऽइन्द्रज्ज्येष्ठाऽअस्म्माँ२॥ऽअवन्तुदेवाः॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः॥ अनन्ताय स्वाहा॥

असंख्यातरुद्रायहवनम्

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि असंख्यातरुद्राय हवनं करिष्ये।

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्र रूपेभ्यः स्वाहा॥ १०८ आहुति होम करे।

प्रधानदेवायहवनम्

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि स्वर्णाकर्षणभैरवाय हवनं करिष्ये।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवमहास्तोत्रस्य ब्रह्माऋषिः, त्रिष्टुप्-छन्दः, ब्रह्मविष्णुरुद्रत्रिमुर्तिरूपीभगवानस्वर्णाकर्षण भैरवोदेवता, ह्रींबीजं, क्लीँ-शक्तिः, सःकीलकं ममसमस्तदारिद्र्यविनाशपूर्वक समस्तकामनासिद्ध्यर्थे न्यासे हवने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ त्रिष्टुब्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ त्रिमूर्तिरूपीभगवान श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवदेवताभ्यो नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि।

ॐ सः शक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि।

ॐ वँ कीलकाय नमः नभौ न्यस्यामि।

ॐ श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवाय नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीं क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ अजामलबद्धाय नमः तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ लोकेश्वराय नमः मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ स्वर्णाकर्षणभैरवाय नमः अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ममदारिद्र्यविद्वेषणाय नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ श्रीमहाभैरवाय नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीं क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय नमः हृदयाय नमः।

ॐ अजामलबद्धाय नमः शिरसे स्वाहा।

ॐ लोकेश्वराय नमः शिखायै वषट्।

ॐ स्वर्णाकर्षणभैरवाय नमः कवचाय हुम्।

ॐ ममद्दारिद्र्यविद्धेषणाय नमः नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ श्रीमहाभैरवाय नमः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम्।
अक्षयं स्वर्णमाणिक्य तडित्पूरित पात्रकम्॥१॥
अभिलसन्महाशूलं चामरं तोमरोद्वहन।
सततं चिन्तयेद्देवं भैरवं सर्वसिद्धिदम्॥२॥
मन्दारस्द्रुम कल्पमूलमहिते माणिक्यसिंहासने।
संविष्टोदरभिन्नचम्पकरुचादेव्या समालिङ्गिता॥३॥
भक्तेभ्यः कररत्लपात्रभरितं स्वर्णंदधानोभृषम्।
स्वर्णाकर्षणभैरवो विजयते स्वर्णाकृतिः सर्वदा॥४॥

मूलमन्त्रप्राणायामम्—पूरक, कुम्भक, रेचक विधि से प्राणायाम करे—

मूलमन्त्रहवनम्

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्धेषणाय ॐ ह्रीँ महाभैरवाय नमः।

आवाहितदेवताभ्यः हवनम्

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि आवाहितदेवताभ्यः हवनं करिष्ये।

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ गणपतये स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ अम्बिकायै स्वाहा॥

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः॥ वरुणाय स्वाहा॥

षोडशमातृकाहवनम्—

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधि-

पतिᳫं हवामहेवसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ गणेशाय स्वाहा॥

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः॥ पितरंचप्प्रयन्त्स्वः॥ गौर्यै स्वाहा।

ॐ हिरण्यरूपाऽउषसोव्विरोकऽउभाविन्द्राऽदिथःसूर्य्यश्च॥ आरोहतंव्वरुणमित्र-गर्त्तंततश्चक्षाथामदितिन्दितिंचमित्रोऽसिव्वरुणोऽसि॥ पद्मायै स्वाहा।

ॐ निवेशनः सङ्गमनोवसूनांव्विश्श्वारूपाभिचष्ष्टेशचीभिः॥ देवऽइवसवितासत्त्य-धर्म्मेन्द्रोनतस्त्थौसमरेपथीनाम्॥ शच्यै स्वाहा।

ॐ मेधांमेव्वरुणोददातुमेधामग्निः प्प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्च्वायुश्चमेधांधाता-ददातुमेस्वाहा॥ मेधायै स्वाहा।

ॐ सविताात्त्वासवानाᳫंसुवतामग्निर्ग्गृहपतिनाᳫंसोमोव्वनस्प्पतीनाम्॥ बृहस्प्पति-र्व्वाचऽइन्द्रोज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुब्भ्योमित्रः सत्त्योव्वरुणोधर्मपतीनाम्॥ सावित्र्यै स्वाहा।

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनोव्विशल्योबाणवाँ२॥उत॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्य-निषङ्गधिः॥ विजयायै स्वाहा।

ॐ वह्वीनांपिताबहुरस्यपुत्रश्चिश्चाकृणोतिसमनावगत्त्य॥ इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च-सर्वाः पृष्ष्ठेनिनद्धोजयतिप्प्रसूतः॥ जयायै स्वाहा।

ॐ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः पुरएतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनां-जयन्तीनांमरुतोयन्त्वग्ग्रम्॥ देवसेनायै स्वाहा।

ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः-प्प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरः-पितरः शुन्धद्ध्वम्॥ स्वधायै स्वाहा।

ॐ स्वाहाप्प्राणेब्भ्यः साधिपतिकेब्भ्यः॥ पृथिव्यैस्वाहाग्ग्नयेस्वाहान्तरिक्षायस्वाहा-व्वायवेस्वाहा॥ दिवेस्वाहासूर्य्यायस्वाहा॥ स्वाहायै स्वाहा।

ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्प्वः पुनन्तु॥ विश्श्वᳫंहिरिप्रंप्प्रवहन्ति-देविरुदिदाब्भ्यः शुचिरापूतऽएमि॥ दीक्षातपसोस्तनूरसितांत्वाशिवाᳫंशग्ग्मांपरिदधेभद्रं-व्वर्णंपुष्ष्यन्॥ मातृभ्यो स्वाहा।

ॐ रयिश्चमेरायश्चमेपुष्टंचमेपुष्टिश्च्चमेव्विभुचमेप्रभुचमेपूर्णंचमेपूर्णतरञ्चमे-कुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमेऽन्नंच्चमेऽक्षुच्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ धृत्यै स्वाहा।

ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च्चयज्ज्योतिरन्तरमृतंप्प्रजासु॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन-कर्म्मक्क्रियतेतन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु॥ पुष्ट्यै स्वाहा।

ॐ अङ्गान्यात्मन्भिषजातदश्चिनात्मानमङ्गैः समधात्त्सरस्वती॥ इन्द्रस्यरूपᳫं शत-मानमायुश्च्चन्द्रेणज्ज्योतिरमृतंदधानाः॥

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः॥ सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ तुष्ट्यै स्वाहा।

ॐ प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्यानायस्वाहा॥ चक्षुषेस्वाहाश्रोत्रायस्वाहावाचे-स्वाहामनसेस्वाहा॥ आत्मनःकुलदेवतायै स्वाहा।

षोडशमातृकाओं के लिए हवन के बाद सप्तघृतमातृकाओं के लिए हवन करे—

सप्तघृतमातृकाहवनम्

ॐ मनसःकाममाकूतिंवाचःसत्यमशीय॥ पशूनाꣳरूपमन्नस्यरसोयशःश्रीःश्रयतांमयिस्वाहा॥ श्रियै स्वाहा।

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुंमऽइषाणसर्वलोकंमऽइषाण॥ लक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदायुः॥ धृत्यै स्वाहा।

ॐ मेधांमेवरुणोददातुमेधामग्निःप्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्चवायुश्चमेधांधाताददातुमेस्वाहा॥ मेधायै स्वाहा।

ॐ प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्यानायस्वाहा॥ चक्षुषेस्वाहाश्रोत्रायस्वाहावाचे-स्वाहामनसेस्वाहा॥ स्वाहायै स्वाहा।

ॐ आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः॥ पितरंचप्रयन्त्स्वः॥ प्रज्ञायै स्वाहा।

ॐ पावकानःसरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवतियज्ञंवष्टुधियावसुः॥ सरस्वत्यै स्वाहा।

सप्तघृतमातृकाओं के हवन के बाद क्षेत्रादि देवताओं के लिए आहुति प्रदान करे—

अग्निपूजनपूर्वकस्विष्टकृत् होमः

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि हवनफलसाफल्यतासिद्ध्यर्थं स्वाहास्वधायुतमग्निपूजनं करिष्ये।

ॐ अग्नेनयसुपथारायेऽअस्मान्विश्वानिदेववयुनानिविद्वान्॥ युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठांतेनमऽउक्तिंविधेम॥ ॐ भूर्भुवः स्वःस्वाहास्वधायुताग्नये वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ अग्नये स्विष्टिकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

भूरादिनवाहुतिः

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम॥१॥

ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम॥२॥

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम॥३॥

ॐ त्वन्नोऽअग्नेवरुणस्यविद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः॥ यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानोविश्श्वाद्वेषांᳬसिप्रमुमुग्ध्यस्मत्॥ स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥४॥

ॐ सत्त्वन्नोऽअग्नेऽवमोभवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्युष्टौ॥ अवयक्ष्वनोवरुणᳬ रराणोवीहिमृडीकᳬसुहवोनऽएधि॥ स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥५॥

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्चसत्यमित्त्वमयाऽअसि॥ अयानोयज्ञंवहास्य-यानोधेहिभेषजᳬ॥ स्वाहा इदमग्नये अयसे न मम॥६॥

ॐ येतेशतंवरुणयेसहस्रंयज्ञियाःपाशाविततामहान्तः॥ तेभिर्नोऽअद्यसवितोत-विष्णुर्विश्वेमुञ्चन्तुमरुतःस्वर्काः॥ स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥७॥

ॐ उदुत्तमंवरुणपाशमुस्मदवाधुमंविमध्यमᳬ श्रथाय॥ अथावयमादित्यव्रतेतवा नागसोऽअदितयेस्याम॥ स्वाहा इदं बरुणायादित्यायादितये च न मम॥८॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम॥९॥

हवनाङ्ग बलिदानम्

एकतन्त्रेण दिग्पालादिबलिदाम्—एक बार में ही सभी दिग्पालों को बलिदान करे—

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं च दिग्पालानां प्रीतये सदीपदधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ दिविपृष्टोऽअरोचताग्निर्वैश्श्वानरोबृहन्॥ क्ष्मयावृधानऽओजसाचनोहितो ज्ज्योतिषाबाधतेनमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दिग्पालेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः दिग्पालेभ्यः देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

दिग्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीप-दधिमाषभक्त बलिन् समर्पयामि।

भो भो इन्द्रादिदशदिग्पालाः! इमां सदीपदधिमाषभक्तबलीन् गृह्णन्तु स्वां स्वां दिशं रक्षन्तु बलिं भक्षन्तु मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवन्तु।

अनेन बलिदानेन दिग्पालाः प्रीयन्तां न मम।

एकतन्त्रेणग्रहादिबलिदाम्—एक बार में ही सभी ग्रहों के लिए बलिदान करे-

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं च ग्रहाणांप्रीतये सदीपदधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो॒व्व्यन्तो॒विप्प्रायमतिम्।। तेषांव्विशिप्प्रियाणांव्वो॒ऽहमिषमूर्ज्जꣳ समग्ग्रभमुपयामगृहीतो॒ऽसीन्द्रायत्त्वा॒जुष्टंꣳगृह्णाम्म्येषतेयोनि॒रिन्द्रायत्त्वा॒जुष्टंतमम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितेभ्यो ग्रहेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताभ्यः ग्रहेभ्यः देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवताप्रत्यधि-देवता सहितेभ्यः इमां सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि।

भो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताभ्यः ग्रहेभ्यः! इमां सदीपदधिमाषभक्तबलीन् गृह्णन्तु मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टि-कर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदाः भवन्तु।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सर्वेग्रहाः प्रीयन्तान्नमम।

क्षेत्रपालायबलिदानम्

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं च क्षेत्रपालप्रीतये सदीपदधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ न॒हिस्प्पशमविदन्न॒न्न्यमु॒स्म्माद्वैश्श्वानु॒रात्पुरऽएतारम॒ग्नेः।। एभैनमवृधन्नमृता॒ऽअमर्त्त्यं वैश्श्वनु॒रंक्षैत्रंजित्त्यायदेवाः।।

नमो वै क्षेत्रपाल त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा।।१।।
पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा।।२।।

ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्रपालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्रपालाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-

कूष्माण्ड-वेताल-भूतप्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनी-ब्रह्म-राक्षस गणसहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो क्षेत्रपाल! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।

प्रार्थना—हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना करे।

बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्यावसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः॥१॥
असुरायातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः।
डाकिन्योयक्षवेतालाः योगिन्यः पूतनाः शिवाः॥२॥
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वाः सौम्याविद्याधरानगाः।
दिक्पालालोकपालाश्च ये च विघ्नप्रदायकाः॥३॥
जगतां शान्तिकर्तारः ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥४॥
सौम्योभवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।
विचरन्तु सदासर्वे मया प्रीतिकरा सदा॥६॥
भूतानि यानीह वसन्ति भूतले,
बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु,
रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र॥७॥

अब्राह्मण नापितादि यजमान के मस्तक पर वामावर्त सात बार घुमाकर घर के बाहर चौराहे पर ले जाकर रख दे, आचार्यादि यजमान के मस्तक पर समन्त्रक जल छिड़के।

ॐ हिङ्कारायस्वाहाहिंकृतायस्वाहाक्रन्दतेस्वाहाऽवक्रन्दायस्वाहाप्प्रोथतेस्वाहा-प्रप्प्रोथायस्वाहागन्धायस्वाहाघ्रातायनिविष्ट्टायस्वाहोपविष्ट्टायस्वाहासन्दितायस्वाहा-वल्गतेस्वाहाऽसीनायस्वाहाशयानायस्वाहास्वपतेस्वाहाजाग्रतेस्वाहाकूजतेस्वाहा-प्रबुद्धायस्वाहाविजृम्भमाणायस्वाहाविचृत्तायस्वाहासꣳहानायस्वाहोपस्थितायस्वाहाऽ-यनायस्वाहाप्प्रयणायस्वाहा॥

पूर्णाहुतिः

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं च वरदनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्यामि।

ॐ पूर्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ वस्नेवविक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳसतक्रतोः॥
ॐ पुर्णाहुत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ समुद्राद्दूर्म्मिर्म्मधुमाँर॥ऽउदारदुपाꣳशुनासममृतत्त्वमानट्घृतस्यनामगुह्यंयदस्ति-जिह्वादेवानामृतस्यनाभिः॥ वयंनामप्प्रब्रवामाघृतस्यास्मिन्यज्ञेधारयामानमोभिः॥ उपब्रह्माश्शृणवच्छस्यमानंचतुःश्शृङ्गोऽवमीद्गौरऽएतत्॥ चत्त्वारिश्शृङ्गात्रयोऽअस्यपादाद्वेशीर्षे-सप्तहस्तासोऽअस्य॥ त्रिधाबद्धोवृषभोरोरवीतिमहोदेवोमर्त्त्याँ॥ऽआविवेश॥ त्रिधा-हितंपणिभिर्गुह्यमानंगविदेवासोघृतमन्न्वविन्दन्॥ इन्द्रऽएकꣳ सूर्य्यऽएकञ्जजानवे-नादेकꣳस्वधयानिष्टतक्षुः॥ एताऽअर्षन्तिहृद्यात्समुद्राच्छतव्रजारिपुणानावचक्षे॥ घृतस्यधाराऽअभिचाकशीमिहिरण्ययोवेतसोमध्यऽआसाम्॥ सम्म्यक्स्रवन्तिसरितानधे-नाऽअन्तर्हृदामनसापूयमानाः॥ एतेऽअर्षन्त्यूर्म्मयोघृतस्यमृगाऽइवक्षिपणोरीषमाणः॥ सिन्धोरिवप्प्राध्वनेशूघनासोवातप्प्रमियःपतयन्तियह्वाः॥ घृतस्यधाराऽअरुषोनवाजी-काष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्न्वमानः॥ अभिप्प्रवन्तसमनेवयोषाःकल्ल्याण्ण्यःस्म्मयमा-नासोऽअग्निम्॥ घृतस्यधाराःसमिधोनसन्तताजुषाणोहर्य्यतिजातवेदाः॥ कन्न्याऽइववहतुमे-तवाऽउऽअञ्ज्यञ्जानाऽअभिचाकशीमि॥ यत्रसोमःसूयतेयत्रयज्ञोघृतस्यधाराऽअभि-तत्पवन्ते॥ अभ्यर्षतसुष्टुतिंगव्यमाजिमस्म्मासुभद्राद्रविणानिधत्त॥ इमंयज्ञंनयतदेवता-नोघृतस्यधारामधुमत्पवन्ते॥ धामन्तेविश्श्वंभुवनमधिश्श्रितमन्तःसमुद्रेहृद्यन्तरायुषि॥ अपा-मनीकेसमिथेयऽआभृतस्तमश्यामधुमन्तंतऽऊर्म्मिम्॥ पुनस्त्वाऽऽदित्यारुद्रावसवः-समिन्धतांपुनर्ब्रह्माणोवसुनीथयज्ञैः॥ घृतेनत्वंतन्न्वंवर्द्धयस्वसत्त्याःसन्तुयजमानस्यकामाः॥ मूर्द्धानंदिवोऽअरतिंपृथिव्यावैश्श्वानरमृतऽआजातमग्निम्॥ कविꣳसम्म्राजमतिथिंजनाना-मासन्नापात्रंजनयन्तदेवाः॥ पूर्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ वस्नेवविक्क्रीणावहाऽइष-मूर्ज्जꣳशतक्रतो स्वाहा॥

इदमग्नयेवैश्वानरायवसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नयेऽद्भ्यश्च न मम॥

वसोर्द्धाराहोमः

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं च वसोर्द्धारां होष्यामि।

कुण्ड के ऊपर वसोर्द्धारा पूर्व की तरफ करके उसके ऊपर घृत पात्र रख कर नीचे यवमात्र छिद्र रख कर अग्नि के ऊपर स्रुक् के मुख में सुवर्णनिर्मित जिहवा बांध कर वसोर्द्धारा छोड़े। सुक् के अभाव में केले के खम्भे को बीच से काट करके उसके बीच का भाग इस प्रकार से निकाले कि उसमें नाली बन जाये इस प्रकार बनाकरके भी वसोद्धारा कर सकते हैं।

ॐ सप्ततेऽअग्ग्रेसमिधः सप्तजिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्तधामप्रियाणि॥ सप्तहोत्राः सप्त-धात्त्वायजन्तिसप्तयोनीरापृणस्वघृतेनस्वाहा॥ शुक्रज्ज्योतिश्श्चचित्रज्ज्योतिश्श्चसत्य-ज्ज्योतिश्श्चज्ज्योतिष्माँश्च॥ शुक्रश्श्चऋतपाश्श्चात्यंहाः॥ ईदृङ्प्रतिसदृङ्॥ मितश्श्च-सम्मितश्श्चसभराः॥ ऋतश्श्चसत्यश्श्चध्रुवश्श्चधरुणश्श्च॥ धर्त्ताचविधर्त्ताचविधारयः॥ ऋतजिच्चसत्यजिच्चसेनजिच्चसुषेणश्श्च॥ अन्तिमित्रश्श्चदूरेऽअमित्रश्श्चगणः॥ ईदृक्षा-सऽएतादृक्षासऽऊषुणः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षासऽएतन॥ मितासश्श्चसम्मितासोनोऽअद्यसभरसो-मरुतोयज्ञेऽअस्मिन्॥ स्वतवाँश्श्चप्रघासीचसान्तपनश्श्चगृहमेधीच॥ क्रीडीचशाकीचोज्जेषी॥ इन्द्रंदैवीर्विशोमरुतोऽनुवर्त्मानोगऽभवन्यथेन्द्रंदैवीर्विशोमरुतोऽनुवर्त्मानोगऽभवन्॥ एवमिमं-यजमानंदैवीश्श्चविशोमानुषीश्श्चानुवर्त्मानोभवन्तु॥ इमꣳस्तनमूर्ज्जस्वन्तंधयापांप्रपीनमग्ने-सरिरस्यमद्ध्ये॥ उत्संजुषस्वमधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियꣳसदनमाविशस्व॥ घृतंमिमिक्षेघृतमस्य-योनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥ ॐ वसोः पवित्रमसिशतधारंवसोः पवित्रमसिसहस्रधारम्॥ देवस्त्वासवितापुनातुवसोः पवित्रेण-शतधारेणसुप्वा॥ ॐ कामधुक्षः स्वाहा॥ इदमग्नये वैश्वानराय न मम॥

अग्नि-प्रदक्षिणा

ॐ अग्ग्नेनयसुपथारायेऽअस्मान्विश्श्वानिदेवव्वयुननिविद्वान्॥ युयोद्ध्यस्मज्जुहु राणमेनोभूयिष्ठांतेनमऽउक्तिंविधेम॥

हवनीयकुण्डभस्मधारणम्

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः। मन्त्र से ललाट पर भस्म लगाये।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्। मन्त्र से ग्रीवा पर भस्म लगाये।

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्। मन्त्र से दक्षिणबाहुमूल पर भस्म लगाये।

ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्। मन्त्र से हृदय पर भस्म लगाये।

संस्रवप्राशनम्। प्रोक्षणीपात्र के जल का यजमान को प्राशन अथवा घ्राण कराये।

आचमनम्। पश्चात् आचमन कराये।

पवित्राभ्याम् मार्जनम्। प्रणीता पात्रस्थित पवित्रि से मार्जन करे।

अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः। पवित्रि को अग्नि में प्रक्षिप्त करे।

पूर्णपात्रदानम्

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

ब्रह्मा पूर्णपात्र ग्रहण कर बोले—**ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु।**

प्रणीता पात्र के जल से ब्रह्मा यजमान का उपयमन कुशा से अभिषेक करे।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।

उपयमन कुशा का अग्नि में प्रक्षेप कर ब्रह्मग्रन्थि को खोल दे तथा कुश को अग्नि में प्रक्षेपित कर दे।

श्रेयोदानम्

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं च यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये।**

सौमनस्य मस्तु। पुष्प प्रदान करे।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु। अक्षत प्रदान करे।

भवन्नियोगेन मया अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्वं अन्यब्राह्मणैः सह यत्कृतं जपहवनादिकं च तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयः तं साक्षतेन तुभ्यमहं सम्प्रददे। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव।

यजमान बोले—**भवामि।**

ब्राह्मणदक्षिणादानम्

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगभैरवप्रयोगकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिब्राह्मणेभ्यो विभज्य मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।**

भूयसीदक्षिणादानम्

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगभैरवप्रयोगकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदंनिष्क्रयभूतंद्रव्यं नानाब्राह्मणेभ्यः नटनर्तकगायकदीना-नाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसी दक्षिणां विभ्यज्य दातुमहमुत्सृजे।**

ब्राह्मणभोजनम्

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगभैरवप्रयोगकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यथासंख्यकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।**

सङ्कल्पादि के पश्चात् आवाहितदेवता के सहित उत्तर पूजन करे—

प्रधानपीठादिदानम्

सङ्कल्प:—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगभैरवप्रयोगकर्मण: साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इमानि सोपष्करसहितानिप्रधानपीठादीनि अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकनामधेयाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

यजमान-अभिषेक:

ब्राह्मणों के सहित आचार्य सपरिवार यजमान का असंख्यातरुद्रकलश, प्रधानकलश तथा शान्तिकलश का जल, एक पात्र में रखकर अभिषेक करे।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः॥ सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित्॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥ ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः॥ पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि॥ सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव॥ यद्भद्रं तन्नऽआसुव॥ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः॥ सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे॥ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄः पाहि शृणुधी गिरः॥ रक्षा तोकमुत त्मना॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः॥ प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु॥ शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

ॐ ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये॥ वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ॥१॥ यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु॥ शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः॥२॥ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि॥ धियो यो नः प्रचोदयात्॥३॥ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा॥ कया शचिष्ठया वृता॥४॥ कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳहिष्ठो मत्सदन्धसः॥ दृढा चिदारुजे वसु॥५॥ अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्॥ शतं भवास्यूतिभिः॥६॥ कया त्वन्नऽऊत्याभि प्रमन्दसे वृषन्॥ कया स्तोतृभ्यऽआभर॥७॥ इन्द्रो विश्वस्य राजति॥ शन्नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥८॥ शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा॥ शन्नऽइन्द्रो-

बृहस्प्पतिःशन्नोव्विष्णुरुरुक्क्रमः॥९॥ शन्नोव्वातःपवताछंशन्नस्तपतुसूर्य्यः॥ शन्नःकनिक्क्रदद्देवःपुर्ज्जन्न्योऽअभिवर्षतु॥१०॥ अहानिशम्भवन्तुनःशछंरात्रीःप्रतिधीयताम्॥ शन्नऽइन्द्राग्ग्नीभवतामवोभिःशन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्व्या॥ शन्नऽइन्द्रापूषणाव्वाजसातौशमिन्द्रासोमासुवितायशंय्योः॥११॥ शन्नोदेवीरभिष्ट्टयऽआपोभवन्तुपीतये॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः॥१२॥ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः॥१३॥ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥१४॥ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥१५॥ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ॥ आपोजनयथाचनः॥१६॥ द्यौःशान्तिरन्तरिक्षछंशान्तिःपृथिवीशान्तिरापःशान्तिरोषधयःशान्तिः॥ व्वनस्प्पतयःशान्तिर्व्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्रह्मशान्तिःसर्व्वछंशान्तिःशान्तिरेवशान्तिःसामाशान्तिरेधि॥१७॥ दृतेदृछंहमामित्रस्यमाचक्षुषासर्वाणिभूतानिसमीक्षामहे॥१८॥ दृतेदृछंहमाज्ज्योक्तेसन्दृशिजीव्व्यासञ्ज्योक्तेसन्दृशिजीव्व्यासम्॥१९॥ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे॥ अन्न्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽअस्मब्भ्यछंशिवोभव॥२०॥ नमस्तेऽअस्तुव्विद्युतेनमस्तेस्तनयित्नवे॥ नमस्तेभगवन्नस्तुयतःस्वःसमीहसे॥२१॥ यतोयतःसमीहसेततोनोऽअभयङ्कुरु॥ शन्नःकुरुप्रजाब्भ्योऽभयन्नःपशुब्भ्यः॥२२॥ सुमित्रियानऽआपओषधयःसन्तुदुर्म्मित्रियास्तस्म्मैसन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टियञ्चव्वयन्द्विष्म्मः॥२३॥ तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्॥ पश्येमशरदःशतञ्जीवेमशरदःशतछंशृणुयामशरदःशतंप्रब्ब्रवामशरदःशतमदीनाःस्यामशरदःशतम्भूयश्चशरदःशतात्॥२४॥

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशिः भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

छायापात्रदानम्

कांस्यपात्र में घृत भर उसमें द्रव्य डाल कर मुख अवलोकन के लिए संकल्प करे—

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टविनाशार्थं च आज्यावेक्षणं करिष्ये।

ॐ रूपेणवोरूपमब्भ्यागान्तुथोवोव्विश्ववेदाविभजतु॥ ऋतस्यपथाप्प्रेतचन्द्रदक्षिणाव्विस्वःपश्श्यव्व्युन्तरिक्षंयतस्वसदस्यैः॥

सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं इदमवलोकितं कांस्यपात्रस्थितमाज्यं सदक्षिणां मृत्युञ्जयदैवतं मृत्युञ्जयदेवताप्रीतये सर्वारिष्टविनाशार्थं चामुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

संकल्प करके यजमान ब्राह्मण को आज्यपात्र प्रदान करे, ब्राह्मण आज्यपात्र ग्रहण कर स्वस्ति बोलकर यजमान को आशीर्वाद प्रदान करे।

क्षमाप्रार्थनाम्

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥१॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥२॥
जपच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि।
सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः॥३॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वर॥४॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीदपरमेश्वर॥५॥
मनसावाचाकर्मणा पुनश्चर्यामयाकृता।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वर॥६॥

आवाहितदेवतानांविसर्जनम्—क्षमाप्रार्थना के बाद विसर्जन करे—

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं अस्मिन् स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगकर्माङ्गत्वेन आवाहितदेवतानां उत्तर-पूजनपूर्वकं उत्थापनं विसर्जनं करिष्ये।** सभी पीठों और अग्नि के ऊपर अक्षत प्रक्षेप पूर्वक प्रार्थना करे।

ॐ उत्तिष्ठुब्ब्रह्मणस्पतेदेवयजन्तस्त्वेमहे॥ उपप्प्रयन्तुमरुतः सुदानवऽइन्द्रप्प्राशूर्ब्भवासचा॥१॥ ॐ यज्ञंगच्छयज्ञपतिंगच्छस्वांयोनिंगच्छस्वाहा॥ एषतेयज्ञोयज्ञपते-सहसूक्तवाकःसर्ववीरस्तंजुषस्वस्वाहा॥२॥

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥१॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥४॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥५॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥६॥
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः॥७॥

यत्पादपङ्कजस्मरणात् यस्यनामजपादपि।
न्यूनं कर्मभवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥८॥

ॐ विष्णवे नमः॥ ॐ विष्णवे नमः॥ ॐ विष्णवे नमः॥
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥ ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥

अनेन यथाशक्तिकृतेन आपदुद्धारणभैरवप्रयोगकर्मणा गणपतिः प्रीयतां न मम।

यजमानरक्षाबन्धनम्

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्यꣳ शतानीकायसुमनस्यमानाः॥ तन्मऽआबध्नामिशत-शारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥ आचार्य यजमान को रक्षासूत्र बांधे।

यजमानपत्नीरक्षाबन्धनम्

ॐ तंपत्नीभिरनुगच्छेमदेवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवाहिरण्यैः॥ नाकंगृब्भ्णानाः सु-कृतस्यलोकेतृतीयेपृष्ठेऽअधिरोचनेदिवः॥ आचार्य यजमानपत्नी को रक्षासूत्र बांधे।

यजमानतिलकाशीर्वादम्

ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्यारुद्रावसवःसमिन्धतांपुनर्ब्रह्माणोवसुनीथयज्ञैः॥ घृतेनत्वंतन्वं-वर्द्धयस्वसत्याःसन्तुयजमानस्यकामाः॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानंमहीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥१॥
शान्तिरस्तु शिवं चास्तु शुभं चास्तु धनं तथा।
ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु ब्राह्मणानां प्रसादतः॥२॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥३॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥४॥

यजमान की पत्नी को आशीर्वाद प्रदान करे।

यजमानपत्नी आशीर्वादम्

ॐ अनाधृष्टापुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्मेदाः पुत्रवतीदक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्त्येप्रजां-मेदाः सुषदापश्चाद्देवस्यसवितुराधिपत्त्येचक्षुर्मेदाऽआश्श्रुतिरुत्तरतोधातुराधिपत्त्येरायस्पोषं मेदाः॥ विधृतिरुपरिष्टाद्बृहस्पतेराधिपत्त्यऽओजोमेदाविश्श्वाभ्योमानाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि॥

स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगं परिपूर्णम्

❁

पूजनसामग्री

लालचन्दन—१ मुट्ठा
सफेदचन्दन—१ मुट्ठा
रोली—१०० ग्रा०
मौली—१ वण्डल बड़ारील
अबीर—१०० ग्रा०
बुक्का—१० ग्रा०
कपूर—१०० ग्रा०
लवङ्ग—२५ ग्रा०
इलायची—२५ ग्रा०
चावल खड़ा—५ कि०ग्रा०
रङ्ग (लाल, हरा, पीला, काला—१० ग्रा० प्रत्येक)
दियासलाई—१ बण्डल
धूपबत्ती—५ बण्डल
यज्ञोपवीत—४० पीस
घी—३ कि०ग्रा०
शहद—१०० ग्रा०
चीनी—१०० ग्रा०
रुई—५० ग्रा०
इत्र—१० मि०ग्रा०
गुलाब जल—१०० मि०ग्रा०
पीली सरसों—१० ग्रा०
पञ्चरत्न—४ पुड़िया
सप्तमृत्तिका—४ पुड़िया
सर्वौषधी—४ पुड़िया
जौ—१०० ग्रा०
शतावरी—५० ग्रा०
सुपाड़ीबड़ी—१.५ कि०ग्रा०
पञ्चमेवा—५०० ग्रा०
गरिगोला—३ नग
नारियल—६ नग
हल्दी—१०० ग्रा०
कालीमिर्च—१०० ग्रा०
पलास का पत्तल—१० नग
कालाउर्द—५०० ग्रा०
तिल का तेल—५०० ग्रा०
सफेद कपड़ा—५ मी०
लाल कपड़ा—१ मी०
धोती सूती—५ नग
गमछा—१० नग
साड़ी-साया-ब्लाउज—३ सेट
सुहाग पिटारी—१ नग
कलश बड़ा ढ़क्कन सहित—१ नग
कलश छोटा ढ़क्कन सहित—३ नग
कसोरा—२५ नग
दीया—१०० नग
दोना—१०० नग
पूर्णपात्र—१ नग
चरुपात्र—१ नग
यज्ञपात्र—१ सेट
चौकी—२ नग (२फिट*२फिट)
पाटा—३ नग
दूध—१०० ग्रा०
दही—१०० ग्रा०

पान का पत्ता—२५ पीस प्रतिदिन
फल—२ कि०ग्रा०
मीठा—१ कि०ग्रा०
माला—२५ नग
फूल—५०० ग्रा०
दूर्वा—५ मुट्ठा
तुलसीपत्र—२० नग
विल्वपत्र—५० नग
शमीपत्र—५० नग
आम्रपल्लव—५ नग
अन्यान्यपल्लव—५ नग
कुशा—१०० पीस
गोबर—१०० ग्रा०
गोमुत्र—१०० ग्रा०

हवन सामग्री—
काला तिल—३ कि०ग्रा०
सफेद तिल—१ कि०ग्रा०
पीला सरसों—१ कि०ग्रा०
राई—१ कि०ग्रा०
कमलगट्टा—१ कि०ग्रा०
लोहबान—१०० ग्रा०
गुगुल—१०० ग्रा०
लोहबान—१०० ग्रा०
लाल चन्दन का चूरा—१०० ग्रा०
सफेद चन्दन का चूरा—१०० ग्रा०
पञ्चमेवा—१०० ग्रा०
आम की लकड़ी—२० कि०ग्रा०
गाय की गोहरी—१०० नग

ग्रन्थकारस्य-अन्याः कृतयः

लेखक द्वारा लिखित विभिन्न ग्रन्थों की सूची—

१-श्रीदक्षिणकालिकासपर्या—कलियुग में एकमात्र कालिका ही रक्षक हैं, इस दुःप्रवृत्तिमूलक संसार में स्वात्मज्ञान के लिए केवल कालिका ही साधन हैं, इनकी उपासना के द्वारा न केवल हमारी लौकिक कामनाओं की पूर्ति होती है अपितु समस्त दुःखों की आत्यन्तिक निवृत्तिरूपी मुक्ति भी मिल जाती है। तन्त्रशास्त्रों में प्रसिद्ध है कि यह उपसना उपासक को एक हाथ से भुक्ति तथा दूसरे हाथ से मुक्ति प्रदान करती है। इस कलिकाल में कल्पवृक्ष रूपी केवल दक्षिणकाली ही हैं जो जीवों का कल्याण करने के लिए सद्यः उद्यत रहती हैं तथा विदेह मुक्ति तक प्रदान करती हैं। साधक इनकी उपासना करके अपने परम ऐश्वर्य को प्राप्त करता है। इस पुस्तक में दक्षिणकालिका उपासनाविधि तान्त्रिक विधि से दिया गया है जो साधको के लिए नितान्त उपयोगी हैं इसके माध्यम से साधक को उपासनात्मक सामग्री के लिए इधर उधर नहीं भटकना पड़ता समस्त विधिगत सामग्री एक ही पुस्तक में मिल जाती है।

२-कालसर्पसम्पूर्णशान्तिविधि—प्रत्येक जातक काल एवं मृत्यु से ग्रस्त होकर ही जन्म लेता है, जन्म से ही काल जातक के पुण्यों को ग्रसता जाता है और पुण्यों का पूर्ण अभाव होने पर मृत्युरूपी सर्प उसे ग्रस लेता है अर्थात् पुण्य के अभाव में कष्टादिरूपी अरिष्टों की उपस्थिति हो जाती है, जिसके निवारण के लिए काल तथा मृत्यु का पूजन शास्त्रों में कहा गया है। यह मृत्यु और काल का ही सर्परूप में पूजन किया जाता है, ये काल एवं मृत्यु ही मनुष्य के जीवन में समस्त उत्थान को पतन में परिवर्तित कर देते हैं, बिना इनके परिहार किये जीवन में उत्थान सम्भव नहीं हो पाता है। इसके लिए एकमात्र साधन कालसर्पशान्ति विधि ही है। इस पुस्तक में काल तथा मृत्यु के शान्ति की परिपूर्ण विधि दी गयी है इस विधि से मनुष्य को अपने सम्पूर्ण जीवन में केवल एकबार ही शन्ति करने पर जीवन भर के लिए उक्त दोष शान्त हो जाते हैं।

३-सार्द्धनवचण्डिपुरश्चरणम्—आज कल के यज्ञानुष्ठान करनेवाले जन न तो कुशल योगी होते है न ही वे कालकर्षिणिका शक्ति का अनुष्ठान जानते है और न वे स्वप्नविद्या ही जानते हैं, ऐसी परिस्थिति में उनके लिए एकमात्र सार्द्धनवचण्डिअनुष्ठान ही साधन है जिसमें न मधुस्त्राव की आवश्यकता है, न कालसंकर्षिणिका के अनुष्ठान की ही आवश्यकता है तथा न ही स्वप्नविद्या की आवश्यकता है केवल विधिपूर्वक अनुष्ठान सम्पन्न करने मात्र से ही अपने अभिष्ट की सिद्धि निश्चय ही हो जाती है तथा अनुष्ठानकर्त्ता के समस्त कामनाओं की पूर्ति हो जाती है। इस ग्रन्थ में दिये गये विधि का अनुसरण करने से साधक अपने असाध्य को भी साध सकता है। जो कार्य किसी भी प्रकार से नहीं सम्पन्न हो रहा हो वह कार्य इस विधि से निश्चय ही सम्पन्न हो जाता है।

४-श्रीमहाविद्यापुरश्चरणपद्धतिः—इस विघटनकारी युग में जहाँ एक प्राणी दूसरे प्राणी का अपने निजी स्वार्थ के लिए राक्षसी वृत्ति को ग्रहण करके सदैव कष्ट देने के लिए ही उपाय करता है। ईर्ष्या-द्वेष से ग्रस्त हो करके अपने मन में एक-दूसरे से शत्रुता का व्यवहार करता है, शत्रुतावश सदैव एक-दूसरे की हानि करने के लिए ही उद्यत रहता है, लौकिक व्यवहार में सीधे यदि कुछ हानि करने में समर्थ नहीं हो तो निकृष्ट तान्त्रिकों ओझा-सोखाओं तथा पीर-पैगम्बरों का आश्रय

लेकर भूत-प्रेतादि के द्वारा ही हानि करने का प्रयास करता है ऐसी परिस्थिति में सबसे सरल उपाय महाविद्याशान्तिप्रयोग ही है। वे परमात्मभूता महामाया महादेवी महाविद्यारूपिणी ही सर्व जगत् में एकमात्र सर्वदोषों का शमन करके सर्वसुखसौभाग्यप्रदायिनी हैं। घर अथवा व्यक्ति के ऊपर किसी भी प्रकार का प्रेतादि दोष, दुसरों के द्वारा किये गये प्रेतादि प्रयोग जो किसी भी उपाय से समाप्त नहीं हो रहा हो उस दोष को प्रस्तुत ग्रन्थ में उदृत विधि से पूर्ण रूप से समाप्त कर जीवन को सुखी किया जा सकता है।

५-**श्रीविनायकशान्ति**—इस विघटनकारी युग में क्षण-क्षण परेशानियों और विघ्नों से प्राणी ग्रस्त है। ऐसी परिस्थिति में सबसे सरल उपाय विनायकशान्ति ही शास्त्रों में कहा गया है। मनुष्य के जीवन में विवाहादि का न होना, सन्तान का न होना, व्यापारादि में सदैव विघ्न उपस्थित हो जाना इत्यादि समस्त दोषो की शान्ति इस ग्रन्थ में उल्लिखित विधि का अनुशरण कर किया जाता है जिससे मनुष्य का जीवन सुखी और सन्तुष्ट हो सके। इस अनुष्ठान को कर लेने से मनुष्य जीवन भर निर्विघ्न रहता है, कभी कोई विघ्न उसे ग्रस्त नहीं करते है।

६-**नागबलिसर्पशान्ति**—जन्मकुण्डली में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि ग्रह जब राहु और केतु अथवा केतु और राहु के मध्य आ जाते है तो विद्वान ज्योतिषी इसे सर्पयोग कहते है। सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि ग्रह दीप्त ग्रह कहे जाते है जो मनुष्य के जीवन में वृद्धि का कार्य करते है तथा राहु और केतु दोनों ज्योतिष शास्त्र में छाया ग्रह है जो जीवन में छाया(अन्धेरा) का कार्य करते है जिसे एक सर्प के रूप में दर्शाया जाता है। सर्पयोग के साथ क्रूर ग्रहों के संयोग हो जाये तो अतिदुष्ट फल प्राप्त होता है। पूर्वजन्मों में किये गये कर्मो का फल ही वर्तमान जन्म में जातक को भोगना पड़ता है। जीवन अभिशाप तक बन जाता है। बिना सर्पयोग की शान्ति किये इससे छुटकारा नहीं मिलता है, इसके लिए प्रायश्चित्त अवश्य करने पड़ते है, अन्य कोई उपाय इसमें फलवान नहीं होता है। पूर्व जन्म कृत पापों की निवृत्ति तथा पित्र्यादि दोषो की निवृत्ति इस विधि से किया जाता है।

७-**प्रत्यङ्गिरापुनश्चर्या**(तान्त्रिकविधि)—कलिकाल में गृहस्थ लोग, साधु, महात्मा समस्त जीव अत्यन्त कष्ट से युक्त तथा अत्यन्त कुण्ठित होकर आपस में इर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, लोभादि से लिप्सित हो कर व्यवहार कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में उनके कष्टों से यदि कोई छुटकारा दिला सकता हैं तो महामहामाहेश्वरीपराभगवती महाकालिका की ही अङ्गभूता देवी प्रत्यङ्गिरा ही हैं। ये ही इस कलिकाल में जीवों की रक्षा करने में समर्थ हैं। समस्त स्त्रीपुरुषों के हित के लिए तथा बालकों की रक्षा के लिए शुभ फल देनेवाली महाविद्या प्रत्यङ्गिरा ही हैं। ये प्रत्यङ्गिरा महाविद्या माण्डलिक राजाओं, दीनजनों तथा विद्वानों का एवं द्विजजातिमात्र का विशेष रूप से मनोरथ सिद्ध करती हैं। भयङ्कर से भयङ्कर महाभय उपस्थित होने पर, बिजली एवं अग्नि के द्वारा भय उपस्थित होने पर, व्याघ्र के द्वारा आक्रमण की स्थिति में, मारणादि अभिचार में, सभी प्रकार के संग्राम एवं राजकुलों द्वारा आपत्ति की स्थिति उत्पन्न होने पर इस विद्या के धारण तथा पूजा-पाठजपादि करने से साधक के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। यही समस्त सौभाग्य को प्रदान करने वाली, सभी लोगों को वश में करनेवाली देवी हैं। विधानपूर्वक प्रत्यङ्गिरादेवी के अनुष्ठान करने से साधक के सारे शत्रु विनष्ट हो जाते हैं। इस पुस्तक में साधकों के लिए तान्त्रिकविधि तथा कर्मकाण्डी विद्वानों के लिए वैदिक विधि दोनों दिया गया है जिससे यह पुस्तक सबके लिए उपयोगी बना देता है।

८-**प्रत्यङ्गिरापुरश्चरण**(वैदिकविधि)—कलियुग के विघटनकारी युग में कर्मकाण्डी विद्वानों के द्वारा अपने यजमानों के विपत्तियों को समाप्त कर उनकी रक्षा करने तथा समस्त प्रकार के उत्थान के मार्ग को प्रशस्थ करने का उपयुक्त साधन है जिसके माध्यम से सहजता पूर्वक ही शत्रुओं द्वारा कृत कर्म कं फल को नष्ट कर जीवन में शान्ति लाई जाती है।

९-अष्टलक्ष्मीप्रयोग—वर्तमान भारत में भौतिकवाद समाज में पूर्णतः व्याप्त हो गया है। इस भौतिकवाद में मनुष्य की समस्त कामनायें भौतिक हो गयी है। उसकी भौतिक कामनाओं की पूर्ति के लिए मनुष्य दिनरात अथक परिश्रम करता है उसे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धनादि की आवश्यकता सतत पड़ती है जो इस समाज में जीवन का मुख्य साधन हो गया है, जिसकी पूर्ति करने के लिए दिनरात संघर्ष में सतत तत्पर रहता है फिर भी उसके अनुरूप उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति नही हो पाती है तथा सतत परेशान रहता है, मनुष्य अपने भाग्य के प्रति विचारवान होकर भाग्य को कोसने लगता है। इस स्थिति में उसके जीवन में समस्त प्रकार की समृद्धि के लिए उसे भगवती लक्ष्मी की शरण में जाना पड़ता है। पुस्तक में बतलायें गये विधि के अनुसार उपासना करके जीवन में सन्तान, सौभाग्य, विद्या, धन, सत्यवचन, भोग, योग और मोक्ष सभी प्राप्त कर जिवन को उत्थानमय बना सकता है।

१०-शब्द-अलङ्कारशास्त्रयोःसिद्धान्तपर्यालोचनम्—विश्व में समस्त जनों का व्यवहार वाणी के द्वारा ही चलता है, यदि वणी न हो तो अपने अभिप्राय का अन्य जनों को सन्देश नहीं दिया जा सकता है, संसार से समस्त व्यवहार ही विलुप्त हो जायेगा। लोकव्यवहार का माध्यम शब्द ही है। शब्द अपभ्रंसित तथा दूषित न हो जाये इस लिए शब्दों को अनुशासित व्याकरणशास्त्र करता है। शब्दशास्त्र के ही सिद्धान्त समस्त शास्त्रों में मान्य है उनका सुस्पष्ट ज्ञान इस ग्रन्थ में निहित है। शब्दशास्त्र के सिद्धान्तों का विवेचन सरल रूप इस ग्रन्थ में किया गया है। यह ग्रन्थ शब्दशास्त्र के सिद्धान्तों के अवबोधन के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

११-श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरापुनश्चर्या—विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा की साधना करने से विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा के भक्त के भीतर स्वयं समस्त शक्तियाँ आश्रय ग्रहण कर वास करती हैं तथा उस साधक की रक्षा करती हैं। अन्यों के द्वारा किये गये अभिचारों को समाप्त करने के लिए तान्त्रिक तथा वैदिक विधि इस पुस्तक में उद्धृत की गयी है, समस्त कृत्याओं को समप्त कर साधक को सुख प्रदान करनेवाली भद्रकाली ही विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा हैं जिनकी उपसना करके दुःख को सुख में निश्चितरूप से परिवर्तित किया जा सकता है। मनुष्य युगानुकूल कालुष्य से लिप्त कलुषित हृदय होकर रह गया है, जिससे समस्त समाज में समस्त जन कष्टों से युक्त हो दुःखग्रस्त हो गये हैं। इस समस्या से मुक्ति के लिए विपरीतमहाप्रत्यङ्गिरा उपासना मुख्य साधन है।

१२-श्रीकामकलाकालीसपर्या—मनुष्य जन्म से युवावस्था तक जो विकाश करता है, वह केवल शारीरिक होता है, उसके बाद मनुष्य सांसारिकता में संलग्न हो जाता है जिससे उसका आत्मिक विकास रुक जाता है, वह आध्यात्मिक रूप से विकशित नही हो पाता जिससे वह सांसारिक बन्धनों में फँसा रह जाता है और जन्ममृत्यु में बधा रहता है, इस जन्ममृत्यु के बन्धन से मुक्ति दिलाने का साधन एक मात्र आत्मिक ज्ञान ही होता है, आत्मिक विकास के लिए उसे उपासना करना पड़ता है, उन उपासनाओं में कालि की उपासना सर्वाधिक प्रशस्त कही गयी है, उन कालि की उपासनाओं में कामकलाकालि की उपासना मनुष्य की समस्त कामनाओं को पूर्ण कर उसे मुक्ति प्रदान करती है। कामकलाकालि की उपासना मनुष्य को आसुरी प्रवृत्तियों से मुक्त करा कर उसे भोग और मोक्ष दोनों प्रदान करती है। पूर्व काल में रावणादि बड़े बड़े लोगों ने इसी कामकला की उपासना करके अपने जीवन के उत्थान की पराकाष्ठा को प्राप्त किये थें। इस पुस्तक में कामकलाकालिका की तान्त्रिक उपासनाविधि है जो साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। सम्पूर्ण विधि को सरलतम रूप में प्रस्तुत की गयी है। साधक को उपासना करने के लिए केवल निर्दिष्ट विधि का अनुशरणमात्र करना होता है।

१३-श्रीगुह्यकालीपुनश्चर्या—शब्द ब्रह्म के भेद परा, पश्यन्ति, मध्यमा तथा वैखरी रूपों की उपासना भी केवल तन्त्र के द्वारा ही सम्भव है। वर्ण, पद, कला, तत्त्व, मन्त्र, और भुवन रूप

जिन्हें षडध्वा कहा गया है, इनकी उपासना केवल तन्त्र से ही सम्भव है। तन्त्र में सबकों उपासना का अधिकार प्राप्त है। कौल विधि में कुल की सर्वत्र महत्ता है। कुल और अकुल दो शब्द है। कुल शक्ति को कहा गया है और अकुल शिव को कहा जाता है, अकुल शिव को ही महाकाल तथा कुल को ही काली कहा जाता है। इस पराकाली को ही कुल कुण्डलिनी कहा गया है। यही समस्त संसार का विस्तार करती है। यह कुण्डलिनी ही शक्ति है। इसी के जागृत होने पर जीव रूपी शिव सदाशिव बन जाता है। यह कुण्डलिनी मनुष्य के शरीर में सुप्त रहती है। इसे जागृत कर के शिव के साथ मिला देना ही इसका जागरण है। इसके जागरण का उपाय तन्त्रशास्त्र में बहुत प्रकार से बतायें गये हैं। जिनमें गुह्यकाली की उपासना ही मुख्य है। इनके उपासना से मनुष्य अपने कुण्डलिनीशक्ति को जागृत कर अपने को परमधाम में स्थापित कर सकता है।

१४-श्रीमहाविद्यातारासपर्या—दशमहाविद्याओं में तारा का द्वितीय स्थान है इन्हें द्वितीया भी कहा जाता है, शत्रुनाश, वाक् शक्ति की प्राप्ति, दिव्यसिद्धियों की प्राप्ति के लिए तारा महाविद्या की उपासना की जाती है। ये तारा महाविद्या ही रात्रि देवी के रूप में भी कही जाती हैं, रात्रि शब्द का अर्थ होता है दुःखो से त्राण करानेवाली देवी। भगवती तारा के मुख्य तीन रूप है उग्रतारा, एकजटातारा, नीलसरस्वतीतारा, तीनों रूपों के रहस्य, कार्य, और स्वरूपादि भिन्न भिन्न होते हुए भी तीनों एक ही शक्ति हैं। तारा की उपासना मुख्यतः तान्त्रिक विधि से किया जाता है जिसे आगमोक्त पद्धति कहते हैं। इस ग्रन्थ में भगवती तारा की दशाङ्ग विधि का समायोजन किया गया है जिसके माध्यम से साधक अपने समस्त कामनाओं को ही नहीं पूरा करता बल्कि भोग के साथ साथ मोक्ष भी सहज ही प्राप्त कर लेता है।

१५-श्रीवटुकभैरवसपर्या—भीरुओं (मरण रूपी भय से ग्रस्त) को अभय प्रदान करनेवाले, भव (सांसारिक) भयों को आक्रान्त करनेवाले, हृद् अन्तःकरण में प्रकाश विमर्शात्मक स्वरूपवाले, काल का वारण करनेवाले, योगियों में स्वस्वरूप से प्रकट होनेवाले, इस समस्त विश्वान्धकार पर विजय प्रदान करानेवाले परम विज्ञान रूप भैरव ही है। साक्षात् परमशिव जो निष्कल स्वरूप से सर्वत्र व्याप्त हैं उनका ही सर्वरूपात्मक लघु रूप ही वटुक भैरव है अर्थात् परमशिव ही छोटे रूप में वटुकभैरव रूप है। इन भैरव की उपासना मुख्यतः तीन रूपों में होती है, जिसे ही भाव कहते है, यही तीनों भावों की उपासना मनुष्यों में से तीनो मलों को नष्ट करतीं हैं। ये भाव क्रमशः पशु, वीर तथा दिव्यादि भावों के रूप में कहे गये हैं। पाशविक मनुष्यों द्वारा की जानेवाली उपासना वीरभाव के लिए प्रेरित करती है, वीरभावाप्रवृत्ति से मनुष्य में पशुभाव की परिसमाप्ति हो जाती है तथा कार्मणमल नष्ट हो जाते हैं। वीरभावानुसरण से मनुष्य में दिव्यभावानुसरण की प्रवृत्ति बनती है तथा मायीवमल की परिसमाप्ति हो जाती है और अन्त में जब साधक क्रमिक विकाश को प्राप्त करता हुआ दिव्यभाव में प्रवृत्ति होता है तो उसमें से आणवमल परिसमाप्त हो जाते हैं और साधक अपने स्वस्वरूपत्व को प्राप्त कर लेता है तथा दिव्याभाव में विचरण करने लगता है उसे ही जीवनमुक्त कहा जाता है। उसमें शाप देने तथा अनुग्रह करने का सामर्थ्य प्राप्त हो जाता है। उसमें समस्त सिद्धियाँ आ जाती है और साधक स्वयं भैरवरूप हो जाता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में उल्लिखित विधि का आश्रय ग्रहण कर साधक भैरवोपासना के समस्त भावों को क्रमशः प्राप्त कर अभिष्ट की सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

१६-श्रीदिव्यदुर्गापुरश्चरणम्—महादेवी का सर्वत्र व्याप्तरूप है उसकी उपासना से ही मनुष्य समस्त दैवी सम्पत्ति को प्राप्त करता है, इन महादेवी की उपसना करने से साधक त्वरित वाक् शक्ति को प्राप्त कर लेता है तथा समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर अपने जीवन में उपयोग करता है, इतना ही नहीं साधक समस्त प्रकार के शोकों में मुक्त हो जाता है वह जीवन्मुक्त कहलाने लग जाता है। इनकी उपासना से साधक सतोगुणी हो जाता है तथा लोक में केवल सबका भला ही सोचता

है तथा सबका भला ही करता है। उसमें से समस्त अवगुण समाप्त हो जातें है तथा वह लोकोपयोगी जीवन जीता है, उसके जीवन में कोई कठिनाईयाँ नहीं होती हैं।

१७-सर्वापदुद्धारणभैरवप्रयोगम्—भैरव की उपासना त्वरित सद्यः फल प्रदान करनेवाला है, दुःख में उपसना करने पर शीघ्र ही समस्त दुःख दूर हो जातें हैं, सुख में भैरव की आराधना करने पर कभी भी किसी प्रकार का कोई दुःख आता ही नहीं है। साधक भोग और मोक्ष दोनों सहजता से ही पा जाता है। उपासना से ही जीव में ज्ञान का विकाश होता है, उपसना से ही परमात्मतत्त्व का बोध हो पाता है, उपासक का चित्त सांसारिक विषयों से विमुखता को प्राप्त कर परमात्मत्त्व को प्राप्त करता है। साधकों को त्रिविध तापों तथा समस्त आपत्तियों और विपत्तियों से रक्षा करनेवाले भैरव ही हैं जिनके स्मरणानुष्ठानादि करने से प्राणियों के शारीरिक, मानसिक, व्यावहारिक समस्त दुःखों के कारणों की आत्यन्तिक परिसमाप्ति हो जाती है।

१८-स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगम्—वर्तमान युग अर्थ(रुपया) प्रधान युग है। मनुष्य को जीवन जीने के लिए धन ही प्रमुख साधन है, प्रत्येक व्यक्ति को अपने आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन की ही आवश्यकता होती है, यदि उसके पास धन है तो वह समस्त भौतिक कार्य का सम्पादन सुगमता पूर्वक कर सकता है। लेकिन मनुष्यों को अपने आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु धनोपर्जन करने के लिए अतिशय सङ्घर्ष करना पड़ता है, बहु प्रयत्न करने पर भी आवश्यकता के अनुरूप धनोपार्जन नहीं कर पाता है। कलयुग में भैरव की कृपा सहज ही प्राप्त हो जाती है तथा समस्त कामनाओं की पूर्ति आसानी से हो जाती है। शास्त्रों में भैरव के अनेकों भेद बताये गये हैं उनमें भी स्वर्णाकर्षण भैरव की आराधना तो धन प्रप्ति के लिए आवश्य ही करणीय है। स्वर्णाकर्षण भैरव की कृपा प्राप्त हो जाने के बाद मनुष्य के जीवन में धन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति सहज ही हो जाता है। साधक को जीवन भर कभी धन की कमी नहीं होती है। उसकी समस्त कामनायें सद्यः पूर्ण हो जाती है। उसके आयु आरोग्य की वृद्धि होती है।

१९-अमोघऋणापनयनगणपतिप्रयोगम्—मनुष्य जन्म लेते ही देवऋण, गुरु(ऋषि)ऋण तथा पितृऋण से ग्रस्त होता है इसके अतिरिक्त उसके ऊपर अपने स्वयं का भी ऋण होता है, ये सभी ऋण अधम कहे जाते है जिनको जन्म जन्मान्तर तक अवश्य भरना पड़ता है। जबतक मनुष्य अपने समस्त ऋणों से मुक्त नहीं होता है तब तक उसका जीवन सुखी और शान्त नहीं होता है। मनुष्य अपने समस्त अघमर्णों से मुक्त एक मात्र गणेश जी की कृपा से ही होता है। पुस्तक में प्रयुक्त विधि का प्रयोग कर मनुष्य किसी भी प्रकार का ऋण जो समाप्त नहीं हो रहा हो उसे पूर्ण रूप से समाप्त कर अपने को पूर्णतः ऋणमुक्त कर सकता है। यह ऋण समाप्त करने की अचूक विधि है यह विधि कभी असफल नहीं होती है।त्र

२०-पूजनहवनविधि—समस्त ।देवताओं की सामान्य पूजन हवन विधि से समस्त जन अपने घर में स्वयं ही सभी देवताओं की पूजा कर सकते हैं, इस ग्रन्थ से सामान्य लोग भी अत्यन्त सरलता पूर्वक हवन कर सकते हैं। सामन्य जन को अपने दैनिक आराधना में पूर्ण रूप से सहयोगी ग्रन्थ है।
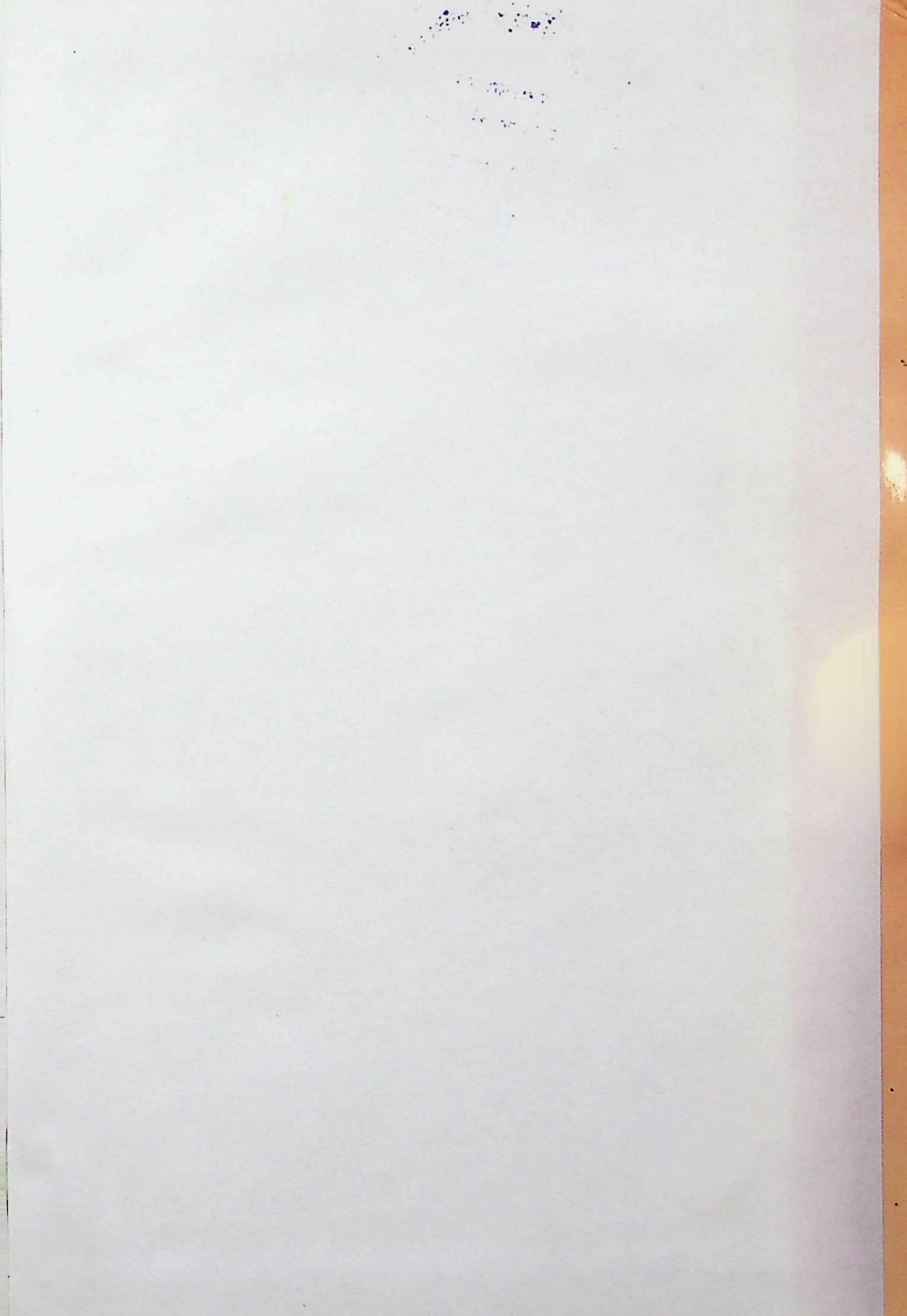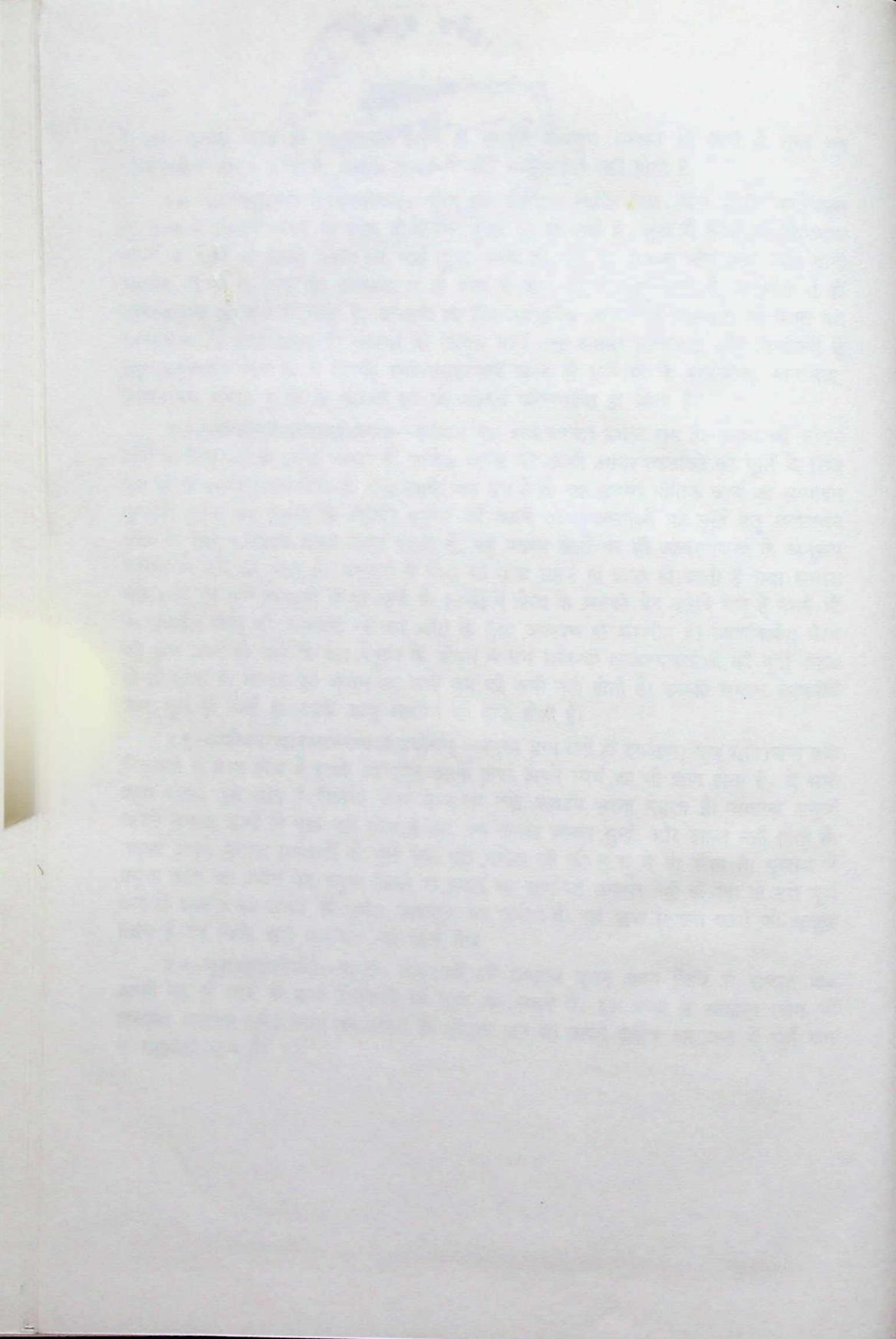
अन्य ग्रन्थ

1.	बृहद्देवी सूक्तम्	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
2.	गायत्रीसहस्रनामस्तोत्रम्	-	पं0 भूपेन्द्र दत्त शर्मा
3.	श्रीकालीशाबरतन्त्रम्	-	डा0 श्री कृष्ण 'जूगनू'
4.	कौलोपनिषद्	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
5.	कालिकोपनिषत्	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
6.	देव्युपनिषद्	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
7.	दिव्यचण्डीक्रमादुर्गासप्तशती	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
8.	तन्त्रसंविद्	-	सिद्धिदात्री भारद्वाज
9.	त्रिकूटारहस्यम्	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
10.	मारुतिशतकम्	-	म0म0 पं0 मनुदेव भट्टाचार्य
11.	दिव्यदुर्गाप्रयोगम्	-	डॉ0 रामप्रिय पाण्डेय
12.	स्वर्णाकर्षणभैरवप्रयोगम्	-	डॉ0 रामप्रिय पाण्डेय
13.	भैरवचालीसा	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
14.	कालीचालीसा	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
15.	कालीतत्त्वम्	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
16.	श्रीमहाभागवत उपपुराण	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
17.	ज्ञानार्णवतंत्रम्	-	पं0 मधुसूदन प्रसाद शुक्ला
18.	नवग्रह चालीसा	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
19.	निग्रहदारुणसप्तकम्	-	पं0 भूपेन्द्र दत्त शर्मा
20.	कालिकापुराणम्	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
21.	गणपतिप्रयोगम्	-	डॉ0 रामप्रिय पाण्डेय
22.	ब्रह्मार्चन पद्धतिः	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
23.	नवार्णमंत्रलेखनक्रम	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
24.	देवीपुराणम्	-	आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी
25.	एकदाउत्तरांचले	-	डॉ0 अम्बिका प्रसाद गौड़
26.	मन्त्र चिकित्सा साधना	-	पं0 केदारनाथ मिश्र

नवशक्ति प्रकाशन

जे0 13/24 के0, चौकाघाट, वाराणसी-2, दूरभाषः 0542-6444515, 09956014704